'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'

अग्रिमा

सत्र 2023-24

नैक प्रत्यायित, ISO प्रमाणित 9001:2015 एवं 14001:2015

चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज

गोरखपुर

स्मृतिशेष डॉ. रामरक्षा पाण्डेय (गुरू जी)

संस्थापक प्रबन्धक

चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज, गोरखपुर

'गुरू जी' की संज्ञा से विभूषित डॉ. रामरक्षा पाण्डेय का जन्म 23 मई सन् 1938 में उ.प्र. के कुशीनगर जनपद के चौरादीगर नामक ग्राम में हुआ था। उच्च शिक्षा प्राप्त करते हुए उन्होंने संस्कृत में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर से पी.-एच.डी. एवं 'शास्त्री' की उपाधि प्राप्त की।

1963 में डी.ए.वी. इण्टर कालेज में प्रवक्ता पद पर कार्यभार ग्रहण किया। 1973 में डी.ए.वी. डिग्री कालेज में संस्कृत विभाग में प्रवक्ता पद पर सेवा देते हुए रीडर के पद से रिटायर हुए।

आपने अपनी धर्मपत्नी की माँ श्रीमती रमावती देवी की प्रेरणा एवं प्रोत्साहन से 1990 में चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज की स्थापना की। इस महाविद्यालय को महानगर का प्रथम महिला महाविद्यालय होने का गौरव प्राप्त है।

नारी उत्थान के नव प्रवर्तक के रूप में गुरू जी ने पर्याप्त ख्याति अर्जित की। नारियल के समान ऊपर से सख्त एवं भीतर से नरम स्वभाव वाले गुरू जी ने नारी शिक्षा को अपने जीवन का लक्ष्य बनाते हुए एक तपस्वी की भाँति स्वयं को समर्पित कर दिया। वाग्देवी माँ सरस्वती की सेवा करते हुए 11 जनवरी 2019 को आप स्मृतिशेष हो गये।

गुरूजी भारतीय संस्कृति परम्परा के पोषक थे। आपने एक युग का निर्माण किया। पूरा महाविद्यालय परिवार आपके योगदान का ऋणी रहेगा। आपके श्री चरणों में समर्पित कुछ पंक्तियां -

जय-जय-जय गुरूदेव मनस्वी, महानगर की शान यशस्वी।
सत्य, सबल, कर्मठ प्रतिमूर्ति, करते ज्ञान पिपासा पूर्ति।
नियम-संयम जीवन आधार, शिक्षा का देते उपहार।
विधाता के अनुपम वरदान, नारी शिक्षा ही संधान।
भारतीय संस्कृति के संरक्षक, नारी उत्थान के नव प्रवर्तक।
वैदिक संस्कृत के थे ज्ञाता, जिसमें सारा ज्ञान समाता।
ऐसे महापुरूष को वंदन, कोटि-कोटि शत्-शत् नमन।

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'

पूजनार्थमहाभागापूजाहम् गृहमदीप्तयः।
स्त्रियंगेहेसुनाविशेषोअस्तिकाशनः।।

अग्रिमा

सत्र 2023-24

सम्पादक मण्डल

मुख्य सम्पादक : डॉ. अमिता अग्रवाल

सह सम्पादक : डॉ. ज्योत्सना त्रिपाठी
श्री शंकर थापा

सदस्य : डॉ. सारिका पाण्डेय
श्रीमती अंजली शुक्ला

छात्र सदस्य : कु. हर्षिता पाण्डेय (बी.एड्. विभाग)
कु. किरन यादव (एम.एड्. विभाग)

चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज
गोरखपुर

Website : www.crdpgcollege.edu.in • **E-mail :** crdpgcollege.gkp@gmail.com • **Ph. :** 7275618230

कुलगीत

ज्ञान की पावन धरा यह वन्दना की भूमि
गुरू जी की साधना आराधना की भूमि।

ज्ञान को करते नमन मेधावियों की अवलिया
त्याग और तपस्या ही है इस धरा की सिद्धियाँ।
ज्ञान अर्जन की सृजन की रंजना की भूमि
कर्म निष्ठा में रमी यह वन्दना की भूमि।।
ज्ञान की पावन . . . . . (1)

वाग्देवी की धरा यह शान्ति का प्रतीक है
नित्य नूतन कर्म होते प्रखर और पुनीत है।
चन्द्र की कान्ति सदृश्य यह वन्दना की भूमि
ज्ञान की पावन धरा यह साधना की भूमि।।
ज्ञान की पावन . . . . . (2)

कर्म का करते वरण सब भावना में लीन है
स्वप्न को मिलते यहाँ नित्य कर्म पंख नवीन है।
गुरूजनों की ज्ञान वाणी से प्रकाशित यह धरा
कर्मवीरों की धरा यह ज्ञान वीरों की धरा।।
रामरक्षा की धरा यह साधना की भूमि।।
पुष्पदंत अध्यक्ष की आराधना की भूमि।
ज्ञान की पावन . . . . . (3)

डॉ. सुमन सिंह
प्राचार्या
हिन्दी विभाग

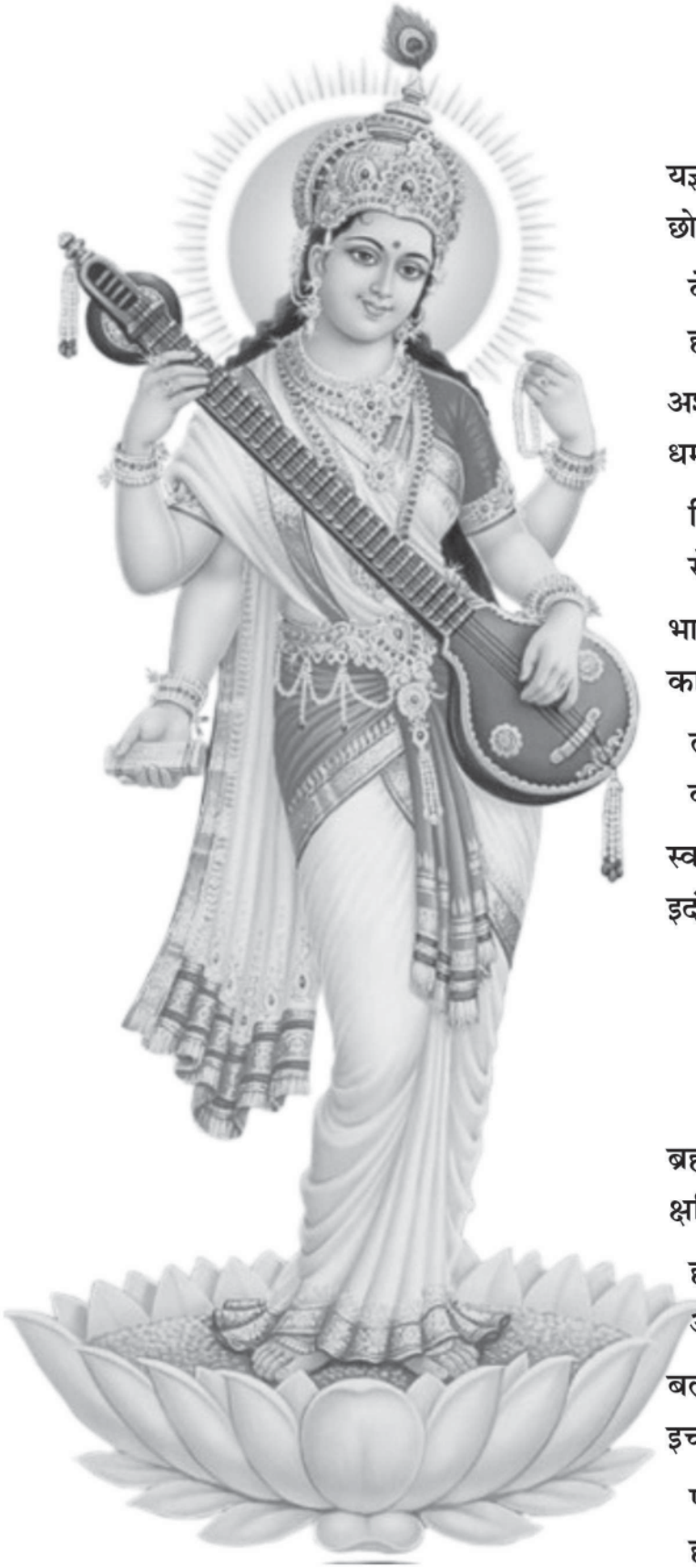

माँ सरस्वती

प्रार्थना

यज्ञ रूप प्रभो हमारे, भाव उज्जवल कीजिए।
छोड़ देवें छल कपट को, मानसिक बल दीजिए।।

वेद की बोलें ऋचाएँ सत्य को धारण करें।
हर्ष में हो मगन सारे शोक सागर से तरें।।

अश्वमेधादिक ऋचाएँ यज्ञ पर उपकार हो।
धर्म मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को।।

नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग-पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें।।

भावना मिट जाए मन से पाप अत्याचार की।
कामनाएँ पूर्ण होवें यज्ञ से नर-नारि की।।

लाभकारी हो हवन हर जीवधारी के लिए।
वायु जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किए।।

स्वार्थ भाव मिटे हमारा प्रेमपथ विस्तार हो।
इदंनमम् का सार्थक, प्रत्येक में व्यवहार हो।।

प्रार्थना

ब्रह्मन् स्वराष्ट्र में हो, द्विज ब्रह्म तेजधारी।
क्षत्रिय महारथी हों, अरिदल विनाशकारी।।

होंवें दुधारू गौवें, वृष अश्व आशुवाही ।
आधार राष्ट्र की हो, नारी सुभग सदा ही।।

बलवान सभ्य योद्धा यजमान पुत्र होवें ।
इच्छानुसार बसरें परजन्य ताप धोवें।।

फल फूल से लदी हो, औषधि अमोघ सारी ।
हो योग क्षेमकारी स्वाधीनता हमारी।।

स्मृतियाँ जिनकी है शेष ...

स्मृतिशेष (श्रीमती) डॉ. रंजना

स्मृतिशेष (श्रीमती) चन्द्रकान्ति देवी

स्मृतिशेष (श्रीमती) कमला देवी जैन

स्मृतिशेष डॉ. राकेश मिश्र

योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री (उ.प्र.)

Yogi Adityanath
Chief Minister (U.P.)

दूरभाष : 0522-2289017/2289010/2289167
फैक्स : 0522-2239234
ईमेल : cmup@nic.in
लोक भवन, लखनऊ - 226001

दिनांक : 12.12.2023

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिलाा पी.जी. कालेज, गोरखपुर द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका **'अग्रिमा'** का प्रकाशन किया जा रहा है।

समाज और राष्ट्र की प्रगति में शिक्षा का योगदान सर्वविदित है। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा को संस्कारों से जोड़ना आवश्यक है। शिक्षण संस्थाओं की पत्रिकाएं विद्यार्थियों को अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए सार्थक मंच उपलब्ध कराती है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका छात्राओं में सृजनशीलता विकसित करने में उपयोगी सिद्ध होगी।

वार्षिक पत्रिका **'अग्रिमा'** के उद्देश्यपरक प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री (उ.प्र.)

प्रो. पूनम टण्डन
कुलपति

Prof. Poonam Tondon
Vice-Chancellor

दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर - 273009 (उ.प्र.)

D.D.U. Gorakhpur University
Gorakhpur - 273009 (U.P.)

दिनांक : 30.10.2023

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि विश्वविद्यालय से सम्बद्ध चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज, गोरखपुर द्वारा गत वर्षों की भांति वार्षिक पत्रिका ''**अग्रिमा**'' का प्रकाशन किया जा रहा है।

शैक्षिक संस्थाओं द्वारा प्रकाशित होने वाली पत्रिकायें युवाओं के व्यक्तित्व विकास में अहम भूमिका निभाती हैं। इससे ज्ञान के सतत् उन्नयन एवं अभिव्यक्ति के माध्यम से योग्यता प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त होता है। मैं आशा करती हूँ कि महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाली पत्रिका विद्यार्थियों एवं समाज के लिए ज्ञानवर्द्धक तथा प्रेरणादायक सिद्ध होगी।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सम्पादक मण्डल सहित महाविद्यालय परिवार के सभी शिक्षकों, कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं को हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ।

प्रो. पूनम टण्डन
कुलपति

डा. मंगलेश श्रीवास्तव
महापौर

Dr. Manglesh Srivastava
Mayor

नगर निगम, गोरखपुर
Nagar Nigam, Gorakhpur

ईमेल - mayorofficegkp@gmail.com
दूरभाष - 0551-2334539

दिनांक : 04.10.2023

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष हो रहा है कि चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज, गोरखपुर द्वारा प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी ''**अग्रिमा**'' नामक पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहा है। चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज द्वारा छात्राओं को संस्कारवान शिक्षा देने में अपनी महती भूमिका निभा रहा है। जहाँ तक मुझे जानकारी है ''अग्रिमा'' पत्रिका के माध्यम से दिया गया संदेश छात्राओं एवं उनके अभिभावकों को जागरूक बनाने में अहम भूमिका निभायेगी साथ ही सभी का उत्साहवर्धन भी करेगी। मुझे आशा है कि इस पत्रिका के प्रकाशन में लगे सभी लोग अपने दायित्वों का निर्वहन पूर्ण निष्ठा एवं ईमानदारी से करेंगे, यह पत्रिका अपना एक सशक्त छाप छोड़े एवं ख्याति अर्जित करे जिसका लाभ समाज को मिलें। इस कार्य में लगे सभी को मेरी ढ़ेर सारी शुभकामनाएं।

डा. मंगलेश श्रीवास्तव
महापौर

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना

केशव कुंज, झण्डेवाला, नई दिल्ली-110055

दूरभाष- 011-23385670, ई-मेल- abisy84@gmail.com

20 अप्रैल, 2024

शुभकामना संदेश

मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज, गोरखपुर अपनी वार्षिक पत्रिका **'अग्निमा'** का प्रकाशन कर रहा है। यह पत्रिका विद्यार्थियों, शिक्षकों और कर्मचारियों के उत्कृष्ट कार्य और साहित्यिक योगदान को प्रकट करती है।

महाविद्यालय छात्रों में राष्ट्रवाद और देशभक्ति की सबसे पोषित विचारधारा को विकसित कर रहा है। ये वे मूल मूल्य हैं, जिनके लिए महाविद्यालय के सदस्य के रूप में युवा प्रयास करते हैं। महाविद्यालय युवाओं में राष्ट्र-प्रथम और राष्ट्रीय गौरव की भावना जागृत करने के लिए लगातार काम कर रहा है। मुझे उम्मीद है कि चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज, गोरखपुर के शिक्षक, छात्र और प्रशासन अपने-अपने तरीके से 2047 तक विकसित भारत और आत्मनिर्भर भारत के राष्ट्रीय लक्ष्य को प्राप्त करने में योगदान देंगे। मैं उनके प्रयास में बड़ी सफलता की कामना करता हूं।

वार्षिक पत्रिकाओं के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार, संवेदनशीलता और उत्कृष्टता को प्रोत्साहित किया जाता है। मैं आपके सभी प्रयासों की सराहना करता हूँ और इस पत्रिका के प्रति अपनी शुभकामना देता हूँ।

बालमुकुन्द पाण्डेय

संगठन सचिव

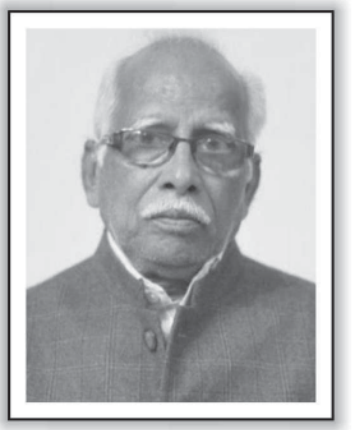

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है कि प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज, गोरखपुर द्वारा वार्षिक पत्रिका **''अग्रिमा''** का प्रकाशन किया जा रहा है। विगत् तैंतीस वर्षों से यह महाविद्यालय निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। शैक्षिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के क्षेत्र में महाविद्यालय ने नित-नवीन कीर्तिमान स्थापित किये है। मैं महाविद्यालय प्रबंधन का अभिन्न अंग हूँ, यह मेरे लिए गौरव का विषय है।

इसके लिए मैं समस्त महाविद्यालय परिवार एवं पत्रिका सम्पादक मण्डल को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने छात्राओं में सृजनात्मक के विकास हेतु यह सार्थक पहल की।

पुष्पदन्त जैन

अध्यक्ष

महाविद्यालय प्रबंध समिति

शुभकामना संदेश

चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कॉलेज, गोरखपुर, शैक्षणिक एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियों के क्षेत्र में निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है। यह महाविद्यालय गोरखपुर परिक्षेत्र में नारी शिक्षा तथा महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित हुआ है। महाविद्यालय द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी वार्षिक पत्रिका **'अग्रिमा'** का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिकाओं के प्रकाशन से विद्यार्थियों की रचनात्मक क्षमता को अभिव्यक्त करने का अवसर मिलता है, जिससे उनकी बौद्धिक चेतना एवं रचनात्मकता विकसित होती है।

यह संस्थान मुख्य रूप से छात्राओं को आत्म निर्भर बनाने व उनकी रचनात्मक एव सृजनात्मक कुशलता पर विशेष जोर देता है। यह पत्रिका, महाविद्यालय के लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक बने, ऐसी मैं कामना करती हूँ। साथ ही पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को विशेष शुभकामनायें देती हूँ।

डॉ. विजयलक्ष्मी मिश्रा

प्रबन्धक

शुभकामना संदेश

चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज 'गुरु जी' के सपनों का साकार रूप है। गुरु जी ने 'नारी शिक्षा' एवं आत्मनिर्भर 'नारी' का जो संकल्प लिया, उसे एक तपस्वी की भाँति पूर्ण करने में आजीवन समर्पित रहे। उसी की एक महत्वपूर्ण कड़ी वार्षिक पत्रिका **'अग्रिमा'** है। यह पत्रिका छात्राओं में सृजनात्मक क्रियाशीलता, विचारात्मक एवं भावात्मक अभिव्यक्ति का विकास करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह पत्रिका छात्राओं को रचनात्मक गतिविधियों से जुड़ने का अवसर प्रदान करती है। साथ ही यह महाविद्यालयीय उपलब्धियों का प्रसार करती है।

मुझे पूरा विश्वास है कि यह पत्रिका छात्राओं की मेधा शक्ति को निखारने में अपनी भूमिका निभाते हुए उनमें सृजनात्मक गुणों का विकास करने में सहयोग करेगी। मैं पत्रिका सम्पादक एवं समस्त सहयोगी सदस्य गण को हृदय से धन्यवाद देती हूँ जिन्होंने इस पत्रिका के प्रकाशन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

यह पत्रिका छात्राओं का ज्ञानवर्धन एवं प्रोत्साहन करेगी, यही मेरी शुभकामना है।

धन्यवाद।

डॉ. सुमन सिंह
प्राचार्य

सम्पादकीय ...

प्रिय पाठकगण।...

आजादी के अमृतमहोत्सव के इस स्वर्णिम काल के साथ-साथ महाविद्यालय स्थापना के ''तैंतीसवें'' वर्ष में वार्षिक पत्रिका **'अग्रिमा'** के इस अंक का प्रकाशन महिला सशक्तिकरण को चरित्रार्थ करने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की प्रमाणिक सूची के साथ प्रकाशित किया जा रहा है।

समाज की आधार स्तम्भ मातृशक्ति को ऊर्जा, प्रेरणा, संस्कार एवं शिक्षा प्रदान करने वाला हमारा महिला महाविद्यालय सदैव उनके सर्वांगीण विकास के संकल्प के साथ निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है। नारी शिक्षा को बल देते हुए समाज में उन्हें जटिल से जटिल समस्याओं का सामना करने का प्रशिक्षण प्रदान करने में महाविद्यालय के विभिन्न विभागों एवं समितियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिनकी प्रेरणा से छात्राएं नित नये-नये कार्यक्रमों के माध्यम से समाज, परिवार एवं स्वयं को प्रशिक्षित करती है।

पत्रिका के इस अंक में ''छात्राओं की कलम से'' उन्हें अपने मनोभावों को व्यक्त करने का अवसर मिला है। साथ ही शिक्षक वर्ग की लेखनी ने भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। महाविद्यालय के नये-नये कार्यक्रमों एवं गतिविधियों को इस अंक में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। जिसका मुख्य उद्देश्य भावी छात्राओं को प्रेरित करना है, जिससे उनके अन्दर भी अपनी कला को विभिन्न क्षेत्रों में प्रस्तुत करने की प्रेरणा प्राप्त हो सके।

सत्र 2023-24 में प्रकाशित होने वाले अग्रिमा के इस अंक में प्रयास किया गया है कि छात्राओं को लेखन कार्य की ओर आकर्षित करने के साथ-साथ उनके लेखन कौशल एवं प्रतिभा को अभिभावकों तथा समाज के मध्य पहुँचाया जा सके। आज की युवा छात्राएं भविष्य की निर्माता है। अत: पत्रिका में उनके लेखन कार्य को अंकित करने का उद्देश्य उन्हें समाज देश एवं स्वयं के लिए कल्पनाशील बनाना है। अर्थात् जब वे अपनी स्वरचित लेखनी को प्रकाशित होता हुआ देखती हैं तो उन्हें आत्मबल प्राप्त होता है। और इसी से प्रेरित होकर वे स्वयं को एवं दूसरी साख्य छात्राओं को भी अपने लेखन प्रतिभा को निखारने के लिए प्रेरित करती हैं और उन्हें आगे बढ़ने में सहयोग करती है।

छात्रहित सर्वोपरि इस उद्देश्य से महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'अग्रिमा' का यह अंक प्रकाशित करते हुए अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है। जिन छात्राओं ने अपने लेखन कला के द्वारा शैक्षणिक, स्वअनुभव एवं सामाजिक स्थितियों, ऐतिहासिक तथा सोशल मीडिया से सम्बन्धित लेखों के माध्यम से उनकी वास्तविकता को उकेरने का प्रयास किया है उन्हें आभार। सम्पादक मण्डल महाविद्यालय परिवार के समस्त अग्रज एवं अनुज शिक्षक तथा शिक्षणेत्तर कर्मचारियों, समाज के प्रत्येक नागरिकों को धन्यवाद ज्ञापित करता है। जिनके सहयोग एवं सुझावों ने इस पत्रिका को सम्पादित करने के लिए संबल प्रदान किया।

साथ ही हम सभी की अभिभावक, आदरणीय प्रबन्धक डॉ. विजयलक्ष्मी मिश्रा, प्राचार्य डॉ. सुमन सिंह को हृदय से आभार व्यक्त करता है। जिनकी प्रेरणा से यह सम्पादन कार्य पूर्ण हो सका।

आपकी स्नेहाकांक्षी

डॉ. अमिता अग्रवाल

(मुख्य सम्पादक)

विश्वविद्यालय द्वारा स्वर्णपदक प्राप्त करने वाली महाविद्यालय की मेधावी छात्राएं

आस्था श्रीवास्तव
स्नातक 74.22%

नमिता त्रिपाठी
एम.एड. 70.57%

उर्मि मिश्रा
एम.एड. 71.42%

अनामिका उपाध्याय
एम.ए. गृहविज्ञान 77.88%

चांदनी जायसवाल
एम.ए. गृहविज्ञान 79.55%

तपस्या जायसवाल
एम.ए. रा. शास्त्र 62.5%

सुनिधि गुप्ता
गृहविज्ञान 80%

स्नेहलता यादव
गृहविज्ञान 82%

प्रीति गुप्ता
गृहविज्ञान 79%

संगीता चौधरी
शिक्षाशास्त्र 66.8%

प्रशंसा मद्धेशिया
गृहविज्ञान 81%

भावना पाण्डेय
शिक्षाशास्त्र 62%

शालिनी
एम.ए. गृह विज्ञान 79%

अरूणिमा शुक्ला
एम.ए. गृह विज्ञान 85%

प्राची श्रीवास्तव
एम.ए. दृष्य कला 86.83%

सत्र 2022-23 में सर्वाधिक अंक एवं विभिन्न गतिविधियों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाली मेधावी छात्राएं

वन्दना विश्वकर्मा
एम.एड्. द्वितीय वर्ष, 78.37%

अंजलना खातून
बी.एड्. द्वितीय वर्ष, 92.5%

वैष्णवी सिंह
एम.ए. द्वितीय वर्ष (गृहविज्ञान), 85.12%

कुमारी श्वेता
एम.ए. द्वितीय वर्ष (राजनीति विज्ञान), 78%

प्राची श्रीवास्तव
एम.ए. द्वितीय वर्ष (दृश्य कला), 86.83%

चांदनी प्रजापति
एम.ए. द्वितीय वर्ष (शिक्षाशास्त्र), 68%

अफ़रीन खानम
बी.ए. तृतीय वर्ष, 69%

आकांक्षा कुमारी
बी.कॉम. तृतीय वर्ष, 60.4%

अन्निद्या सिंह
बेस्ट कैडेट, एन.सी.सी. 2023-24

प्रीति मिश्रा
सर्वश्रेष्ठ स्वयंसेविका 2023-24

प्रियंका साहनी
बेस्ट प्लेयर, वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता 2023-24

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	लेखक	पेज सं.
1	महाविद्यालय की प्रगति आख्या	डॉ. रेखा श्रीवास्तव	1
2	कर्मयोगी डॉ. रामरक्षा पाण्डेय	डॉ. अर्चना मिश्रा	3
3	स्मृतियों का संसार, गुरुजी के साथ	डॉ. सुशीला चतुर्वेदी	5
4	अध्यात्म और विश्वशान्ति	डॉ. ज्योत्स्ना त्रिपाठी	6
5	राम राज्याभिषेक	डॉ. सुमन सिंह	7
6	जी-20 सम्मेलन एवं मेजबान भारत	डॉ. स्वप्निल पाण्डेय	8
7	एक कश्ती बीच समुन्दर में	आशफा परवीन	9
8	आभासी दुनिया का मकड़जाल और दिग्भ्रमित युवा	डॉ. प्रीति त्रिपाठी	10
9	महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन व विचारधारा	शैलेन्द्र कुमार राव	11
10	इतिहास की वीरांगना रानी लक्ष्मी बाई	सुजाता गौतम	13
11	मोटे अनाज में छिपा है सेहत का राज	डॉ. सरिका जायसवाल डॉ. अनिता सिंह	14
12	वर्तमान समय में घरानों का महत्व	डॉ. निशा श्रीवास्तव	15
13	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) वरदान है या अभिशाप	अंजली शुक्ला	17
14	शिक्षा में आईओटी (IoT) का प्रभाव और वर्तमान स्थिति	शंकर थापा	19
15	वैश्विक आतंकवाद : स्थिति और समाधान	श्रेया द्विवेदी	20
16	आधुनिक संदर्भ में श्री रामचरित मानस की प्रासंगिकता	डॉ. सारिका पाण्डेय	21
17	अध्यात्म एवं विज्ञान के समन्वय का ऐतिहासिक क्षण ''श्री बालकराम सूर्यतिलकोत्सव''	डॉ. अमिता अग्रवाल	23
18	ग्रामीण समाज की विशेषताएँ	प्रतिभा मिश्रा	24
19	कोशिश कर	अर्शी खातून	26
20	The Power of Parental Involvement: Enhancing Homework Success	Anant Pathak	27
21	A Study On Adolescent Girls Knowledge About Medical Textile In Health Care Product	Pooja Gupta	29
22	गंगा प्रदूषण	प्रियंका पाण्डेय	30
23	The Status of Educational Rights of Women: Pre And Post Independence	Dr. Mamta Tiwari	31
24	कौन तेरा	सृष्टि सिंह चन्देल	33
25	Importance of English language	Akriti Singh	34
26	बौद्धिक सम्पदा	विजेता दूबे	35
27	आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है	रुचि विश्वकमा	37
28	राष्ट्रीय युवा दिवस	निशा निगम	38

29	चमकता भारत चहकती बेटियाँ	शिवांगी पासवान	38
30	नारी	अक्शा इकबाल	39
31	शिक्षक	दिव्या सिंह	39
32	लड़ना तो है ही	महिमा तिवारी	39
33	आदर्श छात्र	दिव्या सिंह	40
34	बेहतर दिखता है	शालिनी त्रिपाठी	40
35	इंटरनेट की दुनिया	प्रगति श्रीवास्तव	41
36	बारिश का मौसम	शानिया खान	41
37	ये कौन सा खेल था	शालिनी त्रिपाठी	42
38	एक फूल की व्यथा	प्रगति श्रीवास्तव	42
39	अजन्ता की कला	गरिमा यादव	43
37	काश	शालिनी त्रिपाठी	44
38	भारत की प्रथम महिला आदिवासी राष्ट्रपति - द्रौपदी मुर्मू	स्वाती पाण्डेय	45
39	उत्तर प्रदेश की कला व संस्कृति	प्राची श्रीवास्तवा	46
40	कलम	नम्रता चौधरी	47
41	कोमल है कमजोर नहीं	अर्शी खातून	48
42	सपनों में रख आस्था	दिव्या सिंह	48
43	नारी	शिवानी चौधरी	49
44	प्रकृति	प्रिया गुप्ता	49
45	मानव जीवन में सोशल मीडिया का प्रभाव	समृद्धि चौरसिया	50
46	Importance of Education	Shrutika Singh	51
47	How to change your life?	Shalini Tripathi	51
48	Beti Bachao Beti padhao	Shrutika Singh	52
49	Why boys why not girls	Divya Tripathi	52
50	**रिपोर्ट एवं सूचनाएँ**		
	एन.सी.सी. एक वैकल्पिक विषय के रूप में	कैप्टन (डॉ.) अपर्णा मिश्रा	53
	नियंता मण्डल	डॉ. पवन कुमार	55
	पुरातन छात्र परिषद्	डॉ. आस्था प्रकाश	55
	राष्ट्रीय सेवा योजना	डॉ. आस्था प्रकाश	56
	स्वस्थ समाज की रीढ़ है– फिट इण्डिया मूवमेंट	डॉ. अमिता अग्रवाल	56
	छात्रहित सर्वोपरि	डॉ. अमिता अग्रवाल	57
51	**प्रबन्ध समिति**		58
52	**महाविद्यालय परिवार**		59
53	वन्देमातरम्		62
54	विभिन्न समाचार पत्रों में महाविद्यालयीय वार्षिक गतिविधियों की एक झलक		64

महाविद्यालय की प्रगति आख्या

डॉ. रेखा श्रीवास्तव
समन्वयक – आई.क्यू.ए.सी.

पूर्वान्चल के गौरवमयी प्रभाग गुरु गोरक्षनाथ जी की पावन तपोभूमि गोरखपुर में बसे चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज, गोरखपुर की स्थापना चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला कल्याण संस्थान द्वारा कार्तिक नवमी के दिन संवत् 2047 सन् 1990 को हुई। इस संस्थान का उद्देश्य महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक उत्थान के साथ साथ छात्राओं का सर्वांगीण विकास करते हुए भारतीय संस्कृति, सभ्यता, भाषा, साहित्य, एवं विज्ञान का संरक्षण तथा संवर्धन करना है।

अपने स्थापना के समय स्नातक स्तर पर मात्र छः विषयों के साथ स्नातक कला का पाठ्यक्रम संचालित करने वाले इस महाविद्यालय में वर्तमान में ग्यारह विषय हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, प्राचीन इतिहास, शिक्षाशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, गृहविज्ञान, मंच कला, दृश्य कला एवं कम्प्यूटर अप्लिकेशन में स्नातक कला का पाठ्यक्रम संचालित है। स्नातकोत्तर स्तर पर शिक्षाशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, गृहविज्ञान के साथ ही दृश्यकला विषय का संचालन किया जा रहा है। शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के अंतर्गत 2005–06 से बी.एड्. की कक्षाएं तथा 2007–08 से एम.एड्. की कक्षाएं भी संचालित हैं। पाठ्यक्रम संवर्द्धन हेतु महाविद्यालय सतत् अग्रसर है। इस श्रृंखला में सत्र 2010–11 में बी.एस–सी. गृहविज्ञान तथा सत्र 2016–17 से वाणिज्य संकाय के अंतर्गत बी.काम. का पाठ्यक्रम भी संचालित है।

इसी क्रम में सत्र 2019– 20 से राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज के सौजन्य से महाविद्यालय में फैशन डिजाइनिंग, योगा, मानवाधिकार आदि विषयों में सर्टिफिकेट एवं डिप्लोमा कोर्स के साथ ही बी.ए. स्नातक एम.ए. स्नातकोत्तर का पाठ्यक्रम चल रहा है।

छात्राओं में सामुदायिक भावना के विकास तथा राष्ट्रीय एवं मानवीय मूल्यों के पोषण हेतु 1995 से एन. सी.सी. का एक प्लाटून, राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत ज्ञानदा, विजया एवं प्रेरणा– ये तीन इकाईयाँ साथ ही रोवर रेंजर्स का कार्यक्रम भी संचालित है। महाविद्यालय की मेधावी छात्राओं, एन.सी.सी. कैडेट्स तथा स्वयंसेविकाओं ने अपनी उत्कृष्ट उपलब्धियों द्वारा सदैव से ही महाविद्यालय को गौरवान्वित किया है। प्रति वर्ष यहां की एन.सी.सी. कैडेट्स एवं स्वयंसेविकाओं का चयन आर.डी.सी. परेड, नई दिल्ली के लिए होता आया है। इसी क्रम में इस वर्ष भी श्रद्धा पांडेय का चयन आर्मी अटैचमेंट कैंप लखनऊ के लिए हुआ और वहां उसे बेस्ट कैडेट का अवार्ड भी प्राप्त हुआ, इसी के साथ अंशिका पांडेय एवं श्वेता त्रिपाठी का चयन इंटर ग्रुप कंपटीशन नोएडा के लिए एवं श्वेता त्रिपाठी का आर्मी अटैचमेंट कैंप लखनऊ के लिए हुआ है। इस प्रकार राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित विभिन्न शिविर में अपनी गौरवमयी प्रतिभागिता देते हुए छात्राओं ने अपनी कामयाबी का परचम लहराया है।

महाविद्यालय की छात्राओं ने सदैव से ही राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित विभिन्न गतिविधियों में प्रतिभागिता देकर महाविद्यालय का नाम रोशन किया है।

आधुनिक तकनीकी युक्त गुणवत्तापरक अध्ययन–अध्यापन का माहौल प्रदान करने के ध्येय से स्मार्ट क्लास, आई.सी.टी. लैब, कम्प्यूटर लैब एवं प्रोजेक्टर युक्त कक्षा कक्ष की व्यवस्था, समृद्ध पुस्तकालय, ई–बुक एवं जर्नल्स की सुविधा हेतु महाविद्यालय प्रतिबद्ध है। उत्तम शिक्षण–प्रशिक्षण का ही प्रतिफल है कि यहां का परीक्षाफल सदैव शत–प्रतिशत रहता है।

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी महाविद्यालय में संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों के अंतर्गत बी.ए. में आफरीन खानम ने 69%, बी.एस–सी. गृह विज्ञान में ममता कुमारी ने 64.17%, बी.कॉम. में आकांक्षा कुमारी ने 60.4%, एम.ए. शिक्षाशास्त्र में चाँदनी प्रजापति ने 68%, एम.ए. गृहविज्ञान में वैष्णवी सिंह ने 85.12%, एम.ए. दृश्यकला में प्राची श्रीवास्तव ने 86.83%, एम.ए. राजनीतिविज्ञान में कुमारी श्वेता ने 78%, बी.एड्. में अंजलना खातून ने 92.5% तथा एम.एड्. में

वन्दना विश्वकर्मा ने 78.37% अर्जित कर महाविद्यालय को गौरवान्वित किया है।

यहां की बी.ए,, एम.ए. एवं एम.एड्. की छात्राओं ने विगत वर्षों में विश्वविद्यालय में सर्वाधिक अंक अर्जित करते हुए विश्वविद्यालय टॉप करके महाविद्यालय का मान बढ़ाया है, इसी क्रम में दृश्यकला एम.ए. की छात्रा प्राची श्रीवास्तव ने सर्वाधिक अंक प्राप्त करते हुए इस वर्ष भी विश्वविद्यालय टॉप किया है।

महाविद्यालय में छात्राओं के बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विकास हेतु वर्ष भर विभिन कार्यक्रमों का आयोजन होता रहता है। इस श्रृंखला में विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर अब तक 25 से अधिक राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन हो चुका है, इसके अतिरिक्त समय-समय पर विषय विशेषज्ञों द्वारा विशेष व्याख्यान, कार्यशाला प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन कर छात्राओं के बौद्धिक विकास का प्रयास निरन्तर महाविद्यालय करता रहता है। छात्राओं की साहित्यिक अभिरूचि को दिशा देने एवं रचनाधर्मिता को मुखरित करने के ध्येय से प्रतिवर्ष वार्षिक पत्रिका अग्रिमा का प्रकाशन भी किया जाता है, जिससे उनकी रचनात्मकता को प्रस्फुटित किया जा सके। इसके साथ ही छात्राओं के आन्तरिक क्षमताओं एवं प्रतिभाओं के विकास हेतु प्रतिवर्ष भाषण प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, प्रश्न मंच प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, रंगोली एवं मेंहदी प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया जाता है। दृश्यकला विभाग के सौजन्य से प्रतिवर्ष चित्रकला प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता है जिसमें छात्राएं अपनी अद्भुत चित्रकारी का प्रदर्शन करती है।

महाविद्यालय के कुशल संचालन एवं प्रशासन हेतु विभिन्न समितियाँ एवं प्रकोष्ठ जैसे प्रवेश समिति, परीक्षा समिति, क्रीड़ा समिति, महिला सुरक्षा एवं एण्टी रेगिंग समिति, प्रतिपुष्टि प्रकोष्ठ, पुरातन छात्र परिषद, शिक्षक अभिभावक समिति, निर्देशन एवं परामर्श प्रकोष्ठ, प्लेसमेंट प्रकोष्ठ, हेल्थ केयर समिति, छात्र कल्याण समिति इत्यादि संचालित है। समितियों द्वारा छात्राओं की संस्थागत एवं शैक्षणिक समस्याओं का समाधान किया जाता है।

महाविद्यालय के शैक्षणिक एवं प्रशासनिक गतिविधियों में गुणवत्ता संवर्द्धन की दृष्टि से राष्ट्रीय मूल्यांकन प्रत्यायन परिषद (NAAC) के मानकों को ध्यान में रखते हुए आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ (IQAC) भी गठित है जो गुणवत्ता संवर्द्धन हेतु सतत् प्रयत्नशील है। इस श्रृंखला में अप्रैल 2019 में महाविद्यालय का NAAC प्रत्यायन एवं मूल्यांकन भी सम्पन्न हुआ है। मूल्यांकन उपरान्त अनवरत गुणवत्ता संवर्धन हेतु अग्रसर है। इस क्रम में इस वर्ष पुरातन छात्र परिषद का रजिस्ट्रेशन, वर्मी कंपोस्ट और वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम का निर्माण, सोलर पैनल की स्थापना, एनर्जी, वाटर एवं एनवायरनमेंटल ऑडिट आदि कराते हुए महाविद्यालयीय सुविधाओं में अभिवृद्धि करता हुआ निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

महानता वह नहीं होती कि आप गिर गए और उठे ही ना,
महानता उसे कहते हैं जब आप गिरकर बार-बार उठते हैं।

कर्मयोगी डॉ. रामरक्षा पाण्डेय

- डॉ. अर्चना मिश्रा
एसोसिएट प्रोफेसर
प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग
कालीचरण पी.जी. कालेज, लखनऊ

बीसवीं सदी के अंतिम चरण में, नब्बे के दशक में जब गोरखपुर में एक विश्वविद्यालय और हाथ की पाँच उंगुलियों पर गिने जाने वाले कतिपय महाविद्यालय ही थे; उसी समय डी.ए.वी. गोरखपुर के संस्कृत विभाग के शिक्षक डॉ. रामरक्षा पाण्डेय के मन में एक अद्‌भुत विचार ने जन्म लिया। गोरक्षनाथ पीठ के महन्थ अवेद्यनाथ जी के सानिध्य में गोरखपुर में बालिकाओं की शिक्षा के लिए एक महाविद्यालय बनाने की कार्य योजना पर कार्य किया गया। डॉ. रामरक्षा पाण्डेय जी ने अपनी सास श्रीमती रमावती देवी द्वारा प्राप्त जमा पूँजी का उपयोग करते हुये दीवान बाजार, गोरखपुर में चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला महाविद्यालय को प्रारम्भ किया। श्रीमती चन्द्रकान्ति देवी स्वर्गीय रमावती देवी की पुत्री एवं डॉ. पाण्डेय की धर्मपत्नी हैं। यह महाविद्यालय उस समय उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सद्यः प्रारम्भ स्ववित्तपोषित योजना के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त संस्था के रूप में स्थापित हुआ।

स्थापना के साथ ही यह महाविद्यालय दिनों-दिन लोकप्रिय होता गया। इसमें प्रारम्भ में संस्कृत, हिन्दी, समाजशास्त्र, प्राचीन इतिहास, शिक्षाशास्त्र, राजनीति विज्ञान, गृह विज्ञान विषयों के साथ बालिकाओं की स्नातक स्तर की शिक्षा आरम्भ हुई। सभी विषयों में विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित प्रक्रिया का अनुपालन करते हुए शिक्षकों की नियुक्ति की गई, जिसमें मेरी नियुक्ति प्राचीन इतिहास विषय में प्रथम वरीयता के आधार पर हुई। संस्कृत विषय में पी-एच.डी. उपाधि प्राप्त डॉ. रंजना मिश्रा की नियुक्ति भी हुई जो डॉ. पाण्डेय की पुत्री थीं। इस सन्दर्भ में मैंने यह उल्लेख इसलिए किया क्योंकि शिक्षण कार्य एवं महाविद्यालय के अनुशासन में उन्होंने कभी भी अपनी पुत्री को भी अनुशासन मुक्त नहीं किया। अभी कुछ दिन पूर्व एक स्ववित्तपोषित महाविद्यालय के शिक्षक ने बताया कि उनके प्रबन्धक प्रायः चलती हुई कक्षा के बीच आकर बैठ जाते हैं। हम सभी शिक्षकों को ऐसा अनुभव कभी नहीं हुआ, यद्यपि वे लगभग पूरा दिन महाविद्यालय की व्यवस्था में ही व्यतीत करते थे। सम्भवतः मौलिक रूप से शिक्षक होने के कारण उन्होंने शिक्षण कार्य में कभी व्यवधान/ हस्तक्षेप नहीं किया जबकि छात्राओं से वे सभी शिक्षकों के कार्यों की पूरी रिपोर्ट प्राप्त करते थे।

अहर्निश अपने अथक परिश्रम से उन्होंने महाविद्यालय को उत्तरोत्तर विकसित किया। पंडित मदन मोहन मालवीय जी से प्रेरणा लेकर उन्होंने गोरखपुर नगर के धनाढ्य सम्पन्न लोगों को प्रेरित करके उनके द्वारा प्रदत्त सहयोग राशि से महाविद्यालय के विभिन्न कक्षों को निर्मित किया। इसी क्रम में गोरखपुर नगर के एक बड़े व्यवसायी श्री बद्रीप्रसाद जायसवाल ने अपनी माताजी की स्मृति में मंगलादेवी जायसवाल वाद-विवाद प्रतियोगिता का प्रत्येक वर्ष आयोजन कराया। यह प्रतियोगिता एक समय अपने भव्य आयोजन और पुरस्कार राशि से गोरखपुर तथा आस-पास के जिलों के विद्यार्थियों के भी आकर्षण का केन्द्र रही। डॉ. पाण्डेय की प्रेरणा से महाविद्यालय में 15 यू.पी. गर्ल्स बटालियन की प्लाटून का आरम्भ हुआ। 'सी सर्टीफिकेट' प्राप्त होने के कारण मेरे ही निर्देशन में एन.सी.सी. का बीजारोपण हुआ और उसमें भी निरन्तर नये प्रतिमान स्थापित करने की डॉ. पाण्डेय की प्रेरणा से शीघ्र ही महाविद्यालय की कैडेट्स ने राष्ट्रीय स्तर पर शूटिंग प्रतियोगिता (करुणा त्रिपाठी), राजपथ पर परेड (अल्पना मल्ल) एवं प्रादेशिक स्तर पर भी (अर्चना राय, गौतमी चतुर्वेदी, आराधना राय, शिल्पी अग्रवाल, जूही श्रीवास्तव आदि) छात्राओं का प्रदर्शन उल्लेखनीय रहा। आज भी महाविद्यालय में एन.सी.सी. का आकर्षण और स्तर सराहनीय है।

प्रतिवर्ष छात्राओं के चतुर्दिक समुन्नयन के लिए अनेक प्रकार की शैक्षिक, सांस्कृतिक गतिविधियाँ होती रहती थीं।

महापुरुषों के जन्मदिन, महत्वपूर्ण दिवस आदि भी मनाने की परम्परा रही। शीघ्र ही यह महाविद्यालय इतना लोकप्रिय हो गया कि बड़ी संख्या में प्रवेश होने लगे। महाविद्यालय के प्रबन्धक डॉ. रामरक्षा पाण्डेय ने इसकी स्थापना स्नातक स्तर पर की परन्तु उनके मस्तिष्क में इसके परिवर्धन की पूरी रूपरेखा थी। महाविद्यालय में पी.जी. कक्षायें प्रारम्भ हुई, अनेक संकाय बने, कम्प्यूटर शिक्षा का भी ध्यान रखा गया। मुझे याद आता है कि जब कम्प्यूटर बहुत कम लोगों को सुलभ था, तभी उन्होंने अपनी पुत्री को कम्प्यूटर में प्रशिक्षित कराया और ऑफिस के विवरण सुरक्षित करने में कम्प्यूटर का प्रयोग आरम्भ हुआ।

इस महाविद्यालय से जुड़ी मेरी अनेक स्मृतियाँ हैं। उनमें से एक मधुर स्मृति यह भी है कि हम शिक्षकों के लिए कई बार प्रबन्धक जी की पत्नी जिन्हें हम सब चाचीजी कहते थे उनकी ओर से हम सबके लिए पर्याप्त मात्रा में खाने-पीने की सामग्री आती रहती थी, जिसका हम लोग छक करके आनन्द उठाते थे। महाविद्यालय का वातावरण पारिवारिक होने के कारण हम सब अपनी पूरी क्षमता से उसके परिवर्धन का प्रयास करते थे। इस महाविद्यालय की स्थापनाकाल से ही डॉ. रामरक्षा पाण्डेय जी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर प्रसिद्ध समाजसेवी श्री पुष्पदन्त जैन जी ने सदैव सहयोग दिया। महाविद्यालय में किसी भी महत्त्वपूर्ण अवसर पर आपकी उपस्थिति सदैव ही प्रेरणा देने वाली होती थी।

डॉ. रामरक्षा पाण्डेय जी जिन्हें हम सभी गुरुजी कहकर सम्बोधित करते थे, वास्तव में महान कर्मयोगी थे। उनकी प्रतिदिन की दिनचर्या, खान-पान में अनुशासन की स्पष्ट छाप थी। इसी कारण मैंने दस वर्षों के अध्यापनकाल में उन पर कभी भी उम्र का प्रभाव नहीं देखा। डी.ए.वी. कालेज से अवकाशप्राप्त करने के बाद तो उनका समर्पण और भी बढ़ गया और कठिन प्रयास करके उन्होंने स्वस्थापित इस महाविद्यालय को अनेक विषयों और संकायों से समृद्ध किया, साथ ही इसके भवनों में भी विस्तार हुआ और आज यह गोरखपुर नगर की पहचान बन चुका है। आज यह महाविद्यालय लगभग तैंतिस वर्ष की यात्रा पूरी कर चुका है, परिपक्व हो चुका है। जिन परिस्थितियों में इस महाविद्यालय की स्थापना सीमित संसाधनों के साथ की गई थी, उसका ऐसा विकसित रूप निश्चित ही प्रेरणा देने वाला है। एक डिग्री कालेज के शिक्षक द्वारा अपनी संचित जमा-पूँजी लगाकर महिला शिक्षा को केन्द्र में रखकर इस महाविद्यालय की स्थापना की गई, जिसमें निरन्तर इस बात का प्रयास किया गया कि शिक्षण का स्तर विश्वविद्यालयीय शिक्षा या उससे भी आगे निकल जाये। महिला शिक्षा में उनके लगाव को इस बात से भी समझा जा सकता है कि उन्होंने अपनी सभी पुत्रियों की उच्चशिक्षा का अच्छा प्रबन्ध किया और बाल्यकाल से उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का प्रयास किया। उनकी सभी पुत्रियाँ उच्चशिक्षित और स्वावलम्बी बनीं। गुरुजी ने शिक्षकों के चयन में सदैव ही योग्यता को ही प्राथमिकता दी और शिक्षकों से उनकी पूरी क्षमता से कार्य कराया। इस महाविद्यालय को सदैव अपने संस्थापक प्रबन्धक का ऋणी होना चाहिए। आज वे हमारे बीच नहीं है, परन्तु यह महाविद्यालय सदैव उनकी कीर्ति का विस्तार करता रहेगा। यह महाविद्यालय उनके भगीरथ प्रयास का जीता जागता उदाहरण है जो समाज के लोगों को भी प्रेरणा देगा कि यदि दृढ़ निश्चय किया है तो कोई भी दुस्तर कार्य सम्भव किया जा सकता है। आज उनकी स्मृति में मैं इस महान कर्मयोगी को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करती हूँ।

अगर सूरज के तरह जलना है तो रोज उगना पड़ेगा।

स्मृतियों का संसार, गुरुजी के साथ

डॉ. सुशीला चतुर्वेदी
पूर्व प्रधानाचार्या

गुर जी से मेरी पहली भेंट तब हुई जब मैं चंद्रकान्ति रमावती देवी महाविद्यालय में शिक्षण कार्य करने की इच्छा लेकर उनसे मिलने गई। उन दिनों वे महाविद्यालय की स्थापना कर चुके थे और शिक्षकों की नियुक्ति हेतु आवेदन प्रपत्रों का वितरण प्रारम्भ करवा चुके थे। प्रथम दृष्टया गुरु जी में मुझे अपने पिता जैसी दृढ़ता, मधुरता और कर्त्तव्यनिष्ठा दिखाई दी। धवल वेश में वे एक संत जैसे प्रतीत हुए। उज्ज्वल सफेद धोती, कुर्त्ता पर उत्तरीय धारण किये हुए गुरुजी मुझे किसी संत की ही तरह दिखाई दिये। जिन सिद्धान्तों को लेकर मुझे मेरे पिताजी ने पढ़ाया-लिखाया और संस्कारित किया था, वह सब मुझे गुरुजी में प्रतिभासित होने लगा। उन दिनों मेरी पी-एच.डी. पूरी नहीं हुई थी, अत: बड़े प्रेम से उन्होंने मुझे सलाह दिया कि पहले आप अपनी पी-एच.डी. पूरी कर लें तब सम्पर्क करें।

पुन: दो वर्ष बाद सिक्सा के प्रोजेक्ट में काम करते हुए मुझे उनके महाविद्यालय में जाने का अवसर मिला और उसके बाद मैं उस महाविद्यालय से जुड़ गई। गुरु जी महाविद्यालय में सांस्कृतिक गतितिधियों में भी बहुत रुचि रखते थे। अत: महापुरुषों की जयन्ती, सेमीनार, प्रतियोगिताएँ महाविद्यालय में हमेशा आयोजित की जाती थीं। प्रत्येक अवसर पर गीत, संगीत, नृत्य के साथ-साथ नाटक आदि के मंचन भी होते थे। कोई कार्य उनके लिए कठिन नहीं था। अनेकों बार मैंने उनको देखा कि वे अचानक कार्यक्रम आयोजन की घोषणा करते थे और सारी व्यवस्थाएं सीमित संसाधनों में हो जाती थी। बड़े-बड़े सेमीनारों के अवसर पर पूरा स्टाफ उनके साथ लगा रहता था। मुझे उनके साथ एक महाविद्यालय में कम्प्यूटर एप्लीकेश की मान्यता लेने के लिए एक बार दिल्ली जाना पड़ा। जब हम लोगों को विषय की मान्यता मिल गई, तो गुरु जी ने बहुत खुश होकर कहा कि- 'सुशीला जी, आपके प्रयास से महाविद्यालय को एक नया आयाम मिला है। यह उनकी विशेषता थी कि वे सफलता का श्रेय दूसरों को देते थे।

आज, वे हमारे बीच नहीं हैं किन्तु उनकी स्मृतियाँ हमारे मन-मस्तिष्क को आज भी प्रभावित करती हैं।

> नामुमकिन कुछ भी नही है हम वह सब कर सकते हैं जो हम सोच सकते हैं और वह सब सोच सकते हैं जो हमने कभी नहीं सोचा कि कि सब कुछ संभव है।

अध्यात्म और विश्वशान्ति

डॉ. ज्योत्स्ना त्रिपाठी
विभागाध्यक्ष, दृश्यकला विभाग

आज का युग राजनीतिप्रधान है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शान्तियोजनाओं के ऊपर विचार-विमर्श होते रहते हैं, किंतु फिर भी आज का युग शान्ति से दूर होता जा रहा है। अमेरिका और रूस दोनों स्तंभों के नीचे, पर्दे के पीछे चुपचाप युद्ध की तैयारियाँ निरन्तर चलती रहती हैं। परस्पर घृणा, द्वेष और स्वार्थ का ज्वालामुखी फटने को तैयार रहता है। ये दोनों शक्तियाँ एक ओर तो शान्ति की बातें करती हैं और दूसरी ओर युद्ध की तैयारी। वर्तमान में विश्वशान्ति की बड़ी चर्चा है, इस इसका विस्तार और प्रसार भी बहुत बढ़ा-चढ़ा है किंतु वास्तविकता तो यह है कि कोई भी अपने राजनीतिक स्वार्थ और साम्राज्यवाद के विचारों को त्यागना नहीं चाहता। प्रत्येक देश अन्दर ही अन्दर दूसरे देशों से डरता है। चुपचाप सैनिक तैयारी, युद्ध की सामग्री बनाने में व्यस्त है। विज्ञान जिसे मनुष्य के लाभ और उन्नति में सहायक होना चाहिए था, हिंसक यन्त्रों और नए-नए बमों के निर्माण में लगा हुआ है। प्रतिदिन विनाश के भयंकर से भयंकर साधन तलाशे जा रहे हैं और तनाव बढ़ रहा है।

मानवता शाश्वत है, सबमें हमारी आत्मा का अंश है, हम चाहे किसी भी देश, जाति, वर्ण या धर्म के हो सब मानव हैं, एक ही परमात्मा के अंश हैं, हमारा एक ही परिवार है। हमें सबको अपना आत्मभाव देना चाहिए। भेदभाव केवल प्रेमभाव से ही दूर हो सकता है। इसी उदार दृष्टिकोण से हम सब इस विशाल विश्व के साथ अपना अध्यात्म सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं। अध्यात्म हमें स्वार्थ के संकुचित दायरे से निकालता है। जब तक हम दूसरों पर शासन करने की बात सोचकर सत्ता हथियाने की कोशिश करते रहेंगे, तब तक शान्ति स्थापित नहीं हो सकेगी।

अध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनाने से मनुष्य में हृदय-परिवर्तन होता है। प्रतिशोध से पुनः प्रतिशोध की भावना उत्पन्न होती है और मौलिक बुराई कई गुना होकर विस्तृत हो जाती है, इसलिए युद्ध, हिंसा, दमन और क्रोध का मार्ग साधन और परिणाम दोनों दृष्टियों से असफल है।

अध्यात्म के प्रसार से विश्वबन्धुत्व की भावना प्रबल होती है। अध्यात्म-भाव हमारा दायरा विस्तृत करता है। सांसारिक दृष्टिकोण वाला व्यक्ति या राष्ट्र अपने संकुचित से दायरे में, स्वयं अपने सुख-दुःख, पाप-पुण्य, उन्नति और स्वार्थ- सिद्धि में लगा रहता है, वह अपने ही भले की सोचता रहता है। इसके विपरीत जो व्यक्ति या राष्ट्र जितने अंशों में आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनाता है, उतने ही अंशों में वह जाति, धर्म, समाज, देश और राष्ट्र की संकुचित सीमाओं से क्रमशः आगे बढ़कर समग्र विश्व और मानवता को अपनी सेवा और प्रेम का केन्द्र मानकर कर्म करता है, उसका स्थान उतना ही ऊँचा होता जाता है और आध्यात्मिक जगत् में उसका दर्जा भी उतना ही ऊँचा हो जाता है। ऐसे व्यक्ति से सदा-सर्वदा सारे मानव-समाज का हितसाधन होता है।

अपने लिए नहीं अपितु सबके हित और उन्नति के लिए सोचना चाहिए। गीता में कहा गया है–

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः॥

अर्थात् हे अर्जुन ! जो सब प्राणियों के सुख और दुःख को अपने सुख-दुःख के समान समझता है वह परम श्रेष्ठ योगी है। अध्यात्म हमें मैत्रीभाव करना सिखाता है। अध्यात्मवादी प्राणिमात्र के लिए सत्, पवित्र, प्रेममय और कल्याणकारी भाव रखता है। जब तक हमारे अन्दर क्षुद्र अहंवृत्ति रहती है, तब तक स्वार्थ, ईर्ष्या, राग, द्वेष, छल, प्रपञ्च में मन लगा रहता है। मैत्रीभाव अपनाने से इन सबका स्वतः क्षय हो जाता है। मैत्री के व्यापक प्रयोग से संसार की द्वेष, कटुता आसानी से मिटायी जा सकती है।

एक विचार के अनुसार– अध्यात्म और कुछ नहीं, मनुष्य के दृष्टिकोण को ऊँचा एवं उदार रखने की एक प्रक्रिया है। भारतीय मनोविज्ञान का योग और धर्म का आधार यही है। इसे अक्षुण्ण रखने के लिए हमारा ऋषिवर्ग अपना सारा जीवन ही उत्सर्ग कर देता था, उसका प्रयत्न यही रहता

था कि लोग निम्न-कोटि के संकुचित विचारों से दूर रहें।

आज विश्वशान्ति के लिए अनेक वाद-विवाद किए जाते हैं किंतु मानव की आन्तरिक उदारता का स्तर दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है। यदि हमें सम्पूर्ण संसार में शान्ति स्थापित करनी है तो सबसे पहले मानवमात्र के भावनाक्षेत्र को, मस्तिष्क को सही करना पड़ेगा। अध्यात्म हमें सिखाता है कि हम सब मानव एक ही परिवार के सदस्य है, स्वार्थ भावना से परे हैं, पूरी वसुन्धरा में हमारा कुटुम्ब फैला है। समष्टि की उन्नति ही सच्ची उन्नति है। भारतीय मनीषियों ने विश्वशान्ति का जो उपाय बताया है, वह इस प्रकार हैं–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥

संसार के सभी लोग (चाहे वे किसी भी देश, जाति, वर्ण या सम्प्रदाय के क्यों न हों) सुख पायें, सभी रोगरहित हो जायें, सभी कल्याण का दर्शन करें और कोई भी किसी प्रकार दुःखी न हो। इस अध्यात्म भावना को अधिक से अधिक फैलाने और सच्चे मन से व्यवहार में लाने से विश्वशान्ति की समस्या का समाधान हो सकता है।

परहित की कामना और विश्वबन्धुत्व का प्रसार करने से सारी उलझनें आसानी से सुलझ सकती हैं।

राम राज्याभिषेक

डॉ. सुमन सिंह
हिन्दी विभाग

राम राज्याभिषेक जैसा मंगलमय जयघोष हो रहा,
मंगल गीत, बधाई का स्वर, भारत में चहुओर हो रह।
युगों-युगों से श्रद्धा, भक्ति, अमिट बनी है रामलला में।
प्राण प्रतिष्ठा का क्षण आया, अद्‌भुत छवि श्री राम विराजें।
आज अयोध्या फिर संवरी है, नयी, कला संगीत संवारे।
जनमानस में बजे बधाई, राम राम श्री राम पुकारे।
हर मन में उल्लास वही है, जैसे राजा राम पधारे।
स्वर्णिम अवसर आज मिला है, जनमानस हृतकमल खिला है।
धन्य हुए सब साक्षी बनकर, आदर्शों को मिला सम्मान।
राम हमेशा जनमानस, में ऐसे ही रहें विराजमान।
राम नाम बस नाम नहीं है, स्वयं शील, गुण, दिव्य, महान
शब्दों ने आकार लिया है, तब बनते हैं राजा राम।
जय सिया राम, जय श्री राम।

जी-20 सम्मेलन एवं मेजबान भारत

डॉ. स्वप्निल पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग

भारत ने 2023 में पहली बार जी-20 की अध्यक्षता कर वैश्विक नेतृत्वकर्ता की भूमिका के रूप में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर स्थापित किया। भारत ने जी-20 की अध्यक्षता का पद संभाला और जटिल चुनौतियों से निपटने के लिये विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में चर्चा भी कर रहा है। यह प्रत्येक भारतवासियों के लिये गर्व का अवसर है। देखा जाये तो जी-20 दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का एक अन्तरर्राष्ट्रीय मंच है, जिसमें 19 देश और यूरोपीय संघ साम्मलित हैं जो वैश्विक सकल घरेलू उत्पादन का लगभग 90% और दुनिया की दो तिहाई आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस समूह का सम्मेलन प्रति वर्ष आयोजित किया जाता है, इसीलिये इस वर्ष भारत को इसकी अध्यक्षता सौंपी गयी है जिसे भारत की राजधानी नई दिल्ली में आयोजित किया गया है।

इस सम्मेलन के प्रथम दिन में ही भारत ने नई दिल्ली घोषणा पत्र पर सर्वसहमति बनाकर इतिहास रच दिया। भारत की ही पहल पर पहली बार जी-20 में अफ्रीकन यूनियन वाले 55 देशों को पूर्ण सदस्यता भी प्रदान की गयी। जी-20 के उद्देश्य के विषय में देखे तो इसका गठन सदस्य देशों के बीच अन्तरर्राष्ट्रीय नीति में सहयोग, अन्तरर्राष्ट्रीय वित्तीय संरचना में सुधार तथा वैश्विक वित्तीय संकट को टालने के उपाय के साथ ही सदस्य देशों के आर्थिक विकास तथा सतत विकसित प्रणाली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया। यदि भारत की दृष्टि से देखा जाये तो यह सम्मेलन अत्यन्त महत्वपूर्ण है, क्योंकि– भारत ने अमेरिका, मैक्सिको, कनाडा के साथ संयुक्त रूप से समझौते पर हस्ताक्षर भी किया। भारत ने इस सम्मेलन में तेल की कीमतों में स्थिरता, आतंकी आर्थिक सहायता को भी रोकने की अपील इस वैश्विक मंच से की है।

भारत ने इस जी-20 के मंच से पाकिस्तान द्वारा कश्मीर में जो आतंक फैलाया जा रहा है तथा कश्मीर को लेकर भारत के खिलाफ दुनियाँ में जो दुष्प्रचार कर रहा है। उस मुद्दे को भी दुनिया से रूबरू कराया। देखे तो इस सम्मेलन में कई वर्षों पश्चात् भारत-रूस-चीन के नेताओं के बीच वार्ता हुई जिसका उद्देश्य बहुपक्षीय व्यापार को रखा गया। जलवायु परिवर्तन, वैश्विक मंदी, आतंकवाद, रूस-युक्रेन युद्ध जैसे विषयों पर भी भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे हमारे प्रधानमंत्री मोदी ने भी चर्चा की। इस शिखर सम्मेलन का लोगो भी ऐसा प्रतीत हुआ कि पृथ्वी ग्रह को भारत के राष्ट्रीय फूल कमल के साथ जोड़ा गया है। साथ ही इसकी थीम भी वसुधैव कुटुम्बकम् जिसमें– एक पृथ्वी-एक परिवार एक भविष्य रखा गया जो भारतीय सनातन सभ्यता को प्रदर्शित करता है। नई दिल्ली के प्रगति मैदान में इसका आयोजन किया गया जिसे ने मण्डपम के नाम से संबोधित किया गया। इस सम्मेलन की सफलता का मूल्यांकन करें तो इसमें जी-20 के सदस्यों के बीच अर्थव्यवस्था को गति देने और टिकाऊ सुधार लाने हेतु निजी उद्यमशीलता पर आम सहमति भी बनी। भारत की ही पहल पर अफ्रीकन संघ को स्थायी सदस्य के रूप में सम्मिलित किया गया। भारत को मध्य पूर्व और यूरोप से जोड़ने वाले एक रेल लाइन और शिपिंग गलियारे के निर्माण के लिये एक संयुक्त समझौता किया गया जिसे भारत मध्य-यूरोप-पूर्व आर्थिक गलियारा कहा गया, जो भारत की बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है। इस सम्मेलन के माध्यम से वैश्विक मंच पर भारत महिलाओं के नेतृत्व में विकास की पहल भी की है। साथ ही साथ तकनीकी परिवर्तन तथा डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना पर भी भारत ने बल दिया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस सम्मेलन में हिस्सा लेने आये राष्ट्राध्यक्षों तथा मेहमानों का स्वागत करने के लिये जो स्थान चुना वह कोणार्क के सूर्य मंदिर से प्रभावित रहा। भारत ने कोई भी मौका इस सम्मेलन में नहीं छोड़ा जहाँ वह स्वयं को वैश्विक गुरु के रूप में स्थापित न किया हो।

जी-20 के सम्मेलन की सफलता का मूल्यांकन इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि विगत पाँच वर्षों में जितने

भी इसके सम्मेलन सम्पन्न हुए उन सबके मुकाबले यह सम्मेलन सर्वाधिक उपयोगी साबित हुआ। वैश्विक राजनीति और अर्थव्यवस्था में उथल-पुथल के बीच इस सम्मेलन ने भारत के लिये सकारात्मक रूप से प्रभाव लाया। चीन, अमेरिका, रूस, कनाडा, बिटेन आदि सभी बड़े राष्ट्रों के साथ एक मंच पर भारत ने एशिया के शक्तिशाली तथा आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में खुद को स्थापित किया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी कूटनीतिक सफलता के साथ सांस्कृतिक धरोहर को लेकर जो उन्होंने एक महत्वपूर्ण सम्मेलन आयोजित किया वह निश्चित रूप से अभ्युदय भारत के लिये सूरज की नई किरण साबित होगा। आने वाले समय में भारत के लिये यह सम्मेलन उपलब्धियाँ लेकर आयेगा। इसी विश्वास से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अगली अध्यक्षता ब्राजील को सौंपी।

एक कश्ती बीच समुन्दर में .....

आशफा परवीन
बी.एड. द्वितीय वर्ष

एक कश्ती बीच समुन्दर में
सभी लगे है उसे पाने में।
हर एक बाजीगर यहाँ
सबकी अपनी अलग अंदाज है
सबकी अपनी पहचान हैं
एक कश्ती बीच समुन्दर में
पहुँचेगा वही उस कश्ती तक
जो करेगा संघर्ष उसे पाने में
एक कश्ती बीच समुन्दर में
सभी लगे है उसे पाने में।

> समय सीमा पर काम खत्म कर लेना काफी नहीं है मैं
> समय सीमा से पहले काम खत्म होने की अपेक्षा करता हूं।

आभासी दुनिया का मकड़जाल और दिग्भ्रमित युवा

डॉ. प्रीति त्रिपाठी
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग

वर्तमान समय ऊर्जा तकनीक एवं विज्ञान का युग है। तकनीकी माध्यमों ने मानव सहयोग का बीड़ा अच्छे से उठाया हुआ है। संपर्क के साधन से लेकर संसाधन की उपलब्धता तक का यह उत्तम स्रोत बना हुआ है। यदि कोरोना काल को देखें तो उसमें इन्हीं तकनीकी और आभासी माध्यमों ने पूरे विश्व को जोड़े रखा। यद्यपि उस काल में पूरे विश्व की लगभग गति ही थम गई थी। तथापि 89 माध्यमों ने विश्व को एकता के सूत्र में जोड़े रखा और लोगों के मनोबल को किसी हद तक बनाए रखा।

कोरोना का काल ही नहीं वर्तमान समय की सभी सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं, शिक्षण संस्थाओं में आभासी माध्यम, तकनीक और विज्ञान का बहुतायत मात्रा में प्रयोग हो रहा है। यदि इसको सरल शब्दों में कहें तो इन साधनों से काम आसान हो जाते हैं, या यूं कहें कि मानव इनका आदी बनता जा रहा है। एक और तो और पूरी दुनिया इससे लाभान्वित है दूसरी ओर इसकीद अनेकों हानियां दिखाई पड़ रही है। जहां युवा इस आभासी दुनिया के मकड़जाल में उलझ कर अनेक समस्याओं में पढ़ता जा रहा है जिसमें अवसाद, धोखा, जालसाजी, शारीरिक और मानसिक शोषण आदि अनेक समस्याएं हैं।

यदि हालिया घटनाक्रम पर निगाह डालें तो श्रद्धा हत्याकांड ने पूरे समाज को झकझोर कर रख दिया जिसमें प्रेमी ने ही अपनी प्रेमिका की हत्या बहुत बर्बरता से की और उसके शरीर को 35 टुकड़ों में काट डाला। एक और घटना ने पूरे मानव समाज को झकझोर दिया और समाज का एक अमानवीय चेहरा उजागर किया जिसमे दिल्ली के शाहबाद डेयरी इलाके में 28 मई को एक ए.सी. मेकैनिक ने अपनी प्रेमिका साक्षी पर 28 बार चाकू से वार कर मार डाला। मात्र यही नहीं ऐसे अनेकों उदाहरण समाज में भरे पड़े हैं, जिनमें लड़कियां, महिलाएं अनगिनत अपराधों की शिकार होती हैं।

वर्तमान समय की सबसे बड़ी समस्या आभासी माध्यमों का दुरूपयोग है। वो कहावत है न "अति सर्वत्र वर्जयेत्।" किसी भी चीज की अति ठीक नही हैं। आज एकाकी परिवारों की संरचना वाला समाज बहुतायत में है। जहां पर युवा मन की बारीकियां, समस्याएं और उलझनों को समझने, उनपर बात करने वाले परिवार जन या तो अपने-अपने रोजगार में उलझें हैं या सबके अलग समय हैं। सीधे शब्दों में कहें तो सब अपनी सुख-सुविधाओं को जुटाने में या उनके उपभोग में इतने संलिप्त हैं कि आस-पास क्या हो रहा है इसका उन्हें आभास भी नहीं।

ऐसे में एक बड़ा संकट मंडरा रहा है युवा वर्ग पर विशेष रूप से लड़कियो पर। वो है भावनात्मक दुर्बलता का। इससे सिर्फ लड़कियां ही नही वरन् अनेक महिला-पुरुष भी इसके लपेटे में आते जा रहे हैं। ये लोग समाज के भय से इस भ्रमजाल से निकलने में स्वयं को असमर्थ पा रहे हैं।

न जाने कितनी ही सरकारी योजनाएं महिला सुरक्षा के लिए केन्द्र और राज्य स्तर पर बनाई गई है, किन्तु सही समय पर मदद तभी पहुँच सकेगी जब हम जागरूक हो पाएंगे।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम सामाजिक बने और आस-पास के वातावरण से सचेत रहें। युवा वर्ग भी आभासी दुनिया अर्थात् इंटरनेट पर अंधा विश्वास न करे। पूरी जांच पड़ताल के बाद ही किसी पर भरोसा करे। साथ ही व्यक्तिगत जानकारी बिल्कुल भी साझा न करे। अगर कोई गलती हो भी जाए तो तुरंत अपने परिवार में बात करे और आत्मबल बनाएं रखे। पर जरूरत के मुताबिक समय बिताए, साथ ही परिवार का भी पूरा प्रयास रहे कि अपने बच्चे का हर हाल में साथ दें। अपने बच्चे का आत्मबल बनाएं रखे और उसकी हर गतिविधि पर निगाह बनाए रखे तथा धैर्य से समस्या का निदान करें।

महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन व विचारधारा

शैलेन्द्र कुमार राव
असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड्.

महात्मा गांधी ने अपने जीवन के प्रति जो दृष्टिकोण बनाया, वह उनका व्यक्तिगत दर्शन न रहकर सामाजिक दर्शन में बदल गया। महात्मा गांधी के विचार व उनकी सोच को विश्व का हर व्यक्ति मानने को तैयार है क्योंकि उनकी सोच अपने प्रति न रहकर संसार के प्रति थी। इसी दृष्टिकोण ने गांधी के जीवन दर्शन को शुद्ध दर्शन के रूप में बदल दिया। आज उनकी अहिंसात्मक सोच 'अहिंसात्मक दर्शन' के रूप में सम्पूर्ण विश्व में छाया हुआ है। गांधी जी सभी वर्गों को समानता देते थे, उनका कथन था कि "एक ही लक्ष्य हैं वहां तक पहुँचने के लिये विभिन्न मार्ग के रूप में विभिन्न धर्म है।"

गांधी जी न सिर्फ एक राजनीतिज्ञ थे अपितु वे एक महान धार्मिक विश्लेषणकर्ता, समाज सुधारक, शिक्षाविद् भी थे। गांधी जी ने राजनीतिक उन्नति की अपेक्षा सामाजिक उन्नति को अधिक आवश्यक समझा। उन्होंने तत्कालीन शिक्षा में सुधार हेतु कई सुझाव दिये।

गांधी जी के अनुसार "जो शिक्षा चित्त की शुद्धि न कर निर्वाह का साधन न बनाये तथा स्वतन्त्र रहने का हौसला और सामर्थ्य न उपजाए उस शिक्षा में चाहे जितनी जानकारी का खजाना हो, तार्किक कुशलता और भाषा पांडित्य समाहित हो वह सच्ची शिक्षा नहीं।"

शिक्षा का अर्थ :

गांधी जी के अनुसार 'साक्षरता शिक्षा नहीं है'। उनका मत था, कि "साक्षरता न तो शिक्षा का अन्त है और न आरम्भ, यह केवल एक साधन है जिसके द्वारा स्त्री तथा पुरुष को शिक्षित किया जा सकता है।" उनका विश्वास था कि शिक्षा के माध्यम से बालक की समस्त शक्तियों का विकास करना चाहिये जिससे वह पूर्ण मानव बन जाये। पूर्ण मानव का अर्थ बालक में व्यक्तित्व के चारों तत्वों-शरीर, हृदय, मन तथा आत्मा के समुचित विकास से है। गांधी जी के अनुसार "शिक्षा से मेरा तात्पर्य है– बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में पाये जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का चहुँमुखी विकास।"

शिक्षा के उद्देश्य

गांधी जी के शिक्षा का मुख्य उद्देश्य स्वावलम्बन व आत्मनिर्भरता था। प्राचीन भारतीय दर्शन की भाँति 'सा विद्या या विमुक्तये' गांधी जी का आदर्श था। गांधी जी के अनुसार मानव जीवन का परम उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति है। उन्होंने मोक्ष को वृहद रूप में लिया है। उन्होंने आध्यात्मिक मुक्ति से पहले भौतिक, मानसिक, आर्थिक व राजनीतिक मुक्ति की बात कही, उनका तर्क था कि जब तक मनुष्य शारीरिक व भौतिक कमजोरी, मानसिक दबाव, आर्थिक कमी तथा राजनैतिक दासता से मुक्त नहीं हो जाता, वह आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता, यही वह कारण है जिसके लिये वे मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क व आत्मा के उच्चतम विकास को प्रभावित करना चाहते थे।

गांधी जी ने शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्यों को महत्वपूर्ण माना है:

१. **शारीरिक विकास :** मनुष्य जीवन का कोई भी उद्देश्य क्यों न हो उसकी प्राप्ति तभी सम्भव है जब शरीर स्वस्थ हो। अत: शारीरिक स्वास्थ्य विकास सबसे पहले होना चाहिए।

२. **मानसिक एवं बौद्धिक विकास :** गांधी जी के अनुसार शरीर के साथ-साथ मन तथा आत्मा का विकास भी आवश्यक है। शिक्षा के द्वारा बालक का मानसिक विकास होना चाहिए।

३. **जीविकोपार्जन का उद्देश्य :** गांधी जी शिक्षा से आत्मनिर्भरता के सिद्धान्त के प्रबल समर्थक थे। वे चाहते थे कि प्रत्येक बालक नियमित शिक्षा प्राप्त करे तथ किसी व्यवसाय के द्वारा अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं कर सके। आर्थिक अभाव से मुक्त होने के उद्देश्य पर बल दिया।

४. **वैयक्तिक एवं सामाजिक विकास :** गांधी जी ने मनुष्य के दोनों प्रकार के विकास पर बल दिया, वैयक्तिक विकास एवं सामाजिक विकास। गांधी जी वैयक्तिक विकास को व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सभी के विकास के लिये आवश्यक मानते थे। इनके अनुसार वैयक्तिक विकास ही आध्यात्मिक विकास है और आध्यात्मिक विकास के लिये सामाजिक विकास आवश्यक है। सामाजिक विकास से उनका तात्पर्य था प्रेम एवं सहयोग से जीना सीखना।

५. **सांस्कृतिक विकास :** गांधी जी के अनुसार संस्कृति आत्मा से सम्बन्धित है और वह स्वयं को मनुष्य के व्यवहार में परिलक्षित करती है। उन्होंने संस्कृति को जीवन का आधार माना है। उन्होंने मनुष्य के व्यवहार को नियंत्रित करने के लिये सांस्कृतिक विकास को महत्वपूर्ण माना है, अतः इसे शिक्षा का उद्देश्य मानते हुये कहा है कि "मैं शिक्षा के सांस्कृतिक पक्ष को उसके साहित्यिक पक्ष से अधिक महत्वपूर्ण समझता हूँ। अतः मानव के प्रत्येक व्यवहार पर संस्कृति की छाप होना चाहिये।"

६. **नैतिक तथा चारित्रिक विकास :** गांधी जी समस्त शिक्षा को चरित्र निर्माण की कसौटी पर कसते है, उनका मानना है कि शिक्षा का एक उद्देश्य चरित्र निर्माण भी है। उन्होंने बच्चों में सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह आदि गुणों के विकास को महत्व दिया है। उन्होंने लिखा है कि– "मैंने सदैव हृदय की संस्कृति अथवा चरित्र निर्माण को प्रथम स्थान दिया है उनके अनुसार सभी ज्ञान का अन्त वैयक्तिक शुद्धि एवं चरित्र निर्माण है।"

७. **आध्यत्मिक विकास :** गांधी जी के अनुसार मानव जीवन का अन्तिम उद्देश्य मुक्ति, आत्मबोध, स्वयं का ज्ञान है। उनके अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जो मनुष्य को सांसारिक बन्धनों से मुक्त करे, उसकी आत्मा को उत्तम जीवन की ओर प्रवृत्त करे सके।

शिक्षक, शिक्षार्थी एवं विद्यालय

शिक्षक : गांधी जी का दृष्टिकोण शिक्षक के प्रति आदर्शवादी था। उनका मानना था कि शिक्षक के व्यक्तित्व का प्रत्यक्ष प्रभाव बालकों पर पड़ता है। अतः शिक्षा के लिये आदर्श शिक्षक वही है जिसमें प्रेम, सहयोग, सत्य, न्याय, सहानुभूति, कर्तव्य परायणता तथा उत्तम चरित्र आदि का भाव विद्यमान हो। गांधी जी कहते है कि अध्यापक को चाहिये कि वे विद्यार्थियों को भेद ज्ञान करायें यदि ऐसा वे नहीं करते है तो हमारी शिक्षा मशीनो की भांति ही रह जायेगी। शिक्षक के विषय में वे आगे कहते है कि "शिक्षक जो भी शिक्षा विद्यार्थियों को दे रहा है उसे पहले अपने जीवन में उतारना चाहिये। उसी के अनुरूप आचरण व्यवहार करना चाहिये। मुझे उस शिक्षा से अपार कष्ट होता है जो वाणी से कुछ कहता है और मन में कुछ अन्य रखता है।"

शिक्षार्थी : गांधी जी का मानना था कि बालक के विकास में उसके परिवार का महान योगदान होता है, विद्यार्थी के प्रति उनकी मान्यता वैदिक काल की है अर्थात शिक्षार्थी को विनयशील ब्रह्मचारी, चरित्रवान, आचरणशील, जिज्ञासु, उत्साही तथा आत्मबल रखने वाला होना चाहिये। इसके साथ-साथ शिक्षार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिये गांधी जी ने प्रारम्भ से ही उनके शारीरिक, मानिसक और बौद्धिक विकास पर बल दिया है। गांधी जी का कथन था कि "शिक्षार्थी विहीन शिक्षा किसी काम की नहीं है।"

विद्यालय : विद्यालय के विषय में गांधी जी का विचार था कि वे सामुदायिक केन्द्र व सामाजिक जीवन स्थल हैं यही स्थल बालाकों का स्वांगीण विकास करता है। पटेल ने अपने शब्दों में गांधी जी के विचारों को व्यक्त करते हुए लिखा है कि "वे यह चाहते थे कि हम विद्यालयों को समुदाय में बदल दें, जहाँ पर बालकों की वैयक्तिकता समाप्त न हो और सामाजिक सम्बन्ध तथा सेवा का अवसर मिल सके।"

गांधी जी का विद्यालय हस्तकला कौशल पर आधारित है जहाँ पर बालक अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करते हुये शरीर, मन, आत्मा का विकास करता है। 'गांधी महाविद्यालय' जूहू गांधी जी के कल्पना का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इसके अतिरिक्त उन्होंने सहशिक्षा, स्त्री शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, यौन शिक्षा, धार्मिक शिक्षा आदि पर भी बल दिया है ।

बेसिक शिक्षा/बुनियादी शिक्षा :

भारतीय शिक्षा को गांधी जी की सबसे बड़ी देन बेसिक शिक्षा प्रणाली अथवा बुनियादी शिक्षा है जिसके

माध्यम से उन्होंने अपने शिक्षा विषयक विचारों को देश के सम्मुख लाने का प्रयास किया। इसमें संदेह नहीं है कि इस प्रणाली में निहित लक्ष्य देश की आवश्यकताओं के अनुरूप थे ओर इसमें प्रचलित पाठ्यक्रम की त्रुटियों पर सुधार की भी व्यवस्था की गयी थी। किन्तु अनेक ऐसे कारण आये जिससे बुनियादी शिक्षा बहुत व्यापक नहीं हो सकी।

स्वरूप :

1. अंग्रेजी का शिक्षण तब तक नहीं चलेगा जब तक विद्यार्थी अपना सप्तवर्षीय अध्ययन समाप्त न कर ले।
2. सात वर्ष तक अर्थात् 7 से 14 वर्ष के बालकों को नि:शुल्क शिक्षा दी जाय।
3. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो।
4. हस्तशिल्प के माध्यम से शिक्षा दी जाये।
5. शिक्षा आत्मनिर्भर हो। छात्रों द्वारा उत्पादित वस्तुओं को बेचने से कम से कम अध्यापकों का वेतन निर्गत हो सके।
6. अध्यापकों का प्रशिक्षण एक वर्ष का हो। यदि सम्भव हो तो ग्रामीण व नगरीय अध्यापकों का प्रशिक्षण एक साथ हो।
7. अध्यापकों को इतना वेतन मिले कि उनकी जीविका चल सके।

उद्देश्य :

1. सुयोग्य नागरिक बनाना।
2. आर्थिक दृष्टि से व्यक्ति को स्वावलम्बी बनाना।
3. व्यक्ति का बौद्धिक, आध्यात्मिक एवं शारीरिक विकास करना।
4. व्यक्ति में राष्ट्रीय तथा अनतर्राष्ट्रीय बोध का ज्ञान उत्पन्न करना।
5. व्यक्ति में समाज के प्रति सदभावना उत्पन्न करना।

इतिहास की वीरांगना रानी लक्ष्मी बाई

सुजाता गौतम
बी.ए. द्वितीय वर्ष

वर्तमान जैसे तैसे कटता सभी का.....।
किंतु व्यापक भविष्य की कहानी होनी चाहिए।।
मर कर एक रोज जाना सबको पड़ेगा.....।
मरने के बाद भी निशानी होनी चाहिए।।
असुरों की धारा के समक्ष घुटने ना टेके.....।
हिंद वाली बेटी स्वाभिमानी होनी चाहिए।।
वक्त आने पर वैरिओं का वक्ष चीर डालें.....।
रानी लक्ष्मी बाई जैसी मरदानी होनी चाहिए।।
रण बीच अकेली डटी रही.....।
साहस के तब पौबारे थे।।
दुश्मन से बाजी जीत गए.....।
पर हम अपनों से हारे थे।।
हर कोना भरा वीरता से.....।
इस भारत की अंगनाई का।।
बलिदान रहेगा सदा मरदानी लक्ष्मीबाई का।।

मोटे अनाज में छिपा है सेहत का राज

डॉ. सरिका जायसवाल व डॉ. अनिता सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, गृह विज्ञान विभाग

अगर आपको स्वस्थ रहना है तो अपनी थाली में शामिल करें मोटा अनाज

मोटा अनाज हमारी सेहत को तो स्वस्थ रखता ही है साथ ही यह कम कीमत पर मिलने वाला तथा सबकी पहुँच के भीतर है। पहले के लोग बीमार कम पड़ते थे क्योंकि उनका खान-पान यही मोटा अनाज था। पर धीरे-धीरे यह मोटा अनाज हमारी थाली से गायब होने लगा और लोग बीमार ज्यादा पड़ने लगे। अब लोग अपनी थाली में गेहूँ, चावल, मैदा इत्यादि अनाज शामिल करके अपना पेट तो भरते हैं और यह उन्हें स्वादिष्ट भी बहुत लगता है परन्तु यह हमारे स्वास्थ के दृष्टिकोण से उचित नहीं है। अत: इसी को ध्यान में रखते हुए इस साल संयुक्त राष्ट्र ने 2023 को "International Year of Millets" कहा है। इसका मुख्य उद्देश्य है कि विभिन्न देशों में मोटे अनाजों की खेती कर विभिन्न प्रकार के जागरूकता कार्यकम चलाये जाये जिससे कि हर व्यक्ति की थाली में मोटा अनाज सम्मिलित हो सके।

हमारे देश में मोटापा एक बहुत गम्भीर समस्या है। अत: मोटे अनाज, जिसे सुपर फूड भी कहा गया है, का उपयोग करके मोटापे को कम कर सकते है और व्यक्ति को स्वस्थ रखा जा सकता है। मोटे अनाज पोषक तत्त्वों के भण्डार हैं। उनमें कैल्शियम, जिंक, मैग्निशियम, फॉस्फोरस, कॉपर, विटामिन, आयरन, कार्बोहाइड्रेट, एंटीआक्सिडेंट और पोषक गुणों वाले वनस्पति रसायन प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। यह ग्लूटेन मुक्त होने के कारण पेट के रोगियों के लिए अच्छे माने जाते हैं। मोटे अनाज हृदय रोग, डाइबिटीज और कई किस्म के कैंसर जैसी जीवन शैली से जुड़ी बिमारियों में फायदेमंद सिद्ध हो सकते हैं।

मोटे अनाज में मुख्य रूप से शामिल हैं– ज्वार, बाजरा, रागी और कुट्टू। यदि हम थाली में इन अनाजों को शामिल कर लें तो निम्न बीमारियों से बच सकते हैं–

१. बाजरा

- हृदय की बिमारी को कम करता है।
- ब्लड शुगर को घटाता है।
- खाना पचाता है।
- त्वचा की झुर्रियों को कम करके चेहरे पर चमक लाता है।

२. ज्वार

- पाचन सम्बन्धी समस्याओं को कम करता है।
- बालों को झड़ने से रोकता है।
- वजन कम करता है।
- कैंसर को रोकने में मदद करता है।
- उच्च रक्चाप, हृदयरोग, स्ट्रोक, मधुमेह को कम करता है।
- सीलिएक रोग में इसे खाया जाता है।

३. रागी

- वजन कम करता है।
- पाचन सम्बन्धी समस्याओं को कम करता है।
- एनीमिया से बचाता है।
- एंटीएजिंग का काम करता है।
- दिमाग को शांत रखता है।
- डायबिटीज को नियंत्रि रखता है।

४. कुटू

- वजन कम करता है।
- डायबिटीज को नियंत्रित रखता है।
- स्तन कैंसर के जोखिम को कम करता है।
- पित्त की पथरी को रोकने में लाभकारी है।
- अस्थमा के जोखिम को कम करता है।
- मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।
- कब्ज की समस्या दूर करता है।
- हड्डियों को मजबूत बनाता है।

वर्तमान समय में घरानों का महत्व

डॉ. निशा श्रीवास्तव
विभागाध्यक्ष, मंचकला विभाग

घराना गायन-वादन की एक विशिष्ट शैली है। संगीत का साधन मानवी आवाज है, जो रूप की भाँति भिन्न-भिन्न है। यही आवाज जब योग्य गुरु द्वारा संस्कारित की जाती है एवं योग्य शिष्य गहन रियाज गूँज लालित्य, रियाज स्निग्धता लाकर आवाज को संस्कारित करता है और यही आवाज जब मिन्न-भिन्न अलंकारों द्वारा स्वर बन जाती है। तब वहीं से घरानों का अविर्भाव होता है। घर शब्द का अर्थ वंश ओर घराना शब्द का अर्थ वंश वैशिष्ट कहना भूल न होगी, किसी संगीतज्ञ द्वारा अपनी प्रतिमा के बल पर किसी नवीन पद्धति का प्रयोग और उसी पद्धति को उनके शिष्यों के द्वारा प्रचार से एक घराना बनता है। घराना शब्द का व्यवहारगत अर्थ है रीति पद्धति या style धुपद्रीय राग संगीत के उत्पति से निकलकर आज तक का संगीत विभिन्न घरानों के माध्यम से विभिन्न प्रकार के उत्कर्ष को प्राप्त हुआ है और इसी विभिन्नता के कारण संगीत की व्यापकता काफी प्रमाण में बढ़ी है। कलाओं में परिपक्वता आती है तो वही परिपक्वता विशिष्ट शैलियों को जन्म देती है, भारतीय संगीत में ऐसी शैलियों ने घराने का रूप प्राप्त किया है।

संगीत के क्षेत्र में संगीत ज्ञाता जिसे हम गुरु कहते है उसके अपनी प्रतिमा के बल पर एक गायन शैली को जन्म दिया और उस क्षेत्र में परिपक्वता प्राप्त की फिर गुरु शिष्य परम्परा के आधार पर उस शैली का विकास हुआ और उस शैली की सुव्यवस्थित परम्परा और पृथक सत्ता कई पीढ़ियों तक पनपी और उसे घरानों की संख्या से अविभूत किया गया जो गायन या वादन शैली है वही वस्तुत: घरानों का प्राणतत्व होती है जब उसमें मौलिकता हो अनोखे रूप सौदर्य का निर्माण हो तो गायकों की कम से कम तीन या चार पीढ़ियों के बाद घरानों का जन्म हो सकता है।

यदि घरानों के उद्‌भव के पूर्व की स्थिति पर विचार करें तो हम देखते है कि मुसलमानों के शासन के पश्चात् शुद्ध रूप में हिन्दू कहलाने वाली सभी भारतीय कलाओं पर यवन संस्कृति का प्रभाव पड़ना आरम्भ हो गया अकबर युग में जिस तरह धूप की चार बाणिया प्रसिद्ध थी उसी तरह इन्ही व्यवसायी कलाकारों के कारण मुगल बादशाह, मोहम्मद शाह के पश्चात् तबला पखावज तथा खयाल गायकी के घरानों की नींव पड़ने लगी जो मुगल युग के बाद अधिक समृद्ध एवं विस्तृत हुई। घरानों के संरक्षण और विकास के पीछे वास्तव में उन राजाओं नवाबों का योगदान अमूल्य है। मैहर स्टेट के दरबारी कलाकार उस्ताद अलाउद्दीन खाँ ने सर्वश्री अली अकबर खाँ, रविशंकर, निखिल बनर्जी, पन्नालाल घोष जैसे समर्थ कलाकारों को शिक्षा दी जिसके फलस्वरूप आज पूरे विश्व में भारतीय संगीत का मस्तिष्क ऊँचा हुआ है। घरानों ने ही हमारी संगीतिक संस्कृति की रक्षा की है और कला के रक्षक का उत्तरदायित्व निभाया है। वर्तमान समय में संगीत विद्यालय शिक्षण संस्थाओं में संगीत एक विषय के रूप में आ जाने से घरानों का उतना जोर नहीं रह गया है। संगीत विद्यालयों की स्थापना, सभाओं का आयोजन प्राचीन रचनाओं का संकलन, वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग स्वरलिपि पद्धति का निर्माण, पाठ्यक्रम के निर्धारण आदि में संगीत के विकास की ओर ध्यान दिया जा रहा है, घरानेदार गायकी वर्तमान समय में टूटने लगी है, आज का प्रबुद्ध कलाकार घरानेदार होते हुए भी इतनी समझ रखने लगा है कि एक घराने में तालीम लेना अच्छी बात है या नहीं।

घरानों का विलीनीकरण आज से नहीं कई वर्षो से शुरू हुआ है। जमीदारी खत्म होने पर कलाकारों को बहुत मुश्किल का सामना करना पड़ा, भिन्न-भिन्न प्रकार के श्रोताओं को संतुष्ट करने के लिये कई कलाकार अपनी शैली में ही निबद्ध नहीं रहे, इन्होने घरानों की विशेषताओं को भी अपना लिया, इसके अतिरिक्त आज भी शिक्षा पद्धति में विद्यालयों में विभिन्न शैलियों के शिक्षक होते है, अत: कोई एक शैली जड़ नहीं पकड़ पाती है।

आज वर्तमान युग में सरगम जिसका प्रचार चालीस साल पहले नहीं था आज भी नई शैली में काफी दिखता है।

वर्तमान समय में घरानेदार परम्परा के अभाव में आज

कई कमियाँ दृष्टिगोचर होती है। बहुत सी सूक्ष्म बाते जैसे स्वरों की सच्चाई या ठीक मूर्ति आदि गुरु शिष्य परम्परा की शिक्षा से ही उपलब्ध हो सकती है किसी और उपाय से नहीं। स्वर लिपि से गाना सीखना अवश्य आ जाता है परन्तु श्रुर्ति ज्ञान नहीं हो सकता। कौन नहीं जानता कि जौनपुरी दरबारी आसावरी तोड़ी, मुल्तानी, अलग-अलग गन्धार लगते है। पूर्वी की ओर भैरव में अलग-अलग ऋषभ लगते है। ये सूक्ष्म बातें गुरु शिष्य परम्परा की शिक्षा से ही उपलब्ध हो सकती है।

वर्तमान समय में घरानों की तोड़-फोड़ रेडियो, रिकार्डिंग, टेप, फिल्म फेस्टिबल इन सब बातों का प्रभाव शास्त्रीय संगीत के भविष्य के लिये अच्छा नहीं है। आज आवश्यकता इस बात की है कि घरानेदार शिक्षा प्रणाली व विद्यालयी शिक्षा प्रणाली का किसी प्रकार का समन्वय हो और घरानेदार गायकी के गुणों को आज का विद्यार्थी ग्रहण करे। आधुनिक वर्तमान संगीत जो परम्परागत और घरानेदार संगीत की उपेक्षा करता है, हमारे संगीत की पैतृक सम्पत्ति सुरक्षित नहीं रख सकता।

वर्तमान युग में हिन्दुस्तानी संगीत की निश्चय ही उपत्ति हुई है, उसकी शिक्षा प्राप्त करने वालो की संख्या बहुत बढ़ गई है और हजारों की संख्या में राग रागनियों को सीखने लगे है जो विद्या पहले पेशेवर उस्तद गुरुओं के पास थी उसकी जानकारी अब आम जनता को होने लगी है।

आज किसी विद्यार्थी को संगीत सीखने के लिए गुरु के घर रहकर उनकी सेवा करना आवश्यक नहीं, आज अलग-अलग घरानों की विद्या एक ही मंच पर सुनने को मिल जाती है, परन्तु वर्तमान समय में घरानों के अभाव में संगीत का स्वर धीरे-धीरे गिर रहा है। आज का विद्यार्थी जीविकोपार्जन की भाग दौड़ के कारण 10 घण्टे अभ्यास करने में असमर्थ है, संगीत विद्यालयों में एक साथ दस-बीस विद्यार्थियों को गुरु न तो सच्ची तालीम दे सकता है और न ही शिष्य ग्रहण कर सकता है, ऐसे में पुस्तक पढ़कर कलाकार बनना कठिन है। पुराने जमाने में शिष्य गुरु के घर रहकर वर्षों पर्यन्त तालीम लिया करते थे, उन दिनों कलाकारों को राज्य दरबारों में आश्रय मिला करता था अत: अधिक जिम्मेदारियो से मुक्त रहकर वे विद्यादान और अभ्यास में पूरा ध्यान लगा सकते थे।

वर्तमान समय में घरानेदार गायकी के अभाव में क्या हम आधुनिक शिक्षा पद्धति से उच्चकोटि के कलाकार पैदा कर सकते है- शायद कभी नहीं।

वर्तमान समय में घरानों की तोड़फोड़ रेड़ियो आदि का प्रभाव शास्त्रीय संगीत के विकास में सहायक नहीं है।

जिस युग में वैज्ञानिक उपकरण रेडियो टेलीविजन रिकार्डर टेपरिकार्डर या पुस्तक जैसी कोई सुविधा नहीं थी उस युग में श्रेष्ठ से श्रेष्ठ कलाकार घरानों के कारण उत्पन्न हुए जो संगीत के विद्वान हुए और उसी मुक्तकण्ठ संगीत के माध्यम में उन्होंने अनेक उच्चकोटि के शिष्य आये। जब शिष्य गुरु के व्यक्तिगत सानिध्य में रहेगा तथा गुरु तथा शिष्य के बीच स्नेह एक श्रृद्धा का नाता भी बना रह सकेगा जो संगीत शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग है।

जब रास्तों पर चलते चलते मंजिल का ख्याल ना आये
तो आप सही रास्ते पर हैं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) वरदान है या अभिशाप

अंजली शुक्ला
असिस्टेंट प्रोफेसर, कम्प्यूटर विभाग

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कंप्यूटर द्वारा नियंत्रित रोबोट या फिर मनुष्य की तरह इंटेलिजेंस तरीके से सोचने वाला सॉफ्टवेयर बनाने का एक तरीका है। यह इसके बारे में अध्ययन करता है कि मानव मस्तिष्क कैसे सोचता है और समस्या को हल करते समय कैसे सीखता है, कैसे निर्णय लेता है और कैसे काम करता। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जनक जॉन मैकार्थी के अनुसार यह बुद्धिमान मशीनों, विशेष रूप से बुद्धिमान कंप्यूटर प्रोग्राम को बनाने का विज्ञान और अभियांत्रिकी है अर्थात यह मशीनों द्वारा प्रदर्शित किया गया इंटेलिजेंस है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की शुरुआत 1950 के दशक में हुई थी। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का अर्थ है बनावटी (कृत्रिम) तरीके से विकसित की गई बौद्धिक क्षमता। इसके ज़रिये कंप्यूटर सिस्टम या रोबोटिक सिस्टम तैयार किया जाता है, जिसे उन्हीं तर्कों के आधार पर चलाने का प्रयास किया जाता है जिसके आधार पर मानव मस्तिष्क काम करता है।

इसकी महत्ता को 1970 के दशक में पहचान मिली। जापान ने सबसे पहले इस ओर पहल की और 1981 में फिफ्थ जनरेशन नामक योजना की शुरुआत की थी। इसमें सुपर कंप्यूटर के विकास के लिये 10-वर्षीय कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की गई थी।

सरकार दे रही बढ़ावा-

राष्ट्रीय स्तर पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कार्यक्रम की रूपरेखा बनाने के लिये नीति आयोग के उपाध्यक्ष राजीव कुमार की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया है। इसमें सरकार के प्रतिनिधियों के अलावा शिक्षाविदों तथा उद्योग जगत को भी प्रतिनिधित्व दिया जाएगा।

वर्तमान बजट में सरकार ने फिफ्थ जनरेशन टेक्नोलॉजी स्टार्ट अप के लिये 480 मिलियन डॉलर का प्रावधान किया है, जिसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग इंटरनेट ऑफ थिंग्स, 3-डी प्रिंटिंग और ब्लॉक चेन शामिल है।

इसके अलावा सरकार आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स, डिजिटल मैन्युफैक्चरिंग, बिग डाटा इंटेलिजेंस, रियल टाइम डाटा और क्वांटम कम्युनिकेशन के क्षेत्र में शोध, प्रशिक्षण, मानव संसाधन और कौशल विकास को बढ़ावा देने की योजना बना रही है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर ७-सूत्री रणनीति -

इससे पहले पिछले वर्ष अक्टूबर में केंद्र सरकार ने 7-सूत्री रणनीति तैयार की थी, जो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल करने के लिये भारत की सामरिक योजना का आधार तैयार करेगी। इनमें प्रमुख हैं:

- मानव मशीन की बातचीत के लिये विकासशील विधियाँ बनाना।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और R&D के साथ एक सक्षम कार्यबल का निर्माण करना।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सिस्टम की सुरक्षा सुनिश्चित करना।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के नैतिक, कानूनी और सामाजिक निहितार्थों को समझना तथा उन पर काम करना।

भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की संभावनाएँ

आर्टिफिशियल इंटेलिजेस भारत में शैशवावस्था में है और देश में कई ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें इसे लेकर प्रयोग किये जा सकते हैं। देश के विकास में इसकी संभावनाओं को देखते हुए उद्योग जगत ने सरकार को सुझाव दिया है कि वह उन क्षेत्रों की पहचान करे जहाँ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल लाभकारी हो सकता है।

सरकार भी चाहती है कि शासन के लिहाज़ से देश में जहां संभव हो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल किया जाए। सरकार ने उद्योग जगत से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के इस्तेमाल के लिये एक मॉडल बनाने में सहयोग करने की अपील की है। उद्योग जगत ने सरकार से इसके लिये कुछ

बिंदुओं पर फोकस करने को कहा है–

1. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के लिये देश में एक अथॉरिटी बने जो इसके नियम–कायदे तय करे और पूरे क्षेत्र की निगरानी करे।
2. सरकार उन क्षेत्रों की पहचान करे जहाँ प्राथमिकता के आधार पर इसका इस्तेमाल किया जा सकता है।
3. ऊर्जा, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, कृषि आदि इसके लिये उपयुक्त क्षेत्र हो सकते हैं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रमुख अनुप्रयोग –

कंप्यूटर गेम, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण, दृष्टि प्रणाली, वाक् पहचान, रोबोट

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रकार –

पूर्णत: प्रतिक्रियात्मक, सीमित स्मृति, मस्तिष्क सिद्धांत, आत्म–चेतन

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सावधानी –

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से हमारे रहने और कार्य करने के तरीकों में व्यापक बदलाव आएगा।

रोबोटिक्स और वर्चुअल रियलिटी जैसी तकनीकों से उत्पादन और निर्माण के तरीकों में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिलेगा। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के एक अध्ययन में बताया गया है कि केवल अमेरिका में अगले दो दशकों में डेढ़ लाख रोज़गार खत्म हो जाएंगे। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस युक्त मशीनों से जितने फायदे हैं, उतने ही खतरे भी हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि सोचने–समझने वाले रोबोट अगर किसी कारण या परिस्थिति में मनुष्य को अपना दुश्मन मानने लगे, तो मानवता के लिये खतरा पैदा हो सकता है।

निष्कर्ष :

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस विगत कई दशकों से चर्चा के केंद्र में रहा एक ज्वलंत विषय है। वैज्ञानिक इसके अच्छे और बुरे परिणामों को लेकर समय–समय पर विचार–विमर्श करते रहते हैं। आज दुनिया तकनीक के माध्यम से तेजी से बदल रही है। विकास को गति देने और लोगों को बेहतर सुख–सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिये प्रत्येक क्षेत्र में अत्याधुनिक तकनीक का भरपूर उपयोग किया जा रहा है। बढ़ते औद्योगीकरण, शहरीकरण और भूमंडलीकरण ने जहाँ विकास की गति को तेज़ किया है, वहीं इसने कई नई समस्याओं को भी जन्म दिया है, जिनका समाधान करने के लिये नित नए समाधान सामने आते रहते हैं। जहाँ वैज्ञानिक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के अनेकानेक लाभ गिनाते हैं, वहीं वे यह भी मानते हैं कि इसके आने से सबसे बड़ा नुकसान मनुष्यों को ही होगा, क्योंकि उनका काम मशीनों से लिया जाएगा, जो स्वयं ही निर्णय लेने लगेंगी और उन पर नियंत्रण नहीं किया गया, तो वे मानव सभ्यता के लिये हानिकारक हो सकते हैं। ऐसे में इनके इस्तेमाल से पहले लाभ और हानि दोनों को संतुलित करने की आवश्यकता होगी।

> अगर ख्वाईश कुछ अलग करने की है तो
> दिल और दिमाग के बीच बगावत लाजमी है।

शिक्षा में आईओटी (IoT) का प्रभाव और वर्तमान स्थिति

शंकर थापा
अस्सिटेंट प्रोफेसर, कम्प्यूटर विभाग

प्रस्तावना :

आधुनिक तकनीकी युग में, आईओटी (इंटरनेट ऑफ़ थिंग्स) ने अपना प्रभाव शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ा दिया है। यह नई तकनीकी यात्रा, शिक्षा को विश्वसनीय, व्यापक और समृद्धि की दिशा में मोड़ने में सहायक हो रही है। इस लेख में, हम शिक्षा में आईओटी के प्रभाव पर विचार करेंगे।

छात्रों को शिक्षित बनाने में मदद :

आईओटी का प्रथम लाभ यह है कि यह छात्रों को अधिक समृद्धिपूर्ण बनाने में सहायक होता है। स्मार्ट कक्षा, जिसमें शिक्षक और छात्र इंटरनेट के माध्यम से जुड़े रह सकते हैं, उन्हें विद्या में रुचि बढ़ाने में मदद करती है। इसके अलावा, शैक्षिक एप्लीकेशन्स और ऑनलाइन सामग्री छात्रों को सर्वोत्तम शिक्षा प्रदान करने में मदद कर सकती हैं।

शिक्षा प्रणालियों में सुधार :

आईओटी ने शिक्षा प्रणालियों को भी सुधारित किया है। स्मार्ट बोर्ड, इंटेलीजेंट टेस्टिंग सिस्टम्स और डेटा एनालिटिक्स के माध्यम से शिक्षा प्रणालियाँ छात्रों की प्रगति को समझने में और उन्हें विशेष ध्यान देने में सहायक होती हैं। यह शिक्षा को पर्सनलाइज करने में भी सहायक है, जिससे हर छात्र को अपनी गतिविधियों को समझने में मदद मिलती है और उसकी शिक्षा समृद्ध होती है।

शिक्षकों को सहारा :

आईओटी शिक्षकों के लिए भी सहायक है। इंटेलीजेंट सिस्टम्स और एप्लीकेशन्स शिक्षकों को शिक्षा सामग्री को अनुकूलित करने और प्रदर्शन करने में मदद कर सकते हैं। वे छात्रों की प्रगति को ट्रैक कर सकते हैं और उन्हें विशेष ध्यान देने का योजना बना सकते हैं।

चुनौतियां और सावधानियां :

हालांकि आईओटी ने शिक्षा में सुधार किया है, इसका सही और सुरक्षित उपयोग करना महत्वपूर्ण है। गोपनीयता, सुरक्षा, और शैक्षिक उद्दीपन की सुरक्षा पर ध्यान देना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रभाव:

छात्रों को सुविधा: आईओटी ने छात्रों को नए और अनुकूलित शिक्षा साधनों का अधिक सुखद उपयोग करने का सुविधाजनक सामर्थ्य प्रदान किया है। इंटरैक्टिव स्मार्ट बोर्ड, ऑनलाइन सामग्री और एप्लीकेशन्स के माध्यम से, छात्रों को सुविधा हो रही है और वे अपनी पढ़ाई को और भी रूचिकर बना रहे हैं।

निष्कर्ष:

आईओटी शिक्षा को नई दिशा देने में सहायक होता है, परंतु इसका सही और सुरक्षित उपयोग करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह शिक्षा को विश्वसनीय, उपयुक्त और सर्वोत्तम बनाने में मदद कर सकता है और छात्रों को एक बेहतर भविष्य की दिशा में मोड़ने में मदद कर सकता है।

> जिस काम में काम करने की हद पार ना
> फिर वो काम किसी काम का नहीं।

वैश्विक आतंकवाद : स्थिति और समाधान

श्रेया द्विवेदी
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग

"वातावरण में अजीब सी दहशत है,
कि वह कौन है,
जो हमारी रगों में खून नहीं
लाख दौड़ा जाता है।"

कवि राजेन्द्र कुमार की उपरोक्त पंक्तियाँ अनायास ही दिमाग में आ जाती हैं जब भी कोई 'आतंकवाद' का जिक्र करता है।

वर्तमान समय में विश्व के समक्ष विभिन्न प्रकार के संकट उपस्थित हैं किंतु इन सबमें सर्वाधिक विकट संकट है– आतंकवाद।

राजनीतिज्ञों, समाजशास्त्रियों के बुद्धिजीवी वर्ग ने आतंकवाद के प्रसार हेतु कुछ कारणों को जिम्मेदार ठहराया है। इनमें मुख्य रूप से आर्थिक असमानता, गरीबी, पिछड़ापन आदि शामिल हैं।

1990 के दशक में सोवियत संघ के विघटनोपरांत "फ्रांसिस फुकोयामा" ने "इतिहास के अंत" की बात की तो "डेनियल बेल" ने "विचारधारा के अंत" की किंतु आगे चलकर प्रसिद्ध पाश्चात्य चिंतक "सैमुअल पी. हटिंगटन" ने कहा कि इतिहास समाप्त नहीं हुआ है बल्कि "क्लैश ऑफ सिविलाइजेशन" के रूप में आगे बढ़ेगा। ईसाई व इस्लाम धर्मों की टकराहट के रूप में भी आतंकवादी घटनाओं को विभिन्न विचारकों द्वारा देखा जाता है।

अब यदि हम आतंकवाद के रूप को देखें तो ये मुख्यत: दो प्रकार के दिखाई देते हैं– प्रथम राज्य समर्थित तथा द्वितीय राज्य विरोधी। राज्य समर्थित आतंकवाद के अंतर्गत कुछ विद्वान इजराइल जैसे देशों की नीतियों को रखते हैं। राज्य विरोधी आतंकवाद के उदाहरण में भारत के प्रथम चरण के क्रांतिकारी आतंकवाद को देख सकते हैं। पुन: एक अन्य आधार पर आतंकवाद को वर्गों में बांट सकते हैं– प्रथम में भाषायी, नृजातीय, धार्मिक आदि आधारों पर किया जाने वाला आतंकवाद हैं। दूसरे वर्ग में विचारधारात्मक आधार पर किए जाने वाले आतंकवाद को रख सकते हैं, जिसमें मार्क्सवादी, लेनिनवादी तथा माओवादी विचारधारा के आधार पर होने वाली आतंकी घटनाएं आती हैं।

इन सब परिप्रेक्ष्यों में हमारे मस्तिष्क में प्रश्न आता है कि क्या इस अमानवीय, घृणित व जघन्य घटना व कार्यवाई का कोई समाधान भी है या नहीं? वास्तविकता यह है कि किसी भी समस्या का समाधान होता ही है। क्योंकि आतंकवाद एक वृहद घटना है अत: इसका समाधान भी कई स्तरों पर करना होगा। प्रथम, विश्व के सभी देशों के बीच व सभी देशों के सभी वर्गों, जातियों, समूहों के मध्य सामाजिक न्याय व अधिकार की पहुँच बनाना। द्वितीय, "वैश्विक गाँव" की संकल्पना में विभिन्न देशों की संस्कृतियों को एक सांचे में ढ़ालने की कोशिश न की जाए। इसके लिए भारत की सामाजिक संस्कृति को उदाहरण स्वरूप सामने रख सकते है। तृतीय, यह कि गांधीवादी विचारधारा, सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता पर सम्पूर्ण विश्व बल दे। अंतिम यह कि मानवाधिकारों तथा सामाजिक व मूल्यगत लोकतंत्र को बढ़ावा दिया जाए न कि राजनीतिक लोकतंत्र की स्थापना हेतु बल प्रयोग का उपयोग किया जाए।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि आतंकवाद की संपूर्ण विवेचना के साथ यदि हम उपरोक्त समाधान को अपनाएं तो आतंकवाद, आने वाली पीढ़ियों के लिए अतीत की घटना बन जाएगी। हम आशा करते है कि वैश्विक एकजुटता के सामने, आतंकवाद नहीं ठहर सकेगा।

आधुनिक संदर्भ में श्री रामचरित मानस की प्रासंगिकता

डॉ. सारिका पाण्डेय
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, बी.एड्. विभाग

वाल्मीकि के राम महामानव है। वह अत्यंत सुंदर हैं, बलिष्ठ भी। उनकी भुजाएं लौह मुद्रर के समान हैं, बोल है नगाड़े जैसा - दुंदुभि- स्वनः। वे कभी कठिन परिस्थितियों में भी झूठ नहीं बोलते। उनका प्रेम-क्रोध शोक सभी कुछ महान है। वे अत्यंत संवेदनशील हैं। प्राणप्रिया वैदेही से बिछड़ कर वे दलदल में फंसे हाथी के समान छटपटा उठते हैं। किंतु, जनमत का सम्मान करते हुए उसी प्राण-प्रियतमा को निर्वासित कर देते हैं।

कई शताब्दियों तक राम के चरित और चरित्र का विकास होता गया। वे नरत्व से नारायणत्व की ओर अग्रसर होते गए। अध्याम-रामायण में उन्हें पूर्णतः परमात्मा मान लिया गया। बाल्मीकि रामायण के संपूर्ण चरित को अधयात्म के रंग में रंगकर प्रस्तुत किया गया। अब तक राम भक्ति का प्रबल प्रचार समस्त भारत में हो चुका था, इसका बहुत कुछ से रामानंद को जाता है।

तुलसीदास ने जिन राम का गुणगान किया वे एक और तो वाल्मीकि रामायण के राम के समान संवेदनशील मानव है तो दूसरी ओर वह अधयात्म-रामायण के राम के समान परब्रह्मा भी हैं। देखा जाए तो तुलसी के राम इन दोनों ग्रंथो के राम से भी विशिष्ट हैं। वाल्मीकि-रामायण के राम में प्रचंड आवेग है। तुलसी के राम में शील और संचय का आधिक्य है। अधयात्म-रामायण के राम ब्रह्मा हैं, केवल महाविष्णु। तुलसी के राम तो 'बिधि-हरि-संभू-नचावन-हारे' अर्थात तीनों देवताओं से ऊपर हैं। अध्यात्म-रामायण में राम के मानव रूप को कम ही उभरा गया है। तुलसी के सुंदर, सशक्त और सुशील राम ब्रह्म हैं।

वे इतने सुंदर है की जब वे धनुष पर बाण चढ़ाकर मृग पर प्रहार करने के लिए भौंहें सिकोड़कर देखते हैं तो उस समय की शोभा उमड़कर वन प्रांत को प्लावित कर देती है। मृग उनके सौंदर्य से प्रभावित होकर भागते नहीं। मृगों कि यह दशा देख राम से बाण छोड़ते नही बनता। राम इतने मधुमय आकर्षक हैं कि जब विष से भरा फन उठाकर उन्हें नागिन देखती है तो वह फुंकारना भूल जाती है, उसका दाहक विष धरती पर अनायास ही टपक जाता है। बिच्छू के तने हुए डंक से भी विष और आक्रोश दोनो ही झर पड़ते है।

जिन्हहि निरखि मग सांपिनि बीछी।
तजहिं बिषम बिशु तामस तीछी।।

वे अत्यंत विनम्र हैं, किंतु जब परशुराम उन्हें लगातार लताड़ते रहते हैं तो उनका स्वाभिमानी स्वर गूंज उठता है-

जौं रन हमहि पचारै कोऊ।
लरहिं सुखेन काल किन होऊ।।
छत्रिय तनु धरि समर सकाना।
कुल कलंकु तेहिं पावरँ आना।।
कहऊँ सुभाउ न कुलहि प्रसंसी।
कालहु डरहिं न रन रघुबंशी।।

रामशील संपन्न है। अपने संपर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति का धयान रखते हैं, किसी का दिल नहीं दुखाते। वाल्मीकि के राम कभी-कभी कैकयी के प्रति कटुता व्यक्त कर देते हैं किंतु तुलसी के राम उसके प्रति सदैव सद्भाव प्रदर्शित करते हैं, उसके मन की जग्लानि को दूर करने का प्रयास करते हैं।

उन्होंने लक्ष्मण का समर्थन किया कितुम ठीक कहते हो, सत्ता के मद् में बड़े-बड़े चूर हो जाते हैं किंतु भरत को तो यह मद हो ही नहीं सकता। राम भोले भाले वनवासियों की अटपटी बातें ऐसे चाव से सुनते हैं जैसे कि वत्सल पिता अपने शिशुओं की बातें सुनता है -

तुलसी के राम में भारतीय संस्कृति की समस्त श्रेष्ठ उपलब्धियां पूंजी भूत हो गई हैं। उनके ग्रंथ 'रामचरितमानस' वेद उपनिषद-पुराण, दर्शनशास्त्र-नीतिशास्त्र, साहित्य आदि की विशेषताओं का निचोड़ है। यह हर रोग हर समस्या के निदान का अचूक रामबाण है। वह रामबाण सर्वजन सुलभ रहा है। पठित लोग 'मानस' का पाठ किया करते हैं।

नगर-नगर और ग्राम-ग्राम में रामलीला और धनुष यज्ञ लीला होती है। तुलसी द्वारा प्रचारित राम कथा समस्त समाज की जीवन पद्धति पर छा गई। 'मानस' की सूक्तियों का वास जन-जन के कंठ में है। सुख-दुख के क्षणों में यह सूक्तियां उनके अधरों से अनायास फूट पड़ती है।

1857 में अंग्रेजों के विरुद्ध महाविद्रोह हुआ था उसे अंग्रेजों ने मुटठी भर लोगों की बगावत अथवा गदर कहकर इसका अवमूल्यन किया था। वीर सावरकर ने इसे स्वातंत्र समर कहा था। इससे भी पहले देश की जनता ने इसे राम हल्ला कहा था। इस नामकरण के पीछे प्रेरणा किसकी थी ? तुलसी के रामचरितमानस की।

'मानस' की प्राणवत्ता, जीवनी शक्ति और प्रासंगिकता की सफल परीक्षा आज से लगभग 150 वर्ष पूर्ब हो चुकी है। अंग्रेज लोग भारत के गरीब और दलित मजदूर को लोभ और धोखा देकर जहाजों में भर-भर कर मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, गुयाना, दक्षिण अफ्रीका और त्रिनिदाद ले गए थे। वहां उन पर भीषण अत्याचार किए गए। इन असहाय दुखियारों के पास एक ही संबल था - रामचरितमानस का। वह छिप-छिपकर इसे पढ़ते, सुनते रोते और प्रेरणा पाते थे। इन्हें विश्वास था कि एक दिन वह इस शक्ति पर इस प्रकार विजय होंगे जैसे की राम रावण पर हुए थे। सच में ऐसा ही हुआ।

महात्मा गांधी को 'मानस' का विजय रथ प्रसंग प्रिय था जिसे वह बड़ी-बड़ी सभाओं में सुनाया करते थे। साधन संपन्न रावण के रथ में बैठा देख विभीषण विचलित हो उठा था -

नाथ ना रथ नहि तन पद त्राना।
केहि विधि जितब् बीर बलवाना॥

राम ने कहा था- सखा जिससे विजय प्राप्त होती है वह रथ तो दूसरी ही है। शौर्य, धैर्य, सत्य, शील, बल, विवेक, संयम, परोपकार, क्षमा, दया आदि गुणों वाला अर्थात शुद्ध मनोबल और सदाचार वाला व्यक्ति भले ही साधनहीन हो वह साधन संपन्न प्रचंड शक्ति पर विजय लाभ करता ही है। अंग्रेज शक्ति संपन्न थे, तोप, टैंक, बंदूकधारी लंगोटीधारी फकीर गांधी जी थे निहत्थे। उपर्युक्त धर्म रथ के बल पर ही उन्होंने अंग्रेजों की क्रूर शक्ति पर विजय प्राप्त की थी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व लोगों के चरित्र में नैतिकता थी। इसका निर्माण तुलसी के मानस ने भी किया था। देश स्वतंत्र हुआ हमने अंग्रेजों को निकाल बाहर किया किंतु अंग्रेजीयत को गले लगा लिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात मानों पूरा राष्ट्र लक्ष्यहीन हो गया। व्यक्तिगत स्वार्थ उभरे नैतिक पतन होता चला गया। राष्ट्रीय चरित्र का घोर अभाव दिखाई पड़ने लगा। पंचायत से लेकर संसद तक के चुनाव माहौल ने सारा राष्ट्र हिला कर रख दिया। चोर डाकू तस्कर और भ्रष्टाचारी चुनाव जीत कर आने लगे। लोकतंत्र में वोट बैंक महत्वपूर्ण होता है। राष्ट्रीयता अथवा देश भक्ति के नाम पर वोट नहीं मांगे जा रहे हैं जाति बिरादरीवाद भड़काया जा रहा है। अल्पसंख्यकों के संगठित वोट हथियाने के लिए तुष्टिकरण की नीति अपनाई जा रही है। इसे नाम दिया जा रहा है - सेक्युलरवाद। इसके साथ अब जुड़ गया है वंशवाद वोट लोलुप कुछ स्वार्थी नेताओं को भय था कि राम के प्रति अगाध श्रद्धा रखने के कारण जाति बिरादरी के संगठित वोट कहीं हाथ से निकल ना जाए इसलिए उन्होंने राम का ही विरोध आरंभ कर दिया। गलत ढंग से जीत कर आने वाले शासक तथा व्यक्तिगत स्वार्थ से प्रेरित नेता आज निरंकुश हो रहे हैं। हमारी परंपरा ऐसी नहीं है। रामायण में राजकर्ता गण का उल्लेख हुआ है। यह धर्म नीति सदाचार का अनुसरण करने वाले चरित्रवान पठित व्यक्त हुआ करते थे। इन्हें ही किसी को सिंहासन पर बिठाने अथवा उसे उतारने का अधि कार था।

हमारे यहां राजतंत्र में भी प्रजातंत्र रहा है। तुलसी के राम ऐसे शासक हैं जो गुरु वशिष्ठ को प्रणाम करते हैं, निषाद को छाती से लगाते हैं और भोले भाले वनवासियों को समादर देते हैं, उन्होंने मंत्रियों और नागरिकों को राज्यसभा में बुलाकर घोषणा की थी-

जौ अनीति कछु भाषों भाई।
महि मोहि बरजहु भय बिसराइ॥

भले ही विघटन वादी स्वार्थी नेता जातिवाद भड़काकर वोट पा जाते हो, किंतु प्रयास करने पर भी यह अपनी बिरादरी के लोगों को राम से विमुख नहीं कर पाए। तुलसी ने उनके मन में राम को गहराई से बिठा दिया है।

अध्यात्म एवं विज्ञान के समन्वय का ऐतिहासिक क्षण
''श्री बालकराम सूर्यतिलकोत्सव''

डॉ. अमिता अग्रवाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास विभाग

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे सहस्त्रनाम
तातुल्यं राम नाम बरानने।।

राम आलौकिक नाम जिसका स्मरण मात्र मनुष्य को सुख, शान्ति, सौहार्द एवं आलस्य रहित कर देता है। राम स्वयं में एक युगपुरुष माने जाते हैं जिनका जीवन स्वयं को शिक्षित करने का माध्यम है। राम का उदाहरण देकर मनुष्य अपने मन के कुंठित मनोभावों को एक नई राह प्रदत्त करता है। ऐसा है– बालक राम, वनवासी राम, राजा राम और प्रभु श्री राम का अद्‌भुत नाम।

नवसंवत्सर 2081 के प्रारम्भ होते ही प्रकृति अपने नये कलेवर को धारण कर रही थी और दूसरी तररफ श्रीराम जन्मोत्सव को लेकर चल रही तैयारियों ने रामभक्तों के हृदय को अपनी तरफ आकर्षित कर रखा था। इन सभी का मुख्य कारण प्रभु श्रीराम के मन्दिर निर्माण एवं बालक राम के मूर्तन स्वरूप का स्थापित होना था।

विष्णु के दशावतारों में प्रभु श्रीराम का अवतार लोकमंगल कामना की पूर्ति करने के लिए हुआ। राम तपते हुए मन को शीतलता प्रदान करते हैं। ऐसे अलौकिक देव को स्तुति रामोत्सव के रूप में पूरे भारतवर्ष में धूमधाम से 22 जनवरी 2024 को मनाया गया। दिव्य, भव्य, अलौकिक, आभायुक्त गर्भगृह में विराजित बालक राम की अद्‌भुत छवि भक्तो के हृदय को आकर्षित करने के साथ-साथ यह शिक्षा भी देती है कि विकट परिस्थितियों का सामना हर मनुष्य को अडिग होकर करना चाहिए।

रत्नजड़ित स्वर्णाभूषणों से अलंकृत रामलला के शुभ जन्मोत्सव के अवसर पर सूर्य तिलकोत्सव का विधान रखने का कारण श्रीराम का सूर्यदेव से गहन संबन्ध होना है। श्रीराम उसी वंश के हैं, जिसका प्रवर्तन सूर्यदेव ने किया था। रामनवमी के इस शुभ अवसर पर श्रीराम का अपने पितृ पुरुष से सरोकार नए सिरे से परिभाषित हुआ।

भव्य-दिव्य मंदिर में ऊपरी तल से भूतल गर्भगृह तक वैज्ञानिक प्रयोग का अध्यात्म रूप दिखायी दिया। मंदिर के ऊपरी तल से भूतल तक दर्पण-दर्पण घूमती टहलती दृश्यमान देवता दिवाकर की किरणें मध्यान्ह रामलला के ललाट पर सुशोभित हुई।

इस अद्‌भुत संयोग हेतु वैज्ञानिक अनुसंधान को सफल रूप देने में नेशनल बिल्डिंग रिसर्च इन्स्टीट्यूट के अभियंताओं के प्रयास से ''शुभस्य शीघ्रम'' की भावना फलीभूत हुई और भूतल गर्भगृह में विराजे रामलला का सूर्यतिलक शुभ नक्षत्र में संभव हुआ।

वैज्ञानिक अनुसंधान की यह प्रक्रिया अत्यन्त ही जटिल थी। क्योंकि पृथ्वी की गति के हिसाब से सूर्य की दिशा तथा कोण को समन्वित करके किरणों को उपकरणों के माध्यम से ऊपरी तल से रामलला के ललाट तक पहुँचाना था। धन्य है विज्ञान जिसके द्वारा प्रभु के प्रकाट्य का बोध गर्भगृह से लेकर करोड़ो भक्तों के हृदय तक व्याप्त होता हुआ प्रतीत हुआ।

ठीक उसी तरह जैसे गोस्वामी तुलसीदास ने प्रभु राम के प्रकाट्य को यह कहकर सम्बोधित किया –

जगनिवास प्रभु प्रकटे अखिल लोक विश्राम।

ग्रामीण समाज की विशेषताएँ

प्रतिभा मिश्रा
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग

भारत ग्राम प्रधान देश है जिसकी अधिकांश जनसंख्या गाँव में ही निवास करती है। ऐतिहासिक विकास की दृष्टि से भारत के ग्रामीण समाज का इतिहास अति प्राचीन है। आदिकाल में मनुष्य जब छोटे-छोटे समूहों में रहता था, तो उसने एक सम्यक व्यवस्था की आवश्यकता का अनुभव किया। फलस्वरूप परिवार का जन्म हुआ। इसके बाद जब अनेक परिवार एक दूसरे के निकट आये, तो उन्होंने सामूहिक आवास की आवश्यकता का अनुभव किया। इन आवश्यकताओं के फलस्वरूप ग्रामीण सामाजिक जीवन का आरम्भ हुआ। ग्रामीण समाज की उत्पत्ति इस प्रकार मनुष्यों द्वारा अपने अस्तित्व की रक्षा हेतु हुई।

ग्राम शब्द का प्रयोग ऋग्वेद, महाभारत, मनुस्मृति तथा अन्य अनेक ग्रन्थों में किया गया है। ग्राम शब्द का अर्थ सामाजिक संगठन की पहली इकाई से लगाया जाता है। कुछ लोगों के अनुसार ग्राम वह स्थन है, जो प्राचीन कृषकों की स्थापना को दर्शाता है। ग्राम एक सहवासी समुदाय है। संक्षेप में ग्रामीण समुदाय ऐसा समुदाय है, जो प्रकृति पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर है जिसका निश्चित स्थान है, जिनकी आजीविका प्रकृति से प्रथम बार उत्पन्न हुई वस्तुओं से चलती है तथा जिनका आकार छोटा होता है। इन समुदायों में घनिष्ठता, निकटता, प्राथमिक सम्बन्ध अनौपचारिकता और समानता पायी जाती है।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से "ग्राम वह बड़ा समुदाय है, जिसमें समस्त अथवा मानवीय हितों की पूर्ति होती है।"

प्रो. टी.एल. स्मिथ ने ग्रामीण जीवन की निम्नांकित विशेषताओं का उल्लेख किया है–

1. कृषि पर निर्भरता
2. कम जनसंख्या
3. जनसंख्या का कम घनत्व
4. सामाजिक समानता
5. कुल पर्यावरण की भिन्नता
6. संस्तरण की कमी
7. तुलनात्मक स्थिरता
8. व्यक्तिगत सम्पर्क की दृढ़ता
9. सामाजिक दृढ़ता व सामाजिक समानता
10. सामाजिक भिन्नता जटिलता एवं श्रम-विभाजन कम प्रभावी

हार्टन एवं हर्ण के अनुसार ग्रामीण जीवन की चार विशेषताएँ है–

1. पृथ्क्करण
2. समानता
3. कृषि व्यवसाय
4. जीवन-यापन वाली अर्थ-व्यवस्था

भारतीय ग्रामीण समाज की विशेषताएँ–

भारतीय ग्रामीण समाज के सम्बन्ध में 1832 में चर्ल्स मैटकाफ ने भारतीय ग्रामीण समुदायों के बारे में लिख था– "ग्रामीण समुदाय छोटे गणराज्य में हैं। प्राय: जितनी वस्तुओं की उन्हें आवश्यकता होती है, वे सब उनके पास रही हैं और वे बाह्य सम्बन्धों से अधिकांशत: स्वतन्त्र रहते हैं। जहाँ और कोई चीज स्थायी नहीं ऐसा प्रतीत होता है कि वे स्थायी रहे हैं। एक राजवंश के बाद दूसरा राजवंश लुढ़कता गया। एक क्रान्ति के बाद दूसरी क्रान्ति हुई किन्तु ग्रामीण समुदाय अपरिवर्तित रहा। ग्रामीण समुदाय के इस संघ ने जिसमें प्रत्येक स्वयं एक अलग छोटा सा राज्य था। मेरे विचार में किसी अन्य कारण की अपेक्षा भारतीय जनता की अनेक क्रान्तियों एवे परिवर्तन के बीच रक्षा की है और उनके सुख और स्वतन्त्रता की बहुत वृद्धि की है।

ग्रामीण समाज से की विशेषताओं को निम्नलिखित बिन्दुओं से स्पष्ट किया जा सकता है–

1. संयुक्त परिवार
2. कृषि मुख्य व्यवसाय
3. जाति प्रया

4. यजमानी प्रथा
5. ग्राम पंचायत
6. भाग्यवादी
7. सरल एवं सादा जीवन
8. जनमत का अधिक महत्व
9. सामाजिक समरूपता
10. प्रथाओं और धर्म का महत्व
11. स्त्रियों की स्थिति निम्न
12. अशिक्षा
13. आत्मनिर्भरता

1. **संयुक्त परिवार**– भारतीय गांवों की सर्वप्रमुख विशेषता रही है। यहाँ पति-पत्नी व बच्चों के परिवार की तुलना में ऐसे परिवार अधिक पाये जाते हैं, जिसमें कई पीढ़ियों के सदस्य एक स्थान पर रहते हैं। इनका भोजन, सम्पत्ति, पूजा-पाठ साथ-साथ होता है। ऐसे परिवारों का संचालन परिवार के वयोवृद्ध व्यक्ति द्वारा होता है। वही परिवार के बाह्य और आन्तरिक कार्यों के लिए निर्णय लेता है। परिवार के सभी सदस्य उसकी आज्ञा का पालन करने हैं, उसका आदर और सम्मान करते हैं। संयुक्त परिवार प्रणाली भारत में अति प्राचीन है। यह मूलत: पितृसत्तात्मक होती है।
2. **कृषि मुख्य व्यवसाय**– भारतीय ग्रामों में निवास करने वाले लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। 70 से 75 प्रतिशत लोग प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कृषि द्वारा ही अपना जीवन यापन करते हैं। कृषि कार्य के अतिरिक्त चटाई, रस्सी, मिट्टी के बर्तन बनाना, वस्त्र बनाना आदि व्यवसायों का प्रचलन गाँवों में है। शिल्पकार जातियाँ अपने-अपने व्यवसाय करती हैं तो सेवाकारी जातियाँ कृषकों एवं अन्य जातियों की सेवा करती हैं।
3. **जाति प्रथा**– जाति के आधार पर गाँवों में सामाजिक संस्करण पाया जाता है। प्रत्येक जाति का एक परम्परागत व्यवसाय होता है। जाति के सदस्य अपनी ही जाति में विवाह करते हैं। जाति की एक पंचायत होती है, जो अपने सदस्यों के लिए खान-पान एवं सामाजिक सहवास के नियम भी बनाती है। जाति के नियमों का उल्लंघन करने पर सदस्यों को जाति से बहिष्कार, दण्ड, जुर्माना आदि की सजा भुगतनी होती है।
4. **यजमानी प्रथा**– प्रत्येक जाति निश्चित परम्परागत व्यवसाय करती है। परन्तु इस विशेषता में आमूल परिवर्तन देखने को मिलता है और व्यावसायिक गतिशीलता उत्पन्न हुई है। यजमानी प्रथा के अनुसार सभी जातियाँ परस्पर एक दूसरे की सेवा करती हैं जिससे अन्तर्जातीय सम्बन्ध स्थापित होता है।
5. **ग्राम पंचायत**– प्रत्येक ग्राम में एक ग्राम पंचायत होती है, इसका मुखिया गाँव का मुखिया होता है। ग्राम पंचायत का मुख्य कार्य गाँव की भूमि का परिवारों में वितरण, सफाई, विकास कार्य और ग्रामीण विवादों को निपटाना है।
6. **भाग्यवादी**– भारतीय गाँवों के निवासियों में शिक्षा की कमी है। अत: वे अन्धविश्वासी और भाग्यवादी हैं, उनका दृढ़ विश्वास है कि व्यक्ति चाहे कितना प्रयत्न करे, किन्तु उसे उतना ही प्राप्त होगा, जो उसके भाग्य में लिखा है, उनके इस विश्वास को हम तुलसीदास जी की इस पंक्ति द्वारा व्यक्त कर सकते हैं–

   होईहें वही जो राम रचि राखा।
   को करि तरक बढ़ावहि साखा।।

7. **सरल एवं सादा जीवन**– भारत में ग्रामवासी सादा जीवन व्यतीत करते हैं। उनके जीवन में कृत्रिमता और आडम्बर नहीं है, उनमें ठगी, चतुरता और धोखेबाजी के स्थान पर सच्चाई, ईमानदारी और अपनत्व की भावना विद्यमान होती है, उनके भोलेपन का सेठ और साहूकार लाभ उठाकर उनका शोषण करते रहे हैं।
8. **जनमत का अधिक महत्व**– ग्रामवासी जनमत का सम्मान करते हैं और उससे डरते हैं। वे जनमत की शक्ति को चुनौती नहीं देते, वरन इसके सम्मुख झुक जाते हैं। जनमत की अवहेलना करने वाले की निन्दा की जाती है। ऐसे व्यक्ति की समाज में प्रतिष्ठा गिर जाती है। कोई भी ग्रामीण इस प्रकार की स्थिति को पसन्द नहीं करता।
9. **सामाजिक समरूपता**– भारतीय ग्रामों में सामाजिक और सांस्कृतिक समरूपता देखने को मिलती है। सभी लोग एक जैसी भाषा, त्यौहार-उत्सव, प्रथाओं और जीवन विधि का प्रयोग करते हैं। उनके सामाजिक,

आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक जीवन में ज्यादा अन्तर नहीं पाये जाते हैं।

10. **प्रथाओं और धर्म का महत्व–** भारतीय ग्रामवासी प्रथाओं एवं रूढ़ियों का अन्धानुकरण करते हैं। वे परिवर्तन व क्रान्ति में विश्वास नहीं करते।
11. **स्त्रियों की स्थिति निम्न–** भारतीय ग्रामीण समाजों में नारी की स्थिति अत्यन्त निम्न है, उसे दासी के रूप में समझा जाता है। ग्रामीण समाज में नारी शिक्षा के अभाव के कारण नारी की स्थिति उच्च नहीं बन पा रही है।
12. **अशिक्षा–** गाँवों में अधिकांश जनसंख्या अशिक्षित है। आजादी के 50 वर्षों बाद भी 1991 की जनगणना के अनुसार देश में शिक्षा का प्रतिशत 52.21 से ऊँचा नहीं हो पाया था। ग्रामों में तो यह प्रतिशत और भी कम है। पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की शिक्षा का प्रतिशत काफी निम्न है।
13. **आत्मनिर्भरता–** भारतीय ग्राम को आत्मनिर्भर इकाई के रूप में परिभाषित किया गया है। ग्राम आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक क्षेत्र में आत्मनिर्भर था। यजमानी प्रथा द्वारा जातियाँ परस्पर एक दूसरे के आर्थिक हितों की पूर्ति करती थीं। राजनैतिक दृष्टि से ग्राम पंचायत और गाँव का मुखिया सभी विवादों को निपटाता था। प्रत्येक गाँव की अपनी एक संस्कृति और कुछ विशिष्टताएँ पायी जाती थीं। वर्तमान में यातायात के साधनों के विकास, केन्द्रीय शासन की स्थापना, औद्योगीकरण आदि के कारण गाँवों की आत्मनिर्भरता समाप्त हो गई है। अब वे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के अंग बन गये हैं।

उपरोक्त विशेषताओं के अतिरिक्त भारतीय ग्रामीण समाज एक सामुदायिक एकता के रूप में विद्यमान रहे हैं। बाढ़, अकाल, महामारी और किसी भी अन्य संकट के समय सभी लोग मिलकर उसका मुकाबला करते हैं। गाँवों में सामाजिक गतिशीलता का अभाव रहा है। वहाँ विशेषीकरण नहीं पाया जाता है वरन् प्रत्येक व्यक्ति छोटा-मोटा सभी प्रकार का कार्य कर लेता हैं। यहाँ सीमित आय के कारण गरीबी एवं निम्न जीवन स्तर पाया जाता है।

कोशिश कर

अर्शी खातून
बी.ए. प्रथम वर्ष

कोशिश कर, हल निकलेगा,
आज नहीं तो, कल निकलेगा।
अर्जुन सा लक्ष्य रख निशाना लगा,
मरुस्थल से भी फिर, जल निकलेगा।
मेहनत कर, पौधों को पानी दे
बंजर में भी फिर, फल निकलेगा।
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे,
फौलाद का भी, बल निकलेगा।
सीने में उम्मीदों को, जिंदा रख,
समन्दर से भी, गंगाजल निकलेगा।
कोशिशें जारी रख, कुछ कर गुजरने की,
जो कुछ थमा-थमा है, चल निकलेगा।
कोशिश कर, हल निकलेगा,
आज नहीं तो, कल निकलेगा।

The Power of Parental Involvement: Enhancing Homework Success

Anant Pathak
Assistant Professor, B.Ed. Department

Introduction

Education is a collaborative effort between schools, educators, and parents. While the primary responsibility of education lies with schools, parents play a crucial role in supporting their children's academic journey. One area where parental involvement proves immensely beneficial is in homework completion and success. By actively participating in their child's homework routine, parents can foster better learning environments, reinforce key concepts, and instill discipline and responsibility. This article explores the importance of parental involvement in homework and provides practical ways for parents to enhance their child's educational experience.

1. Creating a Homework-Friendly Environment

To ensure a productive homework routine, it is essential to cultivate a homework-friendly environment at home. Parents can create a designated, quiet space where their child can concentrate without distractions. This area should be equipped with necessary materials such as pens, pencils, paper, and textbooks. By setting up a consistent time and place for homework, parents can help their child establish a healthy homework routine.

2. Establishing a Routine and Setting Expectations

Consistency is vital for effective homework completion. Parents can assist their child by establishing a regular homework routine that aligns with their child's natural habits and energy levels. Setting clear expectations regarding homework completion and quality will help children understand the importance of their academic responsibilities. Encouraging children to break down tasks into manageable chunks and create a to-do list can aid in time management skills.

3. Providing Guidance and Support

Parents are a child's first teacher and can actively assist in providing guidance and support during homework. By showing interest, asking about assignments, and discussing concepts learned in school, parents can foster a love for learning and encourage their child's curiosity. When necessary, parents can offer explanations or examples to clarify difficult concepts, helping their child better comprehend the subject matter. Moreover, lending a listening ear and offering encouragement can boost a child's confidence, motivating them to tackle challenging tasks with a positive attitude.

4. Monitoring Progress and Checking for Understanding

Parents should aim to monitor their child's progress regularly to ensure comprehension and completion of assignments. By reviewing completed assignments, parents can gauge the level of understanding and identify areas that require additional practice or attention. Offering praise for effort, improvement, and accuracy cultivates a sense of achievement and motivates children to continue striving for excellence.

5. Collaboration with Teachers

Effective communication between parents and teachers is essential for optimal homework support. Parents should actively engage with teachers to gain insights into their child's academic progress and identify areas that may require extra attention.

Sharing concerns or challenges faced during homework can provide teachers with valuable information, enabling them to tailor instruction accordingly. Collaborative efforts between parents and teachers can create a comprehensive support system that ensures the child's holistic development.

6. Striking a Balance: Avoiding Over-Involvement

While parental involvement in homework is crucial, it is equally important to strike a balance and avoid over-involvement. Encouraging independence and self-reliance helps children develop problem-solving skills and resilience. Parents should gradually delegate responsibility for completing homework to their child as they grow older, while still offering guidance when needed.

Conclusion

Parental involvement in homework is pivotal in fostering academic success and personal growth. By creating a supportive environment, setting realistic expectations, providing guidance, monitoring progress, and collaborating with teachers, parents can effectively contribute to their child's educational journey. A strong partnership between parents and schools enhances educational outcomes, equipping children with the skills and attitudes necessary for lifelong learning. Together, parents and educators can cultivate a love for knowledge, inspire intellectual curiosity, and empower students to reach their full potential.

मसाल क़ायम करने के लिए,
अपना रास्ता स्वयं बनाना होता है।

❖❖❖

"असंभव शब्द का प्रयोग केवल कायर ही करते हैं,
बहादुर और बुद्धिमान व्यक्ति अपना मार्ग स्वयं बनाते हैं।

A Study On Adolescent Girls Knowledge About Medical Textile In Health Care Product

Pooja Gupta
Assistant Professor (Home Science)

Advanced medical textile are significantly developing area because of their major expansion in such field like wound healing realse, bandaging and pressure garments, implantable devices as well as medical devices and development of new intelligent textile products. Present society is undergoing changes like large population size, need of increasing his life span of every individual, various situations and hazards of human activity and civiationining transport accident, cold, diseases and sports.Such factors increase the demand of medical textiles. So there are several researching works are going on all over the world in medical textile materials and polymers. A total 100 respondent selected from Gorakhpur city. The data collect with the help of questionnaire method to elicit general information & specific information. Analysis was done with the help of percentage method. According to this study mostly girls were knowledge aout medical textile product.

Medical textiles also known as Healthcare Textiles. Medical Textiles is one of the most rapidly expanding sectors in the technical textile market. It is one of the major growth areas within technical textiles and the use of textile materials for medical and healthcare products ranges from simple gauze or bandage materials to scaffolds for tissue culturing and a large variety of prostheses for permanent body implants. Textile products are omnipresent in the field of human hygiene and medical practice. Their use is based on a number of typical basic textile properties like softness and lightness, flexibility, absorption, filtering etc.

Nano-technique has acquired tremendous impulse in the last decade. Nano-fibre based products as well as nano-coated materials are present innovations in the field of medical. So in our technical poster we have gone through latest medical textiles, nano-based products due to following features and wide range of application.

Nanofibres are very attracted due to their unique properties, high surface area to volume ratio, film thinness, nano scale fibre diameter porosity of structure, lighter weight. Nanofibres are porous and the distribution of pore size could be of wide range, so they can be considered as engineered scaffolds with broad application in the field of tissue engineering. Some other applications like wound dressings, bone regeneration and nanofibres to be the carrier of various drugs to the specific sites, etc.

Consumption Of Different Categories Of Medical Textiles:

Sr.	Medical Textile Product	Market potential (Rs Mn)	
	2005	**2010**	
1	Sanitary Napkins	4819	8519
2	Incontinence diapers	605	1070
3	Surgical dressing	5828	10302
4	Health care textiles	1491	2635
5	Sutures	3160	5587
6	Medical devices & Implants	1190	2104

Medical Textiles is a branch of Technical Textiles. Medical textiles are textile products and constructions for medical applications. They are used for first aid, clinical or hygienic purposes and rehabilitation. Not all the textile fibers can be used here, because their performances depend upon interaction with the cells and different fluids produced by the body. The use of textile materials for medical and healthcare products ranges from simple gauze or bandage materials to scaffolds for tissue culturing and a large variety of prostheses for permanent body implants. The textile materials should have some specific properties to be useful as medical textile. Textiles materials that are used in medical applications include fibres, yarns, fabrics and composites. Depending upon the application, the requirements of textile material for medical applications are: Biocompatible; Good resistance to alkalis, acids and micro-organisms; Good dimensional stability; Elasticity Free from contamination or impurities; Absorption / Repellency; Air permeability.

Combination of textile technology and medical sciences has resulted into a new field called medical textiles. New areas of application for medical textiles have been identified with the development of new fibers and manufacturing technologies for yarns and fabrics. Development in the field of textiles, either natural or manmade textiles, normally aimed at how they enhance the comfort to the users. Development of medical textiles can be considered as one such development, which is really meant for converting the painful days of patients into the comfortable days.

गंगा प्रदूषण

प्रियंका पाण्डेय
एम.एड्. प्रथम वर्ष

कभी काया हमारी कंचन थी
स्वभाव हमारा चंचल था.....
लोग श्रद्धा के फूल चढ़ाते थे
कितनों की प्यास बुझाते थे
हर शाम किनारे पर बैठे
कीर्तन, भजन सुनाते थे।
कभी काया हमारी.....

भाव जिनका सुन्दर था
वे तन निर्मल कर जाते थे
मेरे तट शीश झुका कर
आशीष मेरा पाते थे
कभी काया हमारी.....

अब भाग्य हमारे बदले हैं
काली हमारी काया है
कचड़े के ढेर लगाते हैं
न जाने कितने मैल बहाते हैं
जिनके तन धोए मैंने
अब वो शव बहाते हैं
कभी काया हमारी.....

The Status of Educational Rights of Women: Pre And Post Independence

Dr. Mamta Tiwari
Assistant Professor-B.Ed. Department

Introduction:

Human beings are born free and equality is the right of human and value of nations. On 10 December 1948 the United Nations declare the Human Rights under the universal depression of human rights. The provision of Human Rights has also been kept in the Indian Constitution like right to equality right to life right to speech et cetera. In the term of women rights article 15 one and two proverbs the discrimination on the basis of religion race cast sex place of birth etc. also supports for gender equality and declared through UDHR in article (1) that "To achieve International cooperation in promoting and increasing respect for human rights and fundamental freedoms for all without distinction as to race, sex, language or religion". With the support of United Nation and law of UDHR gender equality was made part of international human rights.

Women Empowerment:

Men and women both are enjoy the same opportunities, rights and obligations, like decision making, economic and social freedom, equal access to education and right to practice and occupation of their own choice, this is called gender equality in human rights. Women empowerment means that ability of women, which gives them this ability in which they can take all the decisions related to their life. Women have a sense of self-worth, their rights and freedom to determine them, equal opportunities and access to all kinds of resources, the right to regulate and control their own lives inside and outside the home and to create social and economic order, these are the five components that, are essential for women's empowerment (UN Commission on the Status of Women (2002)).

The term 'empowerment' is a multi-dimensional social process. Empowerment of women is a crucial element for all round development of society as well as country women empowerment related issues is now become a global phenomenon, because women and girls continue to face significant challenges all around the world. Any country can progress only when the women of that country are developed properly. For the development of women, many types of work are also being done by all countries of the world, so that women power can be encouraged to be promoted in every field. Referring to the issue of women empowerment even in this century, it proves that still the development of women is not fully done. The condition of women in our country can be assume from the fact that there are still many such villages in India, where the life of women is confined to the four walls of the house.

Pre-independence India And Women:

Many efforts are being made for the upliftment of women from the pre-independence period and efforts are going on till date, but women's access to them and their awareness about those schemes and efforts is depriving them of their rights somewhere. But still, if we look at the journey before independence and after independence, then there has been a lot of improvement in the direction of women's rights and their empowerment. Whereas the development of society, reduction in domestic violence, reduction of poverty, etc. are some of the major phenomena of the society and the nation, in which the participation of women is an integral part, for which women have to come out of the four

walls.

Post-independence India And Women:

A very famous quote was given by Swami Vivekanand "the best thermometer to the progress of a nation is its treatment of its women. There is no chance for the welfare of the world unless the of women is improved". There have been various forms of social norms all over the world which deny specific opportunities to women, such as the right to education, health, vote, opportunities, etc. progress on environmental stability, and human rights are hindered due to such gender inequality and are the primary cause of concern for poverty and hunger. The status of women in the post-independence period underwent transformations. In the discussion of their status within the society, there are two main aspects that need to be taken into consideration, first to what extent women can control their own living conditions and the extent to which they possess the decision making authority and perform their tasks and activities without minimum restrictions.

Constitution of India and Women Rights:

The Indian Constitution attempts to provide equal opportunities to women, protect their rights and ensure justice to them through the following provisions- Right to Equality Constitution ensures equality to all its citizens including women (Article 14). The Constitution ensures that no discrimination shall be made against any person on the basis of caste, class, creed, sex, race and place of birth [Article 15(1)) No discrimination shall be made on any grounds of discrimination including sex for providing employment opportunities. [Article 16).

The State shall take the responsibility of providing maternity benefits to women employees [Article 42).

- One-third of women in the panchayats - There must be separate seats reserved for women in the panchayats with separate seats for women SCs and STS [Article 243 D (3)).
- One-third reservation for women in the presidential posts of the Panchayats- Reserving women seats for all posts at all the levels of panchayats (Gram Panchayat, Taluk Panchayat and Zilla Panchayat) [Article 243 D (4)].
- One-third reservation in Municipalities - Separate seats for women in all the town municipalities [Article 243(T) 3]. It was indeed a bold step. The rural women will also be now able to exercise some political power and play a role in decision making for the and village affairs.

Some of the important acts having special provision to safeguard women and their interests are as follows:

1. The special Marriage Act, 1954
2. The Hindu Marriage Act, 1955
3. The Hindu adoption and maintenance Act, 1956
4. The Hindu minority and guardianship Act, 1956
5. The Hindu Succession Act, 1965
6. The Hindu women rights to property Act, 1973)
7. The dowry prohibition Act, 1961
8. The equal remuneration Act, 1976
9. Immortal traffic prevention Act, 1986
10. The Maternity Benefit Act, 1961 (Amended in 1995)
11. The Medical Termination of Pregnancy Act, 1971
12. The Prohibition of Child Marriage Act, 2006
13. Protection of Women from Domestic Violence Act, 2005
14. Indecent Representation of Women (Prohibition) Act, 1986 15. Commission of Sati (Prevention) Act, 1987

Furthermore, they have been entitled to vote and are provided with other special benefits. The constitution protects women against exploitation and ensures that they are given equal rights and

opportunities being in any field.

Government schemes and Women Empowerment:

1. Beti Bachao Beti Padhao
2. Working Women Hostel One Stop Centre Scheme
3. Women Helpline Scheme
4. Mahila E-Haat
5. Mahila Police Volunteers
6. STEP SWADHAR Greh,
7. Mahila Shakti Kendras

Conclusion:

It can be concluded from the above discussion that in the pre independence period of India, women were given respect and recognition within the society, but within the course the time, their position suffered a degradation. This era is just a beginning to start-up the women empowerment. Rights of women in India especially after post-independence formed a new kind of challenging movement of social evils and problems and fought for the social equality. The constitution of India adopted the principal of equality in the fundamental rights resolution of the Karachi Congress. Government of India launched various schemes for women empowerment and the result of these initiatives, the condition of women in India is much better from pre independent India.

कौन तेरा

सृष्टि सिंह चन्देल
एम.एड्. प्रथम वर्ष

गर्भ से मिलते ही
इस धरा पर रेंगते ही
पहली कदम की चाल से
यौवन के हुंकार से?
जिम्मेदारियों के आड़ से
बुढ़ापे के तत्कार से
नब्ज की जब तक दौड़ न रुके
मानव ढोता रहता है एक बोझ प्यार से
सोचता है जग अपना है
कौन जाने यह एक सपना है
देखता है खुद को हजार में
साया मात्र उसका रहता है,
मगर, जीत या हार में
सावन है तो तप्त दुपहरिया भी होगी
तो यहाँ से तुझे डगमगाना नहीं है
छोड़ गए जो तुझे उन्हें अब मनाना नहीं है,
तेरे हिस्से में जितनी रात है, अब छट जायेगी
मत सोच तेरे हिस्से में उजाला नहीं है
बढ़ तू निरंतर बेबाक हो कर निडर
आसमान में फतह का तू पताका लहरा
फिर जमी पर देख कि कौन तैरा खड़ा है

Importance of English language

Akriti Singh
English Department

No one denies the importance of English Language in the present time as global language. It is clear that the English language has become more dominant around the world. English plays an important role in our everyday life. So, the use of English should be continued along with Hindi and other regional languages.

The latest and the most advanced discoveries and inventions science and technology are being made in the universities located in the United States of America where English language is the means of Scientific discourse.

The Historical circumstances of India have given the Indian an easy access to mostering English language and innumerable opportunities for advancement in the field of Science and technology. Many Indians have become the skiulled in English language and have won many international awards for creative and comparative literature during the last few years.

Over the years, English language has become one of our principal assets in getting a global leadership for books written by Indians.

बेटियां

साक्षी पाण्डेय
एम.ए. प्रथम सेमेस्टर (गृहविज्ञान)

बेटियाँ सब के मुकद्दर में कहाँ होती हैं,
घर खुदा को जो पसन्द आये वहाँ होती हैं
बेटा अंश है, तो बेटी वंश है,
बेटा आन है तो बेटी शान है।
बेटे भाग्य से होते हैं पर बेटियाँ सौभाग्य से होती हैं
लक्ष्मी की वरदान है बेटी, धरती पर भगवान है बेटी
मुझे पापा से ज्यादा शाम अच्छी लगती है,
क्योंकि पापा तो सिर्फ खिलौने लाते हैं
पर शाम तो पापा को लाती हैं।
सबने पूछा बहू दहेज में क्या-क्या ले आई
किसी ने ना पूछा बेटी क्या-क्या छोड़ आई
बाप के जीवन में ये दिन भी आता है
जिगर का टुकड़ा ही एक दिन दूर हो जाता है।
देवालय में बजते शंख की ध्वनि है बेटी
देवताओं के हवन यज्ञ की अग्नि है बेटी
खुशनसीब है वो जिनके आँगन में है बेटी
जग की तमाम खुशियों कि जननी है बेटी
बेटी की हर ख्वाहिश पूरी नही होती
फिए भी बेटियाँ कभी अधूरी नहीं होती
फूलों सी कोमल हृदय वाली होती हैं बेटियाँ
माँ बाप की एक आह पर ही रोती है बेटियाँ
भाई के प्रेम में खुद को भुला देती है अक्सर
फिर भी आज गर्भ में जान खोती है बेटियाँ
एक मीठी सी मुस्कान है बेटी
यही सच है कि मेहमान है बेटी
उस घर से अनजान है बेटी
जिस घर की पहचान बनने चली
खुशबू बिखेरती फूल है बेटी
इन्द्रधनुष का सुन्दर रूप है बेटी
सुरों को सुन्दर बनाने वाली साज है बेटी
हकीकत में इस धरती की ताज है बेटी।

बौद्धिक सम्पदा

विजेता दूबे
एम.एड्. चतुर्थ सेमेस्टर

परिचय :

मनुष्य में आदि काल से ही प्रकृति की समझने एवं उससे सीखते हुए कुछ नया खोजने की प्रवृत्ति रही है। प्राचीन काल में जहाँ आदि मानव प्रकृति (छंजनतम) की मूल सुविधाओं का उपयोग करते हुए जीवनयापन करता था वहीं आज के वर्तमान युग में मनुष्य ने विभिन्न आविष्कारों के माध्यम से समाज के लिए हर प्रकार की सुविधाओं को अर्जित कर लिया है। ये सभी आविष्कार एवं उपलब्धियाँ किसी व्यक्ति विशेष के निजी प्रयासों अथवा व्यक्तियों के एक चिन्हित समूह के सामूहिक प्रयासों का परिणाम होते हैं। एक व्यक्ति जो अपने सघन प्रयासों के उपरान्त किसी नये आविष्कार अथवा विचार को उत्पन्न करता है, वास्तव में उस आविष्कार अथवा विचार का मूल श्रेय ही उसी को मिलना चाहिए। किन्तु वर्तमान में ऐसे कई उदाहरण सामने आये हैं जहाँ एक व्यक्ति की वास्तविक उपलब्धियों को दूसरे व्यक्ति ने गलत तरीके से अपने नाम के साथ जोड़ा है। बौद्धिक सम्पदा का अधिकार मूलत इसी तरह की अनियमितताओं पर नियंत्रण करने का एवं समर्थ व्यक्ति को उसके अधिकार प्रदान करने का प्रयास करता है।

बौद्धिक सम्पदा का अधिकार :

बौद्धिक सम्पदा का अधिकार एक ऐसा अधिकार है जो किसी वस्तु अथवा विचार के निर्माता को उस वस्तु अथवा उसके विचार के निर्माण का सम्पूर्ण श्रेय प्रदान करता है। एक सामाजिक दृष्टिकोण से बौद्धिक सम्पदा का अधिकार एक निर्माता के व्यक्तिगत हितों की रक्षा इस प्रकार से करता है कि निर्माता द्वारा निर्मित की गयी वस्तुओं एवं समाज के विभिन्न व्यक्तियों के द्वारा उन वस्तुओं के उपयोग से सम्बन्धित सूचनाओं में अधिकारों की मिन्नता रखते हुए निर्माता को उसके निर्माण का श्रेय देते हुए विभिन्न तरीकों से प्रोत्साहित करता है। किसी सूचना के उत्पादक के उस सूचना के उत्पादन के पश्चात् वह सूचना विभिन्न उपयोगकर्ताओं के द्वारा अलग-अलग समय में आपस में बांटते हुए प्रयुक्त की जाती है।

बौद्धिक सम्पदा का अधिकार :

वर्तमान स्थिति में विभिन्न बौद्धिक सम्पदा अधिकारों के माध्यम से यह सुनिश्चित किया जाता है कि उक्त सूचना का उत्पादक किसी भी तरह से अपने उत्पादक के स्वरूप में प्राप्त अधिकारों से वंचित न हो जाये और उपयोगकर्ताओं एवं उत्पादक में अधिकारों के संबन्ध में पर्याप्त भिन्नता सुस्पष्ट रहे। आज हमारे समाज में विभिन्न सुविधाओं एवं उत्पादों के निर्माण के पीछे गहन चिन्तन एवं शोध के गम्भीर प्रयास सम्मलित होते हैं। इन प्रयासों के परिणाम स्वरुप प्राप्त परिणाम अथवा उत्पाद अन्य दूसरे व्यक्तियों के द्वारा भिन्न-भिन्न तरीके से प्रयोग में लाया जाता है और कई बार ये दूसरे लोग उन उत्पादों के नवीन स्वरूपों में परिवर्तित कर अथवा उनके आधार पर अन्य परिष्कृत उत्पाद तैयार कर उसका सम्पूर्ण श्रेय स्वयं लेने का प्रयास करते हैं। इस तरह से मूलरूप से एक व्यक्ति/खोजकर्ता के द्वारा विकसित अथवा निर्मित एक उत्पाद का व्यवसायिक एवं वित्तीय लाभ दूसरे व्यक्ति के द्वारा बिना खोजकर्ता को श्रेय दिये लिया जा सकता है। बौद्धिक सम्पदा अधिकार इसी तरह के कृत्यों से खोजकर्ताओं के अधिकारों की रक्षा करता है एवं खोजकर्ताओं को उनके द्वारा की गयी खोज का श्रेय देने के साथ-साथ उनके वित्तीय एवं व्यवसायिक अधिकारों को भी संरक्षित करता है।

बौद्धिक सम्पदा के अधिकार के अन्तर्गत आने वाले मुख्य तत्व प्रतिनिधिकारक या कॉपीराइट एवं इसी तरह के अन्य अधिकार जैसे ट्रेडमार्क, भौगोलिक संकेत, औद्योगिक डिजाइन, पेटेन्टस, एकीकृत परिपथ के ले-आउट डिजाइन (Layout Design of Integrated Circuits) आदि हैं।

किसी एक व्यक्ति अथवा व्यक्तियों (मानसिक प्रयासों से) की सृजनात्मक खोज के आधार पर उसे अथवा उन्हें प्रदान किया गया अधिकार ही बौद्धिक सम्पदा का अधिकार

कहलाता है। बौद्धिक सम्पदा के अन्तर्गत मस्तिष्क के विभिन्न सृजनात्मक प्रयास के माध्यम से की गयी खोज, साहित्य तथा कलात्मक कार्यों एवं व्यवसाय में प्रयुक्त किये गये नाम, चित्र एवं डिजाइन आदि आते हैं।

भारत में बौद्धिक सम्पदा के अधिकार का इतिहास :

भारत में बौद्धिक सम्पदा के अधिकार का पहला मामला वर्ष 1856 में प्रकाश में तब आया जब जॉर्ज अलफ्रेड के पेनिंग ने अपना पेटेन्ट हेतु प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया। बाद में उन्हें प्रदान किया गया पेटेन्ट भारत के बौद्धिक सम्पदा के अधिकार के अन्तर्गत प्रदत प्रथम पेटेन्ट के रूप में जाना गया। बौद्धिक सम्पदा के अधिकार के अन्तर्गत आने वाले प्रतिलिप्याधिकार (ब्वचलतपहीज) का इतिहास भारत में सर्वाधिक पुराना है। यह अधिकार ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन के दौरान सन् 1847 में लागू किया गया। उस समय के प्रावधानों के अन्तर्गत एक पुस्तक उसके लेखक के सम्पूर्ण जीवनकाल एवं उसकी मृत्यु के सात वर्षों तक कॉपीराइट एक्ट के अन्तर्गत नियंत्रित होती थी। वर्ष 1914 में भारतीय संसद में नया कॉपीराइट एक्ट पास किया, जो कि मुख्य रूप से यूनाइटेड किंग्डम के सन 1911 के कॉपीराइट एक्ट के लगभग अनुरूप था। इसके पश्चात् स्वतंत्र भारत में सन 1958 में नया कॉपीराइट एक्ट लागू किया गया।

पेटेन्ट के दृष्टिकोण से भारत में सन 1856 में अधिनियम पास हुआ जो कि सन् 1883 में संशोधित किया गया। तत्पश्चात् सन् 1911 में भारती पेटेन्ट एवं डिजाइन एक्ट ने इसका स्थान लिया।

यह अधिनियम वर्ष 1920, 1930 व वर्ष 1945 में पुनः संशोधित किया गया। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत सरकार ने वर्ष 1949 में लाहौर हाईकोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायधीश डॉ. बख्शी टेक चन्द्र की अध्यक्षता में पेटेन्ट अधिनियम की समीक्षा हेतु एक समिति बनाई जिसके पश्चात् वर्ष 1950 में इस अधिनियम में परिवर्तन किये गये। बाद में समय-समय पर आवश्यकता के अनुरूप इसमें बदलाव किये गये भारत में ट्रेडमार्क पर वर्ष 1940 के पूर्व तक कोई भी औपचारिक कानून नहीं था।

बौद्धिक सम्पदा के अधिकार की श्रेणी :

सामान्य और पर बौद्धिक सम्पदा के अधिकार के अन्तर्गत औद्योगिक सम्पदा एवं प्राप्तलिप्याधिकार आते है। किन्तु इसके अतिरिक्त भी कई ऐसे अधिकार हैं जिन्हें सैद्धांतिक तौर पर इसमें सम्मिलित किया गया है। बौद्धिक सम्पदा के अधिकार में निम्नलिखित बिन्दुओं से सम्बन्धित अधिकारों को समाहित किया जाता है–

1. साहित्यिक, कलात्मक एवं वैज्ञानिक कार्य
2. एक कलाकार का प्रदर्शन
3. मनुष्य के विभिन्न प्रयास क्षेत्रों में किये गये आविष्कार
4. वैज्ञानिक खोज
5. औद्योगिक डिजाइन
6. ट्रेड मार्क या व्यापार चिन्ह एवं सेवा चिन्ह इत्यादि

बौद्धिक सम्पदा के अधिकार से सम्बन्धित विभिन्न बिन्दुओं के आधार पर बौद्धिक सम्पदा के अधिकार को निम्नलिखित श्रेणियों में बाँटा जा सकता है–

बौद्धिक सम्पदा का अधिकार जो किसी आविष्कार एवं सृजनात्मक गतिविधियों के आधार पर प्रदान किया जाता हो। इसके अन्तर्गत पेटेन्ट औद्योगिक डिजाइन, प्रतिलिप्याधिकार पादप प्रजनक का अधिकार, एकीकृत परिपथ का लेआउट या खाका डिजाइन इत्यादि आते है।

बौद्धिक सम्पदा के वे सभी अधिकार जो किसी उपभोक्ता को सूचना प्रदान करते हैं। इसके अन्तर्गत ट्रेड मार्क एवं भौगोलिक संकेत आते हैं।

भारत में बौद्धिक सम्पदा आधारित अधिनियम :

भारत सरकार के अलग-अलग विभागों ने बौद्धिक सम्पदा आधारित विभिन्न अधिनियम समय-समय पर लागू किये, इनमें से कुछ प्रमुख अधिनियम निम्नलिखित हैं–

- कॉपीराइट एक्ट 1957 उच्च शिक्षा विभाग (1983, 1984, 1992, 1994, 1999 में संशोधित)
- पेटेन्ट एक्ट, 1970 औद्योगिक नीति एवं सम्वर्धन विभाग (1999 में संशोधित)
- डिजाइन एक्ट 2000 औद्योगिक नीति एवं सम्वर्धन विभाग ट्रेड मार्क एक्ट, 1990 औद्योगिक नीति एवं सम्वर्धन विभाग
- औद्योगिक नीति एवं सम्वर्धन विभाग
- Semi-conductor Integrated Circuits-
- सूचना प्रौद्योगिकी विभाग, आदि

आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है

रुचि विश्वकर्मा
एम.एड्. तृतीय सेमेस्टर

एक प्रतापी गुरु थे जो अपनी शिष्यों से बहुत प्यार करते थे। अपने शिष्य की हर कमियों तथा गुणों को पता कर उन्हें भविष्य के लिए तैयार करते थे। उनका मात्र एक ही लक्ष्य था उनका हर शिष्य जीवन के हर पड़ाव पर हिम्मत से आगे बढ़े। उनके सभी शिष्यों में एक शिष्य अत्यंत भोला था तथा स्वभाव का बड़ा ही कोमल और सरल विचारों का था, लेकिन वह बहुत ज्यादा आलसी था। आलस के कारण उसे कुछ भी पाने का मन नहीं था। वह सोचता था कि बिना कर्म किए ही फल मिल जाए। गुरु जी दिन रात उसी शिष्य के बारे में सोचते रहते थे।

एक दिन उन्होंने पारस पत्थर की कहानी सुनाई। अपने सभी शिष्यों को एक साथ बैठाकर। इस पत्थर के बारे में जानने के लिए वही शिष्य सबसे ज्यादा जिज्ञासु था। यह देख गुरुजी उसकी मंशा समझ गए कि वह आलसी है इसलिए उसे इस पत्थर की लालसा है लेकिन यह मूर्ख यह नहीं जानता है कि जो व्यक्ति कर्महीन होता है उसकी सहायता स्वयं भगवान भी नहीं करते और यह तो एक साधारण सा पत्थर ही है। यह सोचते-सोचते गुरुजी ने सोचा कि यही सही वक्त है इस शिष्य को इसके आलसी अवगुणों से अवगत कराने का। ऐसा सोचकर गुरुजी ने उसे अपनी कुटिया में बुलाया। कुछ क्षण बाद कुटिया के भीतर शिष्य ने प्रवेश किया और सर को झुकाकर प्रणाम किया। गुरु जी ने आशीर्वाद देते हुए कहा बेटा मैंने आज जिस पारस पत्थर की कहानी सुनाई है वह मेरे पास है और तुम मेरे प्रिय शिष्य हो इसलिए मैं यह पत्थर तुम्हें देना चाहता हूं। मैं वो पत्थर तुम्हें सूर्योदय से सूर्यास्त तक के लिए दूंगा तुम उससे जो भी चाहते हो कर सकते हो। तुम्हें जितना भी स्वर्ण चाहिए दिए गए समयानुसार तुम बना सकते हो। यह सुनकर शिष्य की खुशी का ठिकाना ना रहा।

दूसरे दिन शिष्य ने गुरु से पत्थर लिया और सोचने लगा कि मेरे जीवन के लिए कितना स्वर्ण लगेगा। इसी चिंता में उसने आधा दिन निकाल दिया। फिर वह भोजन कर वापस आया। उस वक्त भी वह इस चिंता में डूबा था कि उसके जीवन के लिए कितने स्वर्ण पर्याप्त होंगे। यही सोचते सोचते उसकी आंख लग गई जब आंख खुली तो दिन ढलने वाला था तथा गुरु जी के आने का समय हो गया था। फिर उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। इतने में गुरुजी वापस आ गए और उन्होंने पत्थर वापस ले लिया। शिष्य ने बहुत विनती की लेकिन गुरु जी ने एक ना सुनी। तब गुरुजी ने शिष्य को समझाया– आलस्य व्यक्ति की समझ पर ताला लगा देता है, आलस्य के कारण तुम इतने अच्छे अवसर का लाभ न उठा सके। जो कर्म से भागता है भगवान उसका साथ कभी नहीं देते तुम बहुत आलसी हो और जिस दिन तुम इस आलस्य के झूले को निकाल कर फेंकोगे उस दिन तुम्हारे पास कई सारे पारस पत्थर होंगे।

शिष्य को गुरु की बात समझ आ गई। उसने खुद को पूरी तरह से बदल दिया। अब उसे किसी भी पारस पत्थर की लालच नहीं थी।

आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। आलस्य मनुष्य को खत्म कर देता है।

"हिम्मत मत हार ए मन अभी तो बढ़ते जाना है
रात भर चला है तू अभी मंजिल को पाना है।
मुश्किलें तो अभी बहुत सी आएंगी राह में
बस ये सोच दुनिया को तुझे कुछ कर दिखाना है
हिम्मत हारना कायरों की निशानी है
सफलता हमेशा से मेहनत की दिवानी है
मेहनत करे जा सफलता पीछे आएगी
यही तो सफल जीवन की असली निशानी है।"

राष्ट्रीय युवा दिवस

निशा निगम
एम.एड्. द्वितीय वर्ष

भारत में प्रतिवर्ष 12 जनवरी को स्वामी विवेकानन्द जी की जयन्ती को राष्ट्रीय गुवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। स्वामी विवेकानन्द जी युवा पीढ़ी के लोगों के लिए आदर्श माने जाते हैं।

स्वामी विवेकानंद जी के विचार

व्यक्ति को केवल उसकी आत्मा ही सिखा सकती है, आपकी आत्मा सबसे अच्छी गुरु है। आत्मा ही आपको आध्यात्मिक बना सकती है। इसलिए अपनी आत्मा की सुनें।

देश के भविष्य हैः युवा

प्राचीनकाल से लेकर आज तक समाज में जो भी सकारात्मक रूप से बदलाव हुए है, उसका योगदान युवा पीढ़ी को जाता है। युवा पीढ़ी यानी हमारे देश के नौजवान जो समाज का एक महत्त्वपूर्ण अंग हैं जिसे अंग्रेजी में 'Youth', 'Young' जनरेशन कहा जाता है। युवा पीढ़ी में जोश, जुनून, कुछ कर गुजरने की उमंग तथा वह आसमान को छूना चाहते हैं अर्थात् कामयाबी के शिखर पर पहुँचना चाहते हैं।

युवा पीढ़ी आज तक समाज में हर क्षेत्र में अपना-अपना योगदान दिए हैं, जैसे– शिक्षक, डॉक्टर, शोधकर्ता, वैज्ञानिक, इंजीनियर, फौजी, पुलिस आदि ने सफलतापूर्वक आत्मविश्वास के साथ अपना प्रदर्शन किया है। लेकिन आने वाला भविष्य हमारी पीढ़ी की सोच और उनके प्रदर्शन पर निर्भर करता है कि वह समाज के किस क्षेत्र में अपना योगदान देंगे।

आज भी युवा पीढ़ी नये उज्जवल भविष्य की ओर ले जा रही है ताकि अपने समाज तथा देश की भली भांति सेवा कर सकें।

चमकता भारत चहकती बेटियाँ

शिवांगी पासवान
बी.ए. तृतीय वर्ष

अगर बेटा बारिश है तो बेटी पारस है।
अगर बेटा वंश है तो बेटी अंश।
अगर बेटा आन है तो बेटी गुमान है।
अगर बेटा संस्कार है तो बेटी संस्कृति है।
अगर बेटा आग है तो बेटी बाग है।
अगर बेटा दवा है तो बेटी दुआ है।
अगर बेटा भाग्य है तो बेटी विधाता है।
अगर बेटा शब्द है तो बेटी अर्थ है।
अगर बेटा गीत है तो बेटी संगीत है।
जब इतनी कीमती है बेटियाँ तो फिर
क्यों सबके मन को खटकती है बेटियाँ।

नारी

अक्शा इकबाल
बी.एड. विभाग

युगों युगों से लोगों ने नारी को सताया है
खुलेआम भरी सभा में बेइज्जत कराया है
इस ज़माने ने नारी को इतना दबाया है
कभी भी उसकी ताकत ये समझ ना पाया है
मंदिर में देवी को पूजा
घर जा कर बीवी को पीटा
ये भक्ति का कैसा ढोंग इन्होंने रचाया है
युगों युगों से लोगों ने नारी को सताया है
ये भूल जाते नारी की शक्ति
जिसने अंग्रेज़ों को मार गिराया था
वो भी तो एक नारी थी झाँसी की एक महारानी थी
फिर भी ना नारी का सम्मान किया
बस उसको एक समान कहा
नारी ने ही सारी सृष्टि को चलाने का वरदान पाया है
युगों युगों से लोगों ने नारी को सताया है! नारी को सताया है!

शिक्षक

दिव्या सिंह
बी.एड. द्वितीय वर्ष

जीवन में जो राह दिखाए, सही तरह चलना सिखाए।
मात-पिता से पहले आता, जीवन मे सदा आदर पाता।
सबको मान प्रतिष्ठा जिससे, सीखी कर्तव्यनिष्ठा जिससे
कभी रहा न दूर मैं जिससे वह मेरा पथदर्शक है
जो मेरे मन को भाता वह, मेरा शिक्षक कहलाता।
कभी है शांत, कभी है धीर, स्वभाव में सदा गंभीर
मन में दबी रहे ये इच्छा काश मैं उस जैसा बन पाता
जो मेरा शिक्षक कहलाता।

लड़ना तो है ही

महिमा तिवारी
एम.ए. द्वितीय वर्ष गृह विज्ञान

परिस्थितिया कैसी भी हो
समस्याएं कितनी भी ताकतवर क्यों न हो
जीतने के लिए लड़ना तो है ही.....
कोई साथ हो या न हो
कोई उम्मीद हो या न हो
डट कर खड़ा रहना तो है ही
हिम्मत से लड़ना तो है ही.....
मुकाबला चाहे एक दिन का हो या एक साल का
जंग में चाहे हार हो या जीत
इस बात को सोचे बिना
दुश्मन से दो-दो हाथ करना तो है ही
निडर और साहसी होकर लड़ना तो है ही.....
कल की परवाह किये बिना
आने वाले कल के लिए
आज संघर्ष करना तो है ही
विश्वास के साथ लड़ना तो है ही.....
मन भयभीत है क्यों क्या होगा पता नहीं
कौन साथ होगा कौन नहीं
पर जो आज साथ हैं
उन्हें साथ लेकर चलना तो है ही
जिनके लिए लड़ना तो है ही....
सूर्य की रोशनी चाँद की चाँदनी संग
रोज बैठकर बात करने की आदत है
इस आदत को जिन्दा रखने के लिए
खुद को खुश रखना तो है ही.....
दुख कितना भी क्यों न हो लड़ना तो है ही
एक अलग सोच के साथ
एक अलग उम्मीद के साथ
खुद की पहचान बनाते हुए
आगे बढ़ना तो है ही
एक नई ऊर्जा के साथ लड़ना तो है ही

आदर्श छात्रा

दिव्या सिंह
बी.एड. द्वितीय वर्ष

1. एक आदर्श छात्र अपने काम के प्रति व्यवस्थित और वफादार होता है।
2. वह दूसरों की सेवा करने और सच बोलने ने विश्वास रखता है।
3. ऐसा छात्र हमेशा अपनी चीजों को ढंग से रखने की कोशिश करता है ताकि जब भी किसी चीज की जरूरत पड़े तो तुरंत मिल जाए।
4. आदर्श छात्र अपने समय का सदुपयोग करना जानता है।
5. वह अपने जीवन के हर काम को पूरी ईमानदारी और एकाग्रता के साथ करने की कोशिश करता है।
6. उसे जीवन में हमेशा कुछ नया सीखने की भूख रहती है जिसकी वजह से वह जीवन में आगे बढ़ता ही रहता है।
7. ऐसे छात्र के अंदर घमंड और अहंकार बिल्कुल भी नहीं होता।
8. वह अपने जीवन की सभी स्थितियों में संतुलन बनाए रखने की कोशिश करता है।
9. आदर्श विद्यार्थी अनुशासन में रहना पसंद करता है, क्योंकि वह जानता है कि सफल होने के लिए दैनिक जीवन में अनुशासन लाना बहुत जरूरी है।
10. जीवन के हर पल में एक आदर्श छात्र अपने माता-पिता, स्कूल और देश का नाम रोशन करने का प्रयास करता है।

बेहतर दिखता है ....

शालिनी त्रिपाठी
बी.एड्. द्वितीय वर्ष

गुरूर करूँ किस बात पर,
जिसे देखूँ मुझसे बेहतर दिखता है,
वो कौन सी चौखट है भला
जहाँ मुझसे भी कोई बदतर मिलता है।

किसी के लफ्जों में झुकाव बेहतर है,
किसी की खामोशी में दर्द भारी है,
कुछ सयाने मुझसे बेहतर हैं
तो किसी ने मासूमियत में बाजी मारी है।

कोई कलाकारी में अधिक निराला है,
किसी की अवारगी में जिंदगी की खुमारी है,
किसी ने अहिस्ता-अहिस्ता सफर गुजारी है,
तो किसी ने दौड़ कर जीती दुनिया सारी है।
किस बात पर, भला मैंने भी कब कोई तीर मारी है,
देखती हूँ जिधर हर कोई बेहतर दिखता है।,
खैर अपनी धुन भी गूंजेगी हर कहीं,
कौन सा वक्त भी कभी एक जगह टिकता है।
गुरूर करूँ किस बात पर,
जिसे देखूँ मुझसे बेहतर दिखता है।

इंटरनेट की दुनिया

प्रगति श्रीवास्तव
बी.एड्. तृतीय सेमेस्टर

आज हमारी जीवन शैली में इंटरनेट एक अनिवार्य हिस्सा बन गया है। जैसे हवा बिना हम एक पल भी नहीं जी सकते ठीक वैसे ही आज इंटरनेट के बिना एक कदम उठाना भी मुश्किल हो रहा है। इंटरनेट एक विशाल नेटवर्क सिस्टम का विश्वव्यापी कनेक्शन है। इसमें कोई शक नहीं कि इंटरनेट ने हमारे जीवन को आसान और अधिक सुविधाजनक बना दिया है। इंटरनेट के कुछ फायदे हैं तो कुछ नुकसान भी। लेकिन ये इंटरनेट के उपयोगकर्ता पर निर्भर करता है की वो इंटरनेट का उपयोग किस तरह कर रहा है। इंटरनेट का उपयोग करके हम ऑनलाइन पैसे कमा सकते हैं। हम दुनिया भर के लोगों के साथ संवाद और व्यवसाय कर सकते हैं। हम नए दोस्त बनाने और विभिन्न संस्कृतियों को जानने, जानकारी खोजने, अध्ययन करने आदि के लिए इंटरनेट का उपयोग कर सकते हैं। हर दिन इंटरनेट हमें एक नई सुविधा प्रदान करना जारी रखता है। इंटरनेट का उपयोग शिक्षा, व्यवसाय, खेल, मनोरंजन, रक्षा, चिकित्सा, कृषि और अन्य सभी क्षेत्रों में किया जाता है। ई-मेल के माध्यम से दुनिया के किसी भी हिस्से में संदेश भेजना संभव है और संदेश कुछ ही सेकंड में दिया जाता है। इंटरनेट के अनगिनत फायदे के साथ अनगिनत नुकसान भी है। इंटरनेट समय की बर्बादी है। जो लोग कंप्यूटर के सामने बैठकर बहुत अधिक समय बिताते हैं वे आसानी से बीमार हो सकते हैं। कंप्यूटर की स्क्रीन से निकलने वाली रेडिएशन आंखों के लिए हानिकारक होती है। अगर एक बार इंटरनेट की लत लग जाती है तो लोग बस इसके बिना नहीं रह सकते। इंटरनेट बंद हो जाता है तो वे उग्र हो जाते हैं। पोर्नोग्राफी छोटे बच्चों के हाथ में भी आसानी से लग सकती है। बच्चे बेहद आसानी से फिसल जाते हैं। किसी भी टेक्नोलॉजी का दो पहलू होता है। अब वो हम पर निर्भर है कि हम उसका उपयोग कैसे करें।

बारिश का मौसम

शानिया खान
बी.एड्. तृतीय सेमेस्टर

बारिश का मौसम भी, कितना सुहाना होता है,
फसलों का मन पसन्द, यह तराना होता है।
जो रहते है पक्के घरों में, उनके लिए ये मौसम सुहाना है,
जो रहे सड़कों पर उनसे पूछो, दर बदर उनका कौन ठिकाना है।
बच्चों के लिए ये, खुशियां ले कर आता है,
बड़ों के लिए भी ये, खुशियों का मौसम होता है।
फसलों के लिए भी ये मौसम, सबसे अच्छा होता है,
मौसमों में ये सबसे, सुहाना होता है।
बारिश का मौसम भी, कितना सुहाना होता है,
फसलों का मन पसन्द, यह तराना होता है ।

ये कौन सा खेल था ....

शालिनी त्रिपाठी
बी.एड्. द्वितीय वष

थी मैं नींद में और,
मुझे इतना सजाया जा रहा था.....
बड़े प्यार से मुझे नहलाया जा रहा था.....
ना जाने था वो कौन सा अजब खेल मेरे घर में.....
बच्चों की तरह मुझे कंधे पर उठाया जा रहा था.....
था पास मेरा हर अपना उस वक्त.....
फिर भी मैं हर किसी के मन से भुलायी जा रही थी.....
जो कभी देखते भी न थे मोहब्बत की निगाहों से.....
उनके दिल से भी प्यार मुझ पर लुटायी जा रही थी.....
मालूम नहीं क्यों हैरान था हर कोई मुझे सोते हुए देख.....

जोर-जोर से रोकर मुझे जगाया जा रहा था.....
काँप उठी मेरी रूह वो मंजर देख कर.....
जहाँ मुझे हमेशा के लिए सुलाया जा रहा था.....
मोहब्बत की इन्ताहा थी जिन दिलों मे मेरे लिए.....
उन्हीं दिलों के हाथों, आज मैं जलायी जा रही थी।।
ना जाने था वो कौन सा अजब खेल मेरे घर में.....
ना जाने ये कौन सा खेल था.....

एक फूल की व्यथा

प्रगति श्रीवास्तव
बी.एड्. प्रथम वर्ष

एक दिन मंदिर के पास से गुजरते हुए
देखे बहुत से फूल खिलकर महकते हुए
सोचा क्यों न भगवान के दर्शन किए जाएँ
कुछ फूल भगवान को समर्पित किए जाएँ
फूल भगवान को अर्पित कर कहा मैंने
हे ईश्वर! मेरा ध्यान रखना, बनाना मेरे बिगड़े काम
इक फूल ने सिसकते हुए कहा
कहाँ गई पूजा तुम्हारी, उजाड़ के मेरी दुनिया सारी
तुम क्या समझती हो पूजा सिर्फ तुमने ही की है
मैं एक तपस्वी हूँ और तपस्या मैंने भी की है
काँटों के बीच रहकर मुसकराई हूँ मैं
और तुमने तोड़ लिया, थोड़ी देर में सूखकर मर जाऊँगी
या तुम जैसे भक्तों के पैरों से कुचला जाऊँगी
बता इस चमन को अब कौन महकाएगा
कुछ पल बाद तो मेरा जीवन खत्म हो जाएगा।

अजन्ता की कला

गरिमा यादव
एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

उचित प्रमाण, लवलीन भावनाओं की सुकुमारता, उच्चादर्श का गौरव, रूपाकारों की सुकोमल लयात्मक रेखाओ का नियोजन घरातल विभाजन की परिकल्पना, अनुभूतियों की गहरायी आदि विशिष्टता एक उत्कृष्ट कलाकृति की रचना में सहायक होती है।

इस कथन की सच्चाई अजन्ता की कलाकृतियाँ प्रत्यक्ष प्रदर्शित करती है। अजन्ता एक नाम है कलाकारों की परिकल्पना का, भिक्षुओं के उच्चादर्शो का, बौद्ध धर्म के उपदेशों का, तत्कालीन संस्कृति के विस्तार का, भित्ति चित्रण परम्परा के एक इतिहास का। वास्तव में अजन्ता भारतीय संस्कृति का स्तम्भ है, एक वातायन है जिसके माध्यम से हम एक ऐसे जगत से साक्षत्कार करते है जहाँ सृष्टि का प्रत्येक तत्व आत्मानुभूति से ओतप्रोत गतिशील है।

"अजन्ता गुफा मन्दिरों की भित्ति चित्रकला अपनी उस पूर्णता पर पहुँची थी, जिसकी कलात्मकता संसार में अतुलनीय है। विषयवस्तु की उत्कृष्टता, गौरवशाली उद्देश्य, सृजन की समरूपता, स्पष्टता, सहजता और रेखांकन की आश्चर्यजनक समग्रता का आभास मिलता है। धार्मिक पवित्र भाव ने मानों स्थापत्य कला, मूर्तिकला और चित्रकला की एक सुखद संगति प्रदान की है।" – डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

अजन्ता की गुफाएं महाराष्ट्र में औरंगाबाद से 68 किलोमीटर दूर पहाड़ियों में विराजमान हैं जहाँ प्रकृति मुक्त हस्त से अपना सौन्दर्य विकीर्ण किया है। प्राय: कलाकार को शोरगुल से दूर शान्तिमय वातावरण में चित्रण करना भाता है।

इसलिए ही यहाँ के कलाकार अजन्ता की कलाकृतियों के रूप में अपनी तूलिका एक छैनी हथौड़े की सिद्धहस्तता को सदैव के लिए अमर कर गये और अपना नाम तक नहीं लिखा।

अजन्ता की गुफाओं की संख्या :

अजन्ता की गुफाएँ अजन्ता पर्वत को तराशकर निर्मित की गयी हैं जहाँ जाने के लिए बहुत सकरे ऊँचे-ऊँचे रास्ते से होकर गुजरना पड़ता है। यहाँ कुल 30 गुफाएँ हैं जिनमें 25 विहार तथा 5 चैत्य हैं। इनकी छतें ऊंची नीची हैं। बिहार गुफाओं को संधाराम भी कहा जाता है।

इन गुफाओं का प्रयोग बौद्ध भिक्षु निवास के लिए करते थे। 9, 10, 19, 26, 29 नं. की गुफाएं चैत्य हैं जहाँ उपासना की जाती थी। चैत्य के अंतिम किनारे पर एक स्तूप बनाया जाता था जहाँ तथागत के अवशेष सुरक्षित रहते थे।

गैरोल "चैत्य कहते हैं चिता को और चिता के अवशिष्ट अंश को (अस्थि अवशेष को) भूमि गर्भ में रखकर वहाँ जो स्मारक तैयार किया जाता था उसे चैत्य कहा जाता था। स्तूप का अर्थ है 'टीला'। स्तूप और चैत्य वस्तुत: उन स्मारकों को कहा जाता था बहुधा जिनमें किसी महापुरूष की अस्थियाँ या बाल गाड़कर रखा जाता है।

आज 1, 2, 9, 10, 16, 17 नं. की गुफाओं में चित्र शेष हैं जहाँ बौद्ध कलाकारों के अद्‌भूत स्वप्न रेखा रूपाकारो एवं रंगों में विष्टित होकर आज तक अमरत्व का संदेश दे रहा है। इन गुफाओं में 9वी तथा 10वी गुफा सबसे प्राचीन है तथा 17वी गुफा में सबसे अधिक चित्र मिलते हैं।

अंजता की गुफाएँ किसने बनवाई

अजन्ता का कार्य शुंग, सातवाहन, कुषाण तथा गुप्तकाल में हुआ। गुप्तकाल में कला का सर्वाधिक विकास हुआ क्योंकि गुप्त सम्राट कला एव संस्कृति के संरक्षण के पक्षधर थे।

यह समय भारतीय कला इतिहास में स्वर्णयुग माना जाता है। गुप्त के समकालीन वाकाटक वंश हुआ जो सातवाहन राजाओं को हराकर उत्तराधिकारी बने। तत्कालीन जीवन में प्रचलित परम्पराएँ धर्म, दर्शन, रीत-रीवाज, फैशन सभी इन चित्रों के माध्यम से ज्ञात हो जाता है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय में भारत भ्रमण पर आया हुआ चीनी यात्री फहियान लिखा– व्यक्तियों की संख्या अधिक है तथा वे प्रसन्न हैं। उन्हें अपने घरो को रजिस्टर्ड करवाने की या

किसी न्यायाध्यक्ष के नियमों के पालन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। राजा शिरच्छेदन या शारीरिक यातना दिए बिना उन पर शासन करता है। विभिन्न मतो या सम्प्रदायों के लोगों के घर दया एवं उदारता से परिपूर्ण है और वहाँ यात्री के विश्राम की सभी सुविधाएँ उपलब्धा हैं।

अजन्ता चित्र शैली की विशेषताएँ

1. **रेखा** - आश्चर्य है कि एक ही केन्द्र पर 800 वर्षों तक चित्र स्तरलहरी गुंजित होती रही और कोई बड़ा शैलीगत उतार-चढ़ाव कालक्रमों के बीच नहीं आया। भारतीय कलाकार के लिए रेखा एक चित्रोपन मर्यादा है।
2. **रूप (Form)** - सक्रिय व सहायक रूपों का संयोजन एवं प्रभाव ही चित्रों की आत्मा व शरीर है। छोटे-छोटे अनगिनत रूपों (सिपाही, सेवक, भिक्षुक, मन्त्री, नर्तकी) का समूह दर्शक के नेत्र-पथ को सुख प्रदान करता है व आनन्द देता है।
3. **वर्ण एवं छाया**- अजन्ता में रंगों की तैयारी विधि शिल्प-ग्रंथों में दी गई परिपाटी के अनुसार ही थी। आकृतियों में सरलीकरण एवं भावाभिव्यक्ति के आधार पर ही रंग भरे गए हैं। छाया तथा गहराई हेतु आकृति में मुख्य रंगत में हल्का रंग मिलाकर प्रयोग किया जाता था।
4. **परिप्रेक्षण**- अजन्ता में वातावरणीय रेखीय परिप्रेक्ष्य में से किसी का भी प्रयोग नहीं हुआ है।
5. **संयोजन**- बन्धन से मुक्त रहते हुए पूरी कहानी को एक ही भित्ति खण्ड पर सफलता के साथ संयोजित किया गया है।
6. **मुद्राएँ**- हस्त मुद्राओं स्नेह, मैत्री, काम, भार, लज्जा, हर्ष, उत्साह, चिन्ता, आक्रोश, रिक्ता, घृणा, ममता, उत्सव, सम्पन्नता, विपन्नता, राग, विराग, आनन्द आदि अनेक भावों के प्रकटीकरण हेतु विविध हस्त मुद्राओं का प्रयोग किया गया है।
7. **शोभन**- कमल के पुष्प, मुरिया फल (आम्र शरीफा आदि) व पशु-पक्षियों (हंस, बैल, हाथी व मृग आदि)
8. **प्रकृति चित्रण**- अजन्ता में चित्रकार ने प्रकृति का विविध हरीतिमा रूपों तथा वन्य पशु-पक्षियों से दर्शक का घनिष्ठ परिचय कराया है।
9. **नारी सौन्दर्य**- कोमल र्तथा सौन्दर्य की देवी रूप आदि रूप चित्रण है।
10. **विषय वस्तु**- बौद्ध धर्म, करुणा, प्रेम एवं अहिंसा का भाव है।

काश

शालिनी त्रिपाठी
बी.एड्. द्वितीय वर्ष

काश, जिंदगी सचमुच किताब होती
पढ़ सकती मैं कि आगे क्या होगा?
क्या पाऊंगी में और क्या दिल खोयेगा?
कब थोड़ी खुशी मिलेगी, कब दिल रोयेगा?
काश, जिन्दगी सचमुच किताब होती।
फाड़ सकती मैं उन लम्हों को
जिन्होंने मुझे रुलाया है....
जोड़ती कुछ पन्ने जिनकी
यादों ने मुझे हँसाया है....
हिसाब तो लगा पाती कितना खोया
और कितना पाया है?
काश, जिन्दगी सचमुच किताब होती।
वक्त से आँखे चुराकर पीछे चली जाती.....
टूटे सपनो को फिर से अरमानों से सजाती
कुछ पल के लिये मैं भी मुस्कुराती,
काश, जिन्दगी सचमुच किताब होती।

भारत की प्रथम महिला आदिवासी राष्ट्रपति - द्रौपदी मुर्मू

स्वाती पाण्डेय
एम.ए. (राजनीति विज्ञान)

देश की 15वीं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू उड़ीसा की रहने वाली एक सक्रिय आदिवासी राजनीतिज्ञ हैं। 20 जून 1958 को उनका जन्म मयूरभंज (उड़ीसा) के बैदाफेसी गांव में हुआ था। उनके पिता बिरंची नारायण टुडू ग्राम प्रधान थे। एक आदिवासी परिवार के संथाल समुदाय में पैदा होने कारण द्रौपदी मुर्मू को कई कठिनाइयों और संघर्षों का सामना करना पड़ा। अपने पति और दो बड़े बेटों की मृत्यु जैसे कई व्यक्तिगत त्रासदियों के बावजूद वह हमेशा समाज की सेवा के लिए समर्पित रहीं। उन्होंने अपने ससुराल का घर एक स्कूल को दान कर दिया। द्रौपदी मुर्मू राजनीतिज्ञ होने से पहले एक कुशल शिक्षिका थी। उन्होंने भाजपा के अनुसूचित जनजाति मोर्चा के उपाध्यक्ष के रूप में भी काम किया।

रायरंगपुर के विधायक के रूप में दो बार सेवा करते हुए वह 2015 से 2021 तक झारखण्ड की 9वीं राज्यपाल के रूप में चुनी गई। द्रौपदी मुर्मू को उड़ीसा विधान सभा द्वारा सर्वश्रेष्ठ विधायक होने के लिए प्रतिष्ठित नीलकंठ पुरस्कार द्वारा पुरस्कृत किया गया। 2016 में मुर्मू जी ने कश्यप मेमोरियल आई हॉस्पिटल रांची को मृत्यु के बाद अपनी आँखें दान करने की घोषणा की है। 1983 में बच्चों की देखभाल के लिए सरकारी नौकरी छोड़ दी थी। 2022 में उन्हें राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के रूप में चुना गया और वे आजादी के बाद पैदा होने वाली पहली राष्ट्रपति चुनी गईं।

हमारे राष्ट्रपति का कार्य वाकई काबिलेतारीफ है। उनकी विनम्र राजनीतिक छवि उन्हें सम्मान और प्रसिद्धि अर्जित करने में मदद करती है। उनका साधारण स्वभाव और अच्छे काम के कारण उन्हें विभिन्न प्रतिष्ठित पदों पर भारत सेवा के लिए सम्मानित किया गया।

वर्तमान समय में जनजाति समाज के लोगों को अपनी मानसिकता में बदलाव की जरूरतः-

"हम जनजाति हैं, पीछे हैं, यह मानसिकता बदलें"। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने जनजाति समाज के लोगों का आह्वान किया कि वे अपनी मानसिकता में बदलाव लाएं। हम जनजाति हैं पीछे हैं यह सोच बदलनी होगी। राजभवन में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि "मैं भी आपके बीच से ही हूँ। हम भी कुछ कर पाएंगे यह शक्ति व सोच रखें। आप पढ़ने का जुनून लाएं। मजबूत मानसिकता व सशक्त मनोबल के साथ आगे बढ़ें।"

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु :

बक्सा जनजाति के लोगों को बांटे वनाधिकार पट्टे के पत्र। बक्सा जनजाति के पाँच लोगों को वनाधिकार पट्टे का प्रमाण पत्र दिया व उनसे संवाद किया और कहा कि सिर्फ सरकार के सहारे न रहें। वह तो बहुत कुछ कर रही है खुद भी आगे बढ़ने की हिम्मत दिखाएं। जनजाति समाज की महिलाएं भी पंचायत मुखिया व अन्य पदों पर पहुँचकर राजनीतिक क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं, यह सुखद है।

> मुनाफा का तो पता नहीं लेकिन बेचने वाले तो यादों को भी कारोबार बना कर बेच देते है।

उत्तर प्रदेश की कला व संस्कृति

प्राची श्रीवास्तवा
एम.ए. द्वितीय वर्ष

पुरातन काल में उ.प्र. 'मध्य-देश' के नाम से प्रसिद्ध था। उत्तर प्रदेश प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति का मुख्य केन्द्र रहा है। साथ ही, कतिपय संस्कृतियों का उद्भव भी उत्तर प्रदेश से हुआ है। यह भगवान राम, कृष्ण, बुद्ध तथा अनेक सन्तों की कर्मस्थली रही है।

प्रदेश के स्वतन्त्रता पश्चात् चहुँमुखी विकास के आकलन हेतु सांस्कृतिक स्तर पर विचार करना समाचीन ही होगा। विकास के इस यात्रा में कला एवं संस्कृति का भी उत्कृष्ट योगदान है।

कला के क्षेत्र में सबसे प्राचीन कला- चित्रकला का एक विशिष्ट स्थान दृष्टिगोचर होता है। इस सन्दर्भ में मिर्जापुर की लिखनियां दरी, सोनभद्र के शैलाश्रयों की कला, होशंगाबाद और मानिकपुर आदि के पर्वत श्रेणियों एवं गुफाओं से प्राप्त चित्रकला आदि के उदाहरण राज्य की कला के अतीत के वैभव का दिग्दर्शन करते हैं।

उत्तर प्रदेश की मुख्य चित्रकला शैलियाँ

- **कंदरा अथवा मिर्जापुर शैली**- मिर्जापुर के गुफाओं के चित्र प्रागैतिहासिक शैली में पृष्ठभूमि के अभाव में ही भावों तथा घटनाओं को रेखाओं के माध्यम से चित्रित किये गये हैं।
- **मथुरा अथवा ब्रज शैली**- इस शैली में समृद्ध पृष्ठभूमि पर प्रेम, प्रकृति एवं भावनात्मक अभिव्यक्ति को जीवन्तता प्रदान की जाती है।
- **बुन्देली शैली**- चित्र में रिक्त स्थान को भरने हेतु चित्रांकित भूमि पर चित्रित चित्रों में एक गहराई का आभास कराया जाता है।
- **आगरा अथवा मुगल शैली**- इस शैली में भवनों, व्यक्तियों, सौन्दर्य तथा युद्ध एवं शिकार आदि के चित्रों में कार्यवाही को प्रमुखता प्रदान की जाती है।
- **मिश्रित शैली**- इस शैली के चित्रों में पुरातन एवं आधुनिकतम शैलियों के मिश्रित रूप में चित्रकारी की जाती है।

चित्रकला विषयक प्रमुख तथ्य

जगन्नाथ मुरलीधर आहवासी को उ.प्र. के विधानसभा में भित्ति-त्रित चित्रित करने का गौरव प्राप्त है। वह मथुरा जनपद के बलदेव ग्राम के निवासी थे।

मेरठ निवासी चित्रकार चमन सिंह 'चमन' ने चित्रकला एवं मूर्तिकला पर 50 से अधिक पुस्तकें लिखकर तथा सबसे अधिक अन्तर्राष्ट्रीय चित्र प्रदर्शनियाँ आयोजित करके विशेष ख्याति प्राप्त की है।

लखनऊ स्थित 'उ.प्र. ललित कला अकादमी' ने राज्य की चित्रकला को राष्ट्रीय मान्यता प्रदान कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

उ.प्र. के अन्तरर्राष्ट्रीय ख्याति के चित्रकार रमेश चन्द्र, पाथी, नित्यानन्द, सुरेन्द्र बहादुर 'सुमानव' तथा चमन सिंह ऐसे चित्रकार हैं, जिन्होंने प्रायः समस्त शैलियों में चित्रकारी की है।

संगीत

उ.प्र. में 'संगीत' का प्रसंग वैदिक काल से ही उपलब्ध है। उपनिषदों में सामवेद के गायन और संगीत वाद्यों का वर्णन मिलता है।

संगीत विषयक प्रमुख तथ्य

उ.प्र. में ही मृदंग, वीणा, एकतारा, ढोलक, सितार, नगाड़ा आदि वाद्ययन्त्रों का आविष्कार हुआ। अवध के महान में संगीतज्ञ बिंदादीन महाराज ने कथक में ठुमरी गायन का समावेश किया।

देश ने संगीत-क्षेत्र का सर्वप्रथम पदक सम्मान 'रामपुर घराना' के संस्थापक उस्ताद मुश्ताक हुसैन खां को प्रदान किया था।

गीत

उ.प्र. के लोकप्रिय गीतों में बिरहा, चैती, कजरी, रसिया, आल्हा, पूरन भगत् आदि मुख्य हैं। प्रदेश में नव्य-गीतों के भी अनेकानेक प्रकार गाए जाते हैं। उ.प्र. में विभिन्न शैलियों में भोजपुरी, अवधी, कन्नौजी, बुन्देलखण्डी तथा ब्रज

क्षेत्र के अनेकानेक लोक-गीत तथा लोक-नृत्य-गीत उपलब्ध हैं। इन लोक-गीतों के अन्तर्गत संस्कार गीतों में विवाह-गीत, सोहर, ऋतु-गीतों में कजरी, चैती, होली, श्रम परिहार गीतों में रोपाई-बुवाईकटाई, जतसार, 'धार्मिक गीतों' तथा 'मेला-गीतों' में विविध पक्षीय झलक दृष्टिगोचर होती है।

इन 'लोक-गीतों' तथा 'लोक नृत्य-गीतों' के प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण में प्रयुक्त विभिन्न लोक वाद्यों; यथा– ढोलक, ढोल, झांझ, नगाड़ा, मंजीरा आदि से वातावरण तथा प्रस्तुति में चार-चाँद लगते हैं।

लोक-नृत्य

- **चरकला**– ब्रज क्षेत्र के इस घड़ा-नृत्य में रथ अथवा बैलगाड़ी के पहिए पर अनेकानेक घड़े रखकर, फिर उसे अपने सिर पर रखकर नृत्य किया जाता है।
- **दीपावली**– बुन्देलखण्ड के अहीरों द्वारा अनेकानेक दीपकों को प्रज्जवलित करके नृत्य किया जाता है।
- **राई**– कृष्ण-जन्मोत्सव के समय बुन्देलखण्ड की महिलाओं द्वारा किया जाने वाला 'मयूर-नृत्य' राई नृत्य कहलाता है।
- **थुबिया**– धोबी जाति के इस लोक-नृत्य में एक नर्तक धोबी तथा दूसरा गधा बनकर नृत्य करते हैं।
- **जोगिन**– अवध के इस क्षेत्र में रामनवमी के पर्व पर पुरुष नर्तक तथा उनमें से कुछ महिला-वेश धारण करके साधुओं के रूप में नृत्य करते हैं।

रीति-रिवाज

उत्तर प्रदेश के भारतीय संस्कृति का एक प्रमुख केन्द्र ही नहीं, बल्कि उद्‌भव राज्य भी कहते हैं।

प्रदेश के सभी सम्प्रदाय के लोग अपने रीति-रिवाजों के अनुसार निश्चित तिथियों को विशिष्ट उत्सवों को हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं।

प्रदेश में आयोजित किए जाने वाले विभिन्न मेले एवं उत्सव–

- **कुम्भ का मेला**– प्रति 12 वर्ष में प्रयाग में
- **अर्द्धकुम्भी**– प्रयाग के कुम्भ के 6 वर्ष उपरान्त (प्रति 12 वर्ष में) हरिद्वार में।
- **गढ़मुक्तेश्वर**– गढ़ गंगा का मेला प्रतिवर्ष
- **दशहरा**– आगरा-मथुरा (वैसे यह सर्वत्र मनाया जाता है)
- **श्रावणी व जन्माष्टमी**– मथुरा
- **कैलाश मेला**– आगरा
- **रामनवमी मेला**– अयोध्या
- **नवरात्री मेला**– विन्ध्याचल (मिर्जापुर) आदि।
- **लठमार होली**– नन्दगाँव के निकट बरसाना (मथुरा) में प्रतिवर्ष
- **माघ मेला**– प्रयागराज आदि।

वार्षिक उत्सव

- **वाराणसी उत्सव**– इस आयोजन में भारतीय धर्म एवं संस्कृति तथा ज्ञान-विज्ञान का प्रस्तुतीकरण किया जाता है।
- **प्रयागराज उत्सव**– इस आयोजन में प्रदेश की मिश्रित संस्कृति का अवलोकन कराया जाता है।
- **लखनऊ महोत्सव**– इस महोत्सव में अवध के परस्परागत संगीत, नृत्य, वैभव आदि का दिग्दर्शन कराया जाता है। आदि।

संस्कृति शिक्षा-परिषद्

प्रदेश सरकार ने कला और संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से संस्कृतिक शिक्षा परिषद का गठन किया है। इससे कला, नाट्य संगीत एवं सांस्कृतिक शिक्षा के अन्य क्षेत्रों में काम करने वालों को बढ़ावा मिलेगा।

सरकार द्वारा विशेष योजना में लखनऊ, झांसी, मथुरा एवं लोक कला संग्रहालय की सभी कलाकृतियों का विवरण इण्टरनेट के माध्यम से वेबसाइट पर उपलब्ध करा दिया गया है। इस प्रकार देश में यह पहला संग्रहालय है, जिसने यह योजना लागू की है।

प्रदेश के वृद्ध एवं विपन्न कलाकारों, साहित्यकारों जिन्होंने अपना पूरा जीवन कला एवं संस्कृति तथा साहित्य की अराधना में लगा दिया है परन्तु वृद्धावस्था एवं खराब स्वास्थ्य के कारण अब अपने जीविकोपार्जन में असमर्थ हो गए हैं, को प्रतिमाह के रु. 1,000 की मासिक पेंशन दी जाती है। इनमें अन्य वित्तीय सहायता दिए जाने की योजना भी संचालित है।

निष्कर्ष–

कहने को तो राज्य को हिन्दू प्रधान जनसंख्या वाला राज्य कहा जाता है, किन्तु यहाँ के मुस्लिम, सिक्ख, बौद्ध तथा पारसी निवासियों ने एक मिश्रित संस्कृति अपनाई है। गंगा-यमुना की संस्कृति पर राज्य के भगवान, महापुरुषों, सन्तों, फकीरों तथा अन्य विशिष्टजनों की जन्मस्थालियों एवं कार्यक्षेत्र का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

कलम

नम्रता चौधरी
एम.ए. द्वितीय वर्ष (राजनीति विज्ञान)

ज्ञान का भंडार है तुझसे
शब्दों का अलंकार है तुझसे
मन की हर बात है तुझसे
फिर भी तू मौन पड़ी है।।

युद्ध की ललकार है तुझसे
संधि का प्रस्ताव है तुझसे
संविधान का आधार है तुझसे
फिर भी तू मौन पड़ी है।।

तुझसे ही रामायण
तुझसे ही महाभारत
तुझसे ही कुरान
तुझसे ही बाइबिल
फिर भी तू मौन पड़ी है।।

तुझसे ही निराला
तुझसे ही जयशंकर प्रसाद
तुझसे ही दिनकर
तुझसे ही प्रेम चन्द्र
फिर भी तू मौन पड़ी है
मेरी कलम फिर भी तू मौन पड़ी है।।

कोमल है कमजोर नहीं

अर्शी खातून
बी.ए. प्रथम वर्ष

कोमल हैं कमजोर नहीं
अब साबित कर दिखाना है,
आजादी की नींव खोदकर
प्रगति का पत्थर लगाना है,
दया और माया की मूरत
जब बनती महतारी है,
गर सामने अत्याचारी है
अपने साहस के दम पर
अब नवल इतिहास बनाना है,
बेड़ियों को तोड़कर
बस आगे कदम बढ़ाना है,
कोमल है कमजोर नहीं
अब साबित कर दिखाना है।

सपनों में रख आस्था

दिव्या सिंह
बी.एड. द्वितीय वष

सपनों में रख आस्था कर्म तू किए जा,
त्याग से ना डर आलस परित्याग किए जा।
गलती कर ना घबरा,
गिरकर फिर हो जा खड़ा
समस्याओं को रास्ते से निकाल दे
चट्टान भी हो तो ठोकर से उछाल दे।
रख हिम्मत तूफानों से टकराने की,
जरूरत नहीं है किसी मुसीबत से घबराने की।
जो पाना है बस उसकी एक पागल की तरह चाहत कर,
करता रह कर्म मगर साथ में खुदा की इबादत भी कर।
फिर देख किस्मत क्या-क्या रंग दिखलाएगी
तुझको तेरी मंजिल मिल जाएगी, मंजिल मिल जाएगी।

नारी

शिवानी चौधरी
एम.ए. द्वितीय वर्ष (राजनीति विज्ञान)

तुम रुद्र हो विकराल हो, तुम कालों का काल हो
पर्वत भी जैसे चींटी, तुम ऐसी विशाल हो।।
तुम आरम्भ तुम ही अंत हो, हर कण में तुम जीवंत हो
हो तुम जगत की रानी, और लोग सब सामंत हो।।
सार में भी तुम हो, विस्तार में भी तुम हो
ये संसार भी तुम्हीं से, और संसार में भी तुम हो।।
हर राग में भी तुम हो, वैराग में भी तुम हो
बनती है तुमसे ज्वाला, हर आग में भी तुम हो।।
मुक्ति में भी तुम हो, और भक्ति में भी तुम हो
जो जीत ले जगत को, ऐसी शक्ति में भी तुम हो।।
आधार में भी तुम हो, साकार में भी तुम हो
करती तुम्ही उद्धार भी, और संघार में भी तुम हो

प्रकृति

प्रिया गुप्ता
बी.कॉम. तृतीय सेमेस्टर

हरे-हरे खेतों में, बरस रही हैं बूँदें,
खुशी-खुशी से आया सावन, भर गया मेरा आँगन।
ऐसा लग रहा है जैसे, मन की कलियाँ खिल गयीं
ऐसा आया बसंत, लेके फूलों का जश्न।।
धूप से प्यासे मेरे तन को, बूँदों ने दी ऐसी अँगड़ाई
कूद पड़ा मेरा तनमन, लगता है मैं हूँ एक दामन।।
यह संसार है कितना सुन्दर, लेकिन लोग नहीं उतने अकलमंद
यही है एक निवेदन, न करो प्रकृति का शोषण।।

मानव जीवन में सोशल मीडिया का प्रभाव

समृद्धि चौरसिया
बी.एड. द्वितीय वर्ष

सोशल मीडिया एक अपरंपरागत मीडिया (Un-conventional Media) है। यह एक वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है जिसे इंटरनेट के माध्यम से पहुंच बना सकते है। सोशल मीडिया एक विशाल नेटवर्क है, जो कि सारे संसार को जोड़े रखता है। यह संचार का एक बहुत अच्छा माध्यम है। यह द्रुत गति से सूचनाओं के आदान प्रदान करने, जिसमें हर क्षेत्र की खबरें होती है, को सामाहित किए होता है।

सोशल मीडिया साकारात्मक भूमिका अदा करता है, जिससे किसी भी व्यक्ति, संस्था, समूह और देश आदि को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है। सोशल मीडिया के जरिए ऐसे कई विकासात्मक कार्य हुए हैं जिनमें कि लोकतंत्र को समृद्ध बनाने का काम हुआ है जिससे किसी भी देश की एकता, अखण्डता, पंथनिरपेक्षता, समाजवादी गुणों में अभिवृद्धि हुई है।

हम ऐसे कई उदाहरण देखते है जो कि उपरोक्त बातों को पुष्ट करते हैं जिनमें 'India Against Corruption' को देख सकते है जो कि भ्रष्टाचार के खिलफ महाअभियान था जिसे सड़कों के साथ-साथ सोशल मीडिया पर भी लड़ा गया जिसके कारण विशाल जनसमूह अन्ना हजारे के आन्दोलन से जुड़ा और उसे प्रभावशाली बनाया।

सोशल मीडिया से तात्पर्य :-

'सामाजिक संजाल स्थल (Social networking sites) आज के इंटरनेट का एक अभिन्न अंग है। जो दुनिया में एक अरब से अधिक लोगों द्वारा उपयोग किया जाता है। यह एक ऑनलाइन मंच है जो उपयोगकर्ता को एक सार्वजनिक प्रोफाइल बनाने एवं वेबसाइट पर अन्य उपयोगकर्ताओं के साथ सहभागिता करने की अनुमति देता है।

प्रोफाइल का उपयोग अपने विचारों को साझा करने, पहचान के लोगों या अजनबियों से बात करने में किया जाता है। उदाहरण-फेसबुक, ट्विटर आदि इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में वेबसाइट पर उपलब्ध उपयोगकर्ता की निजी सूचनाएं भी साझा हो जाती है।

सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव :-

सोशल मीडिया दुनिया भर के लोगों से जुड़ने का एक महत्त्वपूर्ण साधन है और इसने विश्व में संचार को नया आयाम दिया है। सोशल मीडिया उन लोगों की आवाज बन सकता है जो समाज की मुख्य धारा से अलग है और जिनकी आवाज को दबाया जाता रहा है।

वर्तमान में सोशल मीडिया कई व्यवसायियों के लिए व्यवसाय के एक अच्छे साधन के रूप में कार्य कर रहा है। सोशल मीडिया के साथ ही कई प्रकार के रोजगार भी पैदा हुए है। वर्तमान में आम नागरिकों के बीच जागरूकता फैलाने के लिए सोशल मीडिया का प्रयोग काफी व्यापक स्तर पर किया जा रहा है।

कई शोधों में सामने आया है कि दुनिया भर में अधिकांश लोग रोजमर्रा की सूचनाएं सोशल मीडिया के माध्यम से ही प्राप्त करते हैं।

सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव :-

सोशल मीडिया का आवश्यकता से अधिक प्रयोग किया जाए तो वह हमारे मस्तिष्क को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है और हमें डिप्रेशन की ओर ले जा सकता है।

सोशल मीडिया साइबर बुलिंग को बढ़ावा देती है। फेक न्यूज और हेट स्पीच फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सोशल मीडिया पर गोपनियता की कमी होती है कई बार निजी डाटा चोरी हो जाता है। इससे साइबर अपराध जैसे हैकिंग और फिशिंग आदि का खतरा बढ़ जाता है। इसके प्रयोग से धोखाधड़ी का भी मामला बढ़ता जा रहा है। इसके प्रभाव से हमारा शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य बड़े पैमाने पर प्रभावित हो सकता है।

Importance of Education

Shrutika Singh
B.Ed. Ist year

Nobody can deny the importance of education. "Education is the most powerful weapon to change the world" by Nelson Mandela. The world education originated from the Italic word Educare which means to educate, to train, to draw out knowledge. Eduacation is very impotant for every country. Education begins at home and country continues throughout our life. A person need to be well educated to go ahead smoothly in his/her life. Education is not only open the job opportunity in a person's life but also it makes a person more civilized and social as well.

Importance of educalion:

The importance education in life is immense. First of all, Education teaches the ability to read and write. Reading and writing is the first step in education.

Education helps in eradicating poverty from our society. An educated person can secure a good job and take care of all his/her family basic needs.

Education improves the mentality and behaviour of people. Thus educated people are more sensible and calm. Education gives you world-wide information and basic knowledge about the society. You gain the experience about religion, facts, truths, stuff.

Education helps in empowering women. Women can voice out themselves in the society against the injustice done to them. Education has a very important role in our life.

How to change your life?

Shalini Tripathi

1. If you don't change your routines, learn new things to improve, take sacrifices and discover new challenges. Everything will remain the same.
2. If you try to do the best you can, work hard and find out what you are passionate about, your ideas will be unique and original.
3. Make your positive attitude visible to everyone. Let people who treat with you feel that you are someone who is willing to give everything.
4. Start seeing everything what happens to you like an opportunity.
5. Every thing you do, do it with a sense of urgency. When you start something, set a date when it has to be done.
6. It is your project, your dream. Even if you need help, which in normal, it has to be you who puts in the most amount of word. And with this attitude you (I inspire others to do the same).

Beti Bachao Beti padhao

Shrutika Singh
B.Ed. Ist year

Human existence on earth is not possible without the equal participation of both men and women. Both are equally responsible for the development of any country, along with the existence of mankind on earth. The biggest crime is the female foeticide in which after sex tests through ultrasound girls are killled in mother's womb. Beti Bachao Beti Padhao is a scheme which means save girl child and educate them. This scheme was started by the Modi Government on Jan 22, 2015 in Haryana to create awareness for girl child and to improve women's welfare.

As per the 2011 census of sex ration in Haryana, there are 879 girls on 1000 boys, which reflects the miserable situation of daughters that's which this campaign was started from Haryana state.

In our country, the number women is decreasing compared to men. Between 0-6 years of age, the number of girls in the ratio of 1000 boys is continuously declining from the year 1961. The number of girls in year 1991 was 945 and in 2001 it decreases to 927 and in 2011 it was 918. This scheme has been started in 100 districts with low sex ratio.

Why boys why not girls

Divya Tripathi
B.A. Ist year

Everyone wants to a boy but no none wants a girl, they pry for boy but not for a girl. Elder's blessing for male not for female. They love to have a boy not a girl.

So, why in need of wealth they pray to Goddess Laxmi? When in need of courage they pray to Goddess Durga. When in need of education they call to Goddess Saraswati.

Why people forget girls like Rani Laxmi Bai who always came in trouble? Why we forget it our own family where daughter live?

What am I, who am I, this is the question I ask. Be a girl don't be forced, I am burning flame like a goddess.

Now, tell me why they hesitate to have devi in the family?

रिपोर्ट एवं सूचनाएँ

एन.सी.सी. एक वैकल्पिक विषय के रूप में

कैप्टन (डॉ.) अपर्णा मिश्रा

ऐच्छिक (Elective) पाठ्यक्रम एक छात्र अपनी पसंद से लेता है। स्नातक स्तर की पढ़ाई के लिये ऐच्छिक विषय की आवश्यकता होती है। एक छात्र जो विशिष्ट वैकल्पिक पाठ्यक्रम लेता है वह छात्र द्वारा चुना जाता है। ऐसे विषय जो हमेशा वैकल्पिक पाठ्यक्रम होते हैं जैसे गृह, अर्थशास्त्र।

- स्नातक स्तर की पढ़ाई के लिये आवश्यक ऐच्छिक विषय जैसे ललित कला या विदेशी भाषा।
- अकादमिक विषय जो छात्र स्नातक आवश्यकता से परे लेता है जैसे कि गणित का चौथा वर्ष या विज्ञान का तीसरा या चौथा वर्ष।
- एक वैकल्पिक में उन्नत पाठ्यक्रम, उदाहरण के रूप में गिटार, वाद्य, कला या उन्नत गिटार के बाद स्टूडियो कला।

अपने क्षेत्र में ऐच्छिक का चयन करना भी बहुत लाभदायक होता है। उदाहरण के लिये कला, इतिहास या ऐतिहासिक साहित्य में डिग्री हासिल करने के दौरान आपके ज्ञान को बढ़ा सकता है। ऐच्छिक विषय छात्रो को पसंद की स्वतंत्रता देते हैं।

एन.सी.सी. एक वैकल्पिक विषय के रूप में :

- नई शिक्षा नीति में एन.सी.सी. को प्रोत्साहन देने का प्रावधान किया गया।
- छात्रों को अनुशासित करने तथा उनमें देशभक्ति की भावना पैदा करने हेतु उठाया गया कदम।

केंद्र सरकार की नई शिक्षा नीति में एन.सी.सी. को प्रोत्साहन देने का प्रावधान है। इसके तहत यूजीसी और ए. आई.सी.सी. ने अब सी.बी.सी.एस. के अन्तर्गत स्नातक के छात्रों को एन.सी.सी. को वैकल्पिक विषय के रूप में चुनने की मंजूरी दी है। विश्वविद्यालयी छात्रों को अनुशासित बनाने, उनमें एकता तथा देशभक्ति की भावना पैदा करने के लिये यह महत्वपूर्ण कदम है। जल्दी ही कई विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में एन.सी.सी. को एक वैकल्पिक विषय के रूप में शामिल कर सकते हैं। इससे छात्रों में अनुशासन और देशभक्ति की भावना विकसित होगी।

ऐच्छिक विषय के रूप में एन.सी.सी. से लाभ :

विश्व का सबसे बड़ा वर्दीधारी संगठन– एन.सी.सी. विश्व का सबसे बड़ा वर्दीधारी संगठन है। इसमें देश के लगभग 15 लाख कैडेट्स पंजीकृत हैं। एन.सी.सी. के मूल पाठ्यक्रम में आने के बाद कैडेट्स की मूलभूत शिक्षा को एक नई दिशा भी मिलेगी। शैक्षणिक संस्थान एन.सी.सी. में अधिक रुचि लेंगे तथा कैडेट्स को उचित संसाधन प्राप्त होंगे।

रोजगार हासिल करने में होगी आसानी– इसमें कैप के माध्यम से कैडेट्स को मैप रीडिंग, युद्ध कौशल, हथियार प्रशिक्षण इत्यादि सिखाकर उनमें शारीरिक तथा मानसिक दक्षता विकसित करने के साथ ही आपदा प्रबंधन, राष्ट्रीय सुरक्षा प्रबंधन, निर्णय कौशल तथा प्रभावी समाधान निकालने के गुण सिखाये जाएंगे जिससे कैडेट्स को भविष्य में रोजगार प्राप्त करने में आसानी होगी।

शारीरिक दक्षता के क्षमताओं का विकास– एन.सी.सी. की विभिन्न क्रियाविधियों के माध्यम से छात्रों में धैर्य, साहस, शारीरिक दक्षता व क्षमताओं का विकास होगा।

आपदा प्रबन्धन व राष्ट्रीय सुरक्षा प्रबंधन सीख सकेंगें– आपात स्थिति में एन.डी.आर.एफ. और एस.डी.आर.एफ. के साथ पुलिस की टीम काम करती है। कभी-कभी उन्हें घटना स्थल पर पहुँचने में देर हो जाती है। एन.सी.सी. के सक्रिय छात्रों के माध्यम से इस दिशा में एक अनूठी मदद और ताकत बनाया जा सकता है।

निर्णय कैशल व समस्याओं का प्रभावी समाधान करने में कुशल होंगे– एन.सी.सी. को ऐच्छिक विषय के रूप में शामिल करने से ज्यादा छात्र किसी भी समस्या के समाधान

में कुशल हो संकेगे तथा निर्णय कौशल भी उनमें विकसित हो सकेगा।

वर्तमान में स्कूल, कॉलेजों में एन.सी.सी. को सहशैक्षणिक गतिविधियों में सम्मिलित किया जाता है। पर अब कॉलेज शिक्षा में इसे विषय के रूप में भी दर्जा मिलने से विद्यार्थियों को करियर और व्यक्तित्व निर्माण के और बेहतर अवसर प्राप्त होगे।

राष्ट्रीय कैडेट् कोर के अतिरिक्त महानिदेशक मेजर जनरल भुरयां (एनई.आर.) ने कहा कि इससे कैडेट्स को विशेष रूप से बी और सी सर्टिफिकेट परीक्षाओं में शामिल होने वालों को एक बड़ा लाभ मिलेगा, जो कि दो से पाँच साल की निर्धारित अवधि के बाद प्रदान किया जाता है।

उन्होंने कहा कि, "यह नि:संदेह सबसे बड़े बर्दीधारी बल की अपील में इजाफा करेगा, जिसने 1948 से राष्ट्र निर्माण में अतुलनीय योगदान दिया है।"

मेजर जनरल भुइया ने कहा कि इस निर्णय के दूरगामी प्रभाव होंगे और यह NEP 2020 के अनुरूप है, जिसमें छात्र केवल संस्थानों द्वारा पेश किये जा रहे विषयों तक ही सीमित रहने के बजाए अपने पसंद के विषयों का चयन कर सकते हैं। इसका उद्देश्य सीखने को और अधिक समग्र और कौशल उन्मुख बनाना है, जो अंतत: कैरियर की सम्भावनाओं को सुगम बनाता है। पाठ्यक्रम के सफल समापन पर छात्रो को क्रेडिट अंक दिये जाते हैं, जो उन्हें उनकी संबंधित डिग्री में अर्हता प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।

ऐच्छिक विषय के रूप में एन.सी.सी. का स्वरूप :

केन्द्र सरकार की नई शिक्षा नीति में एन.सी.सी. को प्रोत्साहन देने के प्रावधान के अन्तर्गत यू.सी.जी. और ए.आई.सी.टी.इ. में विद्यार्थियों को एन.सी.सी. को वैकल्पिक विषय के रूप में चुनने की मंजूरी दे दी है। राष्ट्रीय कैडेट कोर से जुड़े कैडेट्स अब विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में एन.सी.सी. का वैकल्पिक विषय के रूप में चयन कर सकेंगे। इसके लिये महानिर्देशक के पत्र में स्पष्ट किया है कि अब एन.सी.सी. को बहुत अधिक आकर्षक बनाने व युवाओं को बेहतरीन तरीके से प्रशिक्षित करने के साथ उनकी प्रतिभाओं को आत्मसात करने के लिये एन.सी.सी.कैडेट को एन.सी.सी. बतौर वैकल्पिक विषय में पढ़ाया जाएगा।

24 कैडिट्स का होगा विषय। एन.सी.सी. कोंर्स 6 सेमेस्टर अर्थात तीन वर्ष का होगा। हर सेमेस्टर में सैद्धान्तिक और प्रयोगात्मक के क्रेडिट्स मिलेंगें। इसमें सैद्धान्तिक के 8 कैडिट्स और प्रेक्टिकल के 6 कैडिट्स और कैम्प 10 कैडिट्स का होगा। इस तरह से विषय में कुल 24 कैडिट्स होंगे। इस विषय को लेने वाले छात्र-छात्राओं को विभिन्न राज्य विश्वविद्यालयों के दाखिले में अलग-अलग भारांकों की व्यवस्था की गई है।

राष्ट्रीय कैडेट कोर, हमारे देश का एक प्रमुख वर्दीधारी युवा संगठन है, जिसने अपने स्थापना के समय से ही राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसने लाखों युवाओं के चरित्र को आकार देकर उन्हें एन.सी.सी. के आदर्श वाक्य 'एकता और अनुशासन' का मार्ग दिखाकर उनके जीवन को बदल दिया है।

शिक्षा मंत्रालय के उच्च शिक्षा विभाग के सचिव अमित खरे ने उल्लेख किया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2022 ने पहले ही समग्र शिक्षा, सामाजिक सेवा, सामुदायिक विकास आदि के महत्व को पहचाना है क्योंकि च्वॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम के तहत क्रेडिट पाठ्यक्रम और एन.सी.सी. प्रशिक्षण पहले से ही इस दायरे में आता है।

खरे ने यह भी बताया कि विश्वविद्यालयों और छात्रों के बीच जागरूकता और रुचि पैदा करने के लिये छात्रों को एन.सी.सी. क्रेडिट पाठ्यक्रम के लाभों को पर्याप्त रूप से प्रचारित करने की आवश्यकता है। उन्होंने एन.सी.सी. के महानिदेशक द्वारा किये जा रहे प्रयासों और कार्यान्वयन में सहायता करने के लिये विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में संलग्न राज्य निदेशालयों की सराहना की।

नियंता मण्डल

डॉ. पवन कुमार
मुख्य नियंता

हमारे महाविद्यालय में प्रतिवर्ष नियंता मण्डल द्वारा छात्र कार्य परिषद का गठन किया जाता है, जिसका मुख्य उद्देश्य छात्राओं के द्वारा छात्राओं में अनुशासन कायम करना है।

महाविद्यालय के द्वारा छात्राओं में अनुशासन कायम करने हेतु नियता मण्डल का गठन किया गया है जिसमें मुख्य नियंता व सात प्रवक्ता की एक संयुक्त टीम महाविद्यालय में अध्ययन-अध्यापन हेतु छात्र हित में शैक्षिक माहौल व अनुशासन बनाये रखने में सहयोग प्रदान करती है। नियंता मण्डल द्वारा महाविद्यालय मे पोशाक चेकिंग, प्रार्थना सभा में अनुशासन व महाविद्यालय कैम्पस में साफ-सफाई हेतु छात्राओं को समय-समय पर निर्देशित किया जाता है। प्रत्येक सांस्कृतिक कार्यकमों व पाठ्येत्तर क्रिया-कलापों में स्व-अनुशासन हेतु छात्राओं को प्रेरित किया जाता है।

इस वर्ष भी छात्र कार्यपरिषद का चुनाव हुआ जिसमें महाविद्यालय के सभी छात्राओं ने अपने प्रतिनिधि का चुनाव मतों के माध्यम से किया। छात्र कार्य परिषद में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, महामंत्री व सांस्कृतिक मंत्री का चुनाव हुआ जिसमें क्रमशः खुशी यादव, मुस्कान श्रीवास्तव, वशिका कुशवाहा व प्रिया त्रिपाठी को छात्र प्रतिनिधि के रूप में चुना गया।

पुरातन छात्र परिषद्

डॉ. आस्था प्रकाश
समन्वयक - पुरातन छात्र परिषद्

1990 में संचालित यह महाविद्यालय महिला शिक्षा के क्षेत्र में एक संकल्प के साथ प्रारम्भ किया गया जो कि हमारे गुरुजी आदरणीय स्वर्गीय डॉ. रामरक्षा पाण्डेय जी के द्वारा इस महाविद्यालय की स्थापना महिलाओं को सुरक्षित शिक्षा प्रदान कर उनको अपने जीवन में सर्वांगीण विकास के उद्देश्य को ध्यान में रखकर की गयी। उनके सपनों को साकार करती यहाँ की छात्राएं वर्तमान समय में देश-विदेश में अपना परचम लहरा रही हैं। पुरातन छात्र परिषद् की स्थापना का उद्देश्य समय-समय पर उन महाविद्यालय परिसर में एकत्र करना है जिससे सभी छात्राएँ एक दूसरे से जुड़ी रहें तथा उनके अनुभव से दूसरी छात्राएँ भी लाभान्वित हो सकें।

महाविद्यालय में स्थापित पुरातन छात्र परिषद् एक रजिस्टर्ड परिषद् के रूप में संचालित है।

राष्ट्रीय सेवा योजना

डॉ. आस्था प्रकाश
समन्वयक- राष्ट्रीय सेवा योजना
ज्ञानदा ईकाई

चन्द्रकन्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज 1990 में स्थापित महिला शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी यह संस्थान बालिकाओं को जीवन में आत्मनिर्भर बनाने के साथ ही नैतिकता युक्त शिक्षा प्रदान करने के लिए पूरे पूर्वांचल में विख्यात है। इस महाविद्यालय में शिक्षा प्रदान करने के साथ ही छात्राओं को अन्य शिक्षणेत्तर क्रियाकलापों पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है जिसके तहत महाविद्यालय में "राष्ट्रीय सेवा योजना (N.S.S.)" की दो इकाईयां 1993 में संचालित की गयी थीं जिसकी प्रथम कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मंजू सिंह प्रवक्ता-समाजशास्त्र रहीं। इसके पश्चात "राष्ट्रीय सेवा योजना" के अन्तर्गत संचालित इकाईयाँ सामाजिक उत्थान हेतु अनेक जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन समय-समय पर करती रहीं। परिणाम स्वरूप दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय द्वारा आवंटित इकाईयों में एक संख्या को और बढ़ा दिया गया जिससे महाविद्यालय में कुल तीन इकाईयाँ संचालित हैं जो वर्तमान समय में कार्यरत हैं। महाविद्यालय परिसर का सकारात्मक वातावरण छात्राओं को जीवन पथ पर आगे बढ़ने में सहायता करती है। इस वातावरण से प्रेरित होकर यहाँ की स्वयंसेविका रुचि तिवारी ने पूर्व गणतंत्र दिवस परेड में चयनित हो महाविद्यालय का मान बढ़ाया। इसके पश्चात् सन् 2017 में पूजा प्रजापति के द्वारा दिल्ली में 26 जनवरी को राजपथ पर परेड कर विश्वविद्यालय के साथ ही महाविद्यालय का मान बढ़ाया। इसके पश्चात् 2018 में रचना गुप्ता के द्वारा 26 जनवरी 2019 को दिल्ली राजपथ पर परेड तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम कर महाविद्यालय का मानसम्मान बढ़ाया गया।

वर्तमान में महाविद्यालय की तीन इकाईयाँ ज्ञानदा, विजया तथा प्रेरणा संचालित हैं, जिसके द्वारा समाज में जागरुकता कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है। इसके अतिरिक्त स्वयंसेविकाओं के द्वारा श्रमदान के महत्त्व को बताते हुए स्वच्क्षता कार्यक्रम, साक्षरता कार्यक्रम, नशा मुक्ति कार्यक्रम, प्लास्टिक निषेध कार्यक्रम संचालित कर कपड़े से बने झोले का वितरण इत्यादि जागरूकता के कार्यक्रम संचालित किये जाते हैं जिसमें वर्ष भर में स्वयंसेविकाओं के द्वारा कुल 120 घंटे का कार्य किया जाता है तथा एक विशेष शिविर का आयोजन होता है जो एक विशेष शिविर का आयोजन होता है।

स्वस्थ समाज की रीढ़ है- फिट इण्डिया मूवमेंट

डॉ. अमिता अग्रवाल
समन्वयक-क्रीड़ा परिषद समिति

मैं फिट तो इंडिया फिट के उद्देश्य को पूर्ण करने का प्रयास महाविद्यालय की क्रीड़ा परिषद समिति द्वारा किया जा रहा है जिसका मुख्य उद्देश्य छात्राओं के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ खेल के क्षेत्र में रुचि बढ़ाना है। इसमें न केवल विभिन्न खेलों के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और तकनीकें शामिल हैं बल्कि खेल भावना को बढ़ावा देना भी शामिल हैं। जो कड़ी मेहनत, सहयोग, रणनीति बनाने और अच्छे संस्कार जैसे गुणों के साथ आती हैं।

उपरोक्त लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समिति वर्ष भर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन करती है। इसके साथ ही विभिन्न ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताओं जैसे- स्पोर्ट्स क्विज आदि का आयोजन करती है।

महाविद्यालय क्रीड़ा परिषद समिति का गठन सत्रारम्भ (जुलाई-अगस्त माह) में पूर्ण करते हुए सदस्यों का चयन

क्रीड़ाध्यक्ष, सह-क्रीड़ाध्यक्ष और सदस्यगण के रूप में किया जाता है। महाविद्यालय का प्रत्येक सदस्य स्वस्थ रहे, जिसके लिए समिति द्वारा प्रत्येक सप्ताह के शनिवार को योगा, मेडिटेशन की कक्षाएं कुशल प्रशिक्षक द्वारा करवायी जाती है। साप्ताहिक कार्ययोजना के अन्तर्गत सदस्यों की एक टीम गठित की जाती है, जिसके अन्तर्गत 2 छात्राएं, 1 प्रशिक्षक तथा 1 चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी द्वारा महाविद्यालय के समक्ष स्थित कालोनी एवं बस्तियों में जाकर उन्हें स्वस्थ रहने के उचित तरीके बताये जाते हैं।

महाविद्यालय में प्रतिभागियों के सर्वांगीण विकास हेतु दो प्रकार की खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं– 1. इन्डोर गेम 2. आउटडोर गेम।

इन्डोर गेम के अन्तर्गत शतरंज, कैरम जैसे खेलों का आयोजन और आउटडोर गेम के अन्तर्गत समस्त एथलेटिक्स खेलों जैसे 100, 200, 400 मी., 4x100 रिले रेस, डिस्कस, जैवलिन, लाँग जम्प, हाई जम्प आदि खेलों के द्वारा छात्राओं को वर्ष में दो बार अर्धवार्षिक एथेलेटिक्स मीट (अक्टूबर-नवम्बर माह में) और वार्षिक एथेलेटिक्स मीट विश्वविद्यालय एवं अपने महाविद्यालय में आयोजित की जाती हैं जिसमें प्रत्येक प्रतिभागी को प्रतिभाग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। साथ हो छात्राओं को मेडल और सर्टिफिकेट भी प्रदान किया जाता है।

अपने प्रदेश का पारम्परिक खेल कबड्डी, खो-खो का भी आयोजन क्रीड़ा परिषद समिति द्वारा दिसम्बर माह में किया जाता जिसका मुख्य उद्देश्य छात्राओं को अपने पारम्परिक खेलों को जानने-समझने का अवसर प्राप्त हो और वो इसमें जोश के साथ प्रतिभाग कर सकें।

अपने स्वराज्य का ध्येय वाक्य हिट इंडिया, फिट इंडिया को साकार रूप देने में प्रयासरत हमारी समिति अपने प्रत्येक सदस्यों के साथ कार्य कर रही है जिससे छात्राओं का सर्वांगीण विकास हो सके।

छात्रहित सर्वोपरि

डॉ. अमिता अग्रवाल
समन्वयक-छात्र कल्याण समिति

महाविद्यालय में नियुक्त छात्र कल्याण समिति सदैव छात्रहित के लिए तत्पर रहती है। शिक्षा के इस बागान में छात्राओं के रूप में स्थित पुष्पों की देखरेख, उनके समस्याओं का समाधान, उनमें लिखने-पढ़ने के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में रूचि लेने हेतु प्रेरित करने का कार्य, उनके शारीरिक परिक्षण हेतु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया जाता है। छात्राओं के लिए वर्तमान सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव से उनको अवगत कराने का प्रयास एवं क्रीड़ा समारोह के पश्चात् जलपान एवं भोजन की व्यवस्था करना आदि विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से छात्र कल्याण समिति के प्रत्येक सदस्य अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए कार्य करते है।

छात्र कल्याण समिति का गठन सत्रारम्भ (जुलाई-अगस्त) माह में होता है। सदस्यों के रूप में समन्वयक एवं पांच सदस्यों की एक टोली निर्धारित की जाती है। जिसके द्वारा वर्षभर विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा छात्राओं में जागरूकता लाने का प्रयास किया जाता है, किसी भी प्रकार की मानसिक कुठाओं में छात्राएं न जाये उसके लिए "अपनी बात" नामक एक मासिक कार्यक्रम आयोजित की जाती है। जिसके माध्यम से छात्राएं अपने जीवन की जटिल समस्याओ को हमारे साथ साझा करती है। इन समस्याओं का निवारण मनोवैज्ञानिक विधि द्वारा समिति के सदस्यगण करने का प्रयास करते हैं।

महाविद्यालय प्रबन्ध समिति

1.	श्री पुष्पदंत जैन	अध्यक्ष
2.	डॉ. चक्रपाणि पाण्डेय	उपाध्यक्ष
3.	श्रीमती शशि शर्मा	सदस्य
4.	डॉ. राजेश्वरकान्त मिश्र	सदस्य
5.	श्रीमती निर्मला सिंह	सदस्य
6.	श्री सन्तोष कुमार अग्रवाल	सदस्य
7.	श्री अनुपम कुमार जैन	सदस्य
8.	श्री अनिल कुमार अग्रवाल	सदस्य
9.	श्रीमती गीता	प्राचार्य
10.	डॉ. सुमन सिंह	प्राचार्य (पदेन सदस्य)
11.	डॉ. रेखा श्रीवास्तव	शिक्षक प्रतिनिधि (पदेन सदस्य)
12.	श्री नरेन्द्र सिंह रावत	शिक्षणेत्तर कर्मचारी प्रतिनिधि (पदेन सदस्य)

महाविद्यालय की विभिन्न समितियाँ एवं समन्वयक

1.	प्रवेश समिति	डॉ. विकास कुमार श्रीवास्तव
2.	प्लेसमेण्ट सेल	डॉ. स्वप्निल पाण्डेय
3.	पुस्तकालय समिति	श्रीमती श्रद्धा मिश्रा
4.	छात्र कल्याण समिति	डॉ. अमिता अग्रवाल
5.	ऐण्टी रैगिंग महिला सुरक्षा	डॉ. प्रीति त्रिपाठी
6.	पर्यावरण सुरक्षा समिति	श्रीमती प्रिया/श्रीमती आकृति सिंह
7.	क्रीड़ा परिषद समिति	डॉ. अमिता अग्रवाल
8.	पुरातन छात्र परिषद समिति	डॉ. आस्था प्रकाश
9.	निर्देशन एवं परामर्श समिति	डॉ. सारिका जायसवाल
10.	शिकायत निराकरण प्रकोष्ठ	सुश्री अर्चना श्रीवास्तव
11.	स्वास्थ्य सुरक्षा समिति	डॉ. अनीता सिंह
12.	शोध प्रकोष्ठ	डॉ. अर्पणा मिश्रा
13.	प्रतिपुष्टि प्रकोष्ठ	डॉ. विरेन्द्र गुप्ता
14.	उद्यमिता प्रकोष्ठ	डॉ. रीता
15.	अभिभावक शिक्षक संघ	डॉ. रेखारानी शर्मा
16.	एन.सी.सी.	कैप्टन (डॉ.) अपर्णा मिश्रा
17.	एन.एस.एस.	डॉ. आस्था प्रकाश (ज्ञानदा ईकाई) डॉ. रेखा रानी शर्मा (प्रेरणा ईकाई) श्रीमती पूजा गुप्ता (विजया ईकाई)
18.	रोवर्स रेंजर्स	डॉ. रेखा रानी शर्मा

महाविद्यालय परिवार

क्रम सं.	नाम	पदनाम	विभाग
1.	डॉ ज्योत्स्ना त्रिपाठी	विभागाध्यक्ष	दृश्यकला विभाग
2.	डॉ. रेखा रानी शर्मा	सहा. आचार्य	दृश्यकला विभाग
3.	डॉ. स्वप्निल पाण्डेय	विभागाध्यक्ष	राजनीति शास्त्र विभाग
4.	डॉ. प्रीति त्रिपाठी	सहा. आचार्य	राजनीति शास्त्र विभाग
5.	सुश्री श्रेया द्विवेदी	सहा. आचार्य	राजनीति शास्त्र विभाग
6.	डॉ. सारिका जायसवाल	विभागाधयक्ष	गृहविज्ञान विभाग
7.	डॉ. प्रियम्बदा त्रिपाठी	सहा. आचार्य	गृहविज्ञान विभाग
8.	डॉ. अनीता सिंह	सहा. आचार्य	गृहविज्ञान विभाग
9.	श्रीमती पूजा गुप्ता	सहा. आचार्य	गृहविज्ञान विभाग
10.	श्रीमती सुनिधि गुप्ता	सहा. आचार्य	गृहविज्ञान विभाग
11.	डॉ. रीता	सहा. आचार्य	गृहविज्ञान विभाग
12.	सुश्री अर्चना	सहा. आचार्य	गृहविज्ञान विभाग
13.	डॉ. आस्था प्रकाश	विभागाधयक्ष	शिक्षाशास्त्र विभाग
14.	डॉ. पवन कुमार	सहा. आचार्य	शिक्षाशास्त्र विभाग
15.	डॉ. शिवानी श्रीवास्तव	सहा. आचार्य	शिक्षाशास्त्र विभाग
16.	डॉ. धीरज कुमार	विभागाधयक्ष	वाणिज्य विभाग
17.	सुश्री अंकिता उपाध्याय	सहा. आचार्य	वाणिज्य विभाग
18.	सुश्री कृति पाण्डेय	सहा. आचार्य	वाणिज्य विभाग
19.	श्रीमती अंजलि शुक्ला	विभागाधयक्ष	कम्प्यूटर विभाग
20.	श्री शंकर थापा	सहा. आचार्य	कम्प्यूटर विभाग
21.	श्री अरूण मणि पाण्डेय	सहा. आचार्य	संस्कृत विभाग
22.	डॉ. सुमन सिंह	सहा. आचार्य	हिन्दी विभाग
23.	डॉ. अमिता अग्रवाल	सहा. आचार्य	प्राचीन इतिहास विभाग
24.	श्रीमती आकृति सिंह	सहा. आचार्य	अंग्रेजी विभाग
25.	श्रीमती प्रिया	सहा. आचार्य	समाजशास्त्र विभाग
26.	डॉ. निशा श्रीवास्तव	विभागाधयक्ष	मंचकला विभाग
27.	श्री जसवन्त सिंह	सहा. आचार्य	मंचकला विभाग

शिक्षक-प्रशिक्षण विभाग

बी. एड. विभाग

1.	डॉ. अपर्णा मिश्रा	विभागाध्यक्ष
2.	डॉ. इतन्द्रधार दूबे	वरिष्ठ प्रवक्ता
3.	डॉ. ममता तिवारी	सहायक आचार्य
4.	डॉ. विकास श्रीवास्तव	सहायक आचार्य
5.	श्री अनन्त पाठक	सहायक आचार्य
6.	श्री शैलेन्द्र राव	सहायक आचार्य
7.	डॉ. श्वेता सिंह	सहायक आचार्य
8.	श्रीमती रिचा दूबे	सहायक आचार्य
9.	डॉ. सारिका पाण्डेय	सहायक आचार्य
10.	श्री पशुपति नाथ सिंह	सहायक आचार्य
11.	श्री धीरज	सहायक आचार्य
12.	श्री अवधोश कुमार	सहायक आचार्य
13.	श्री त्रिभुवन यादव	सहायक आचार्य
14.	श्रीमती दिव्या दूबे	सहायक आचार्य
15.	डॉ. मधुरिमा तिवारी	सहायक आचार्य
16.	डॉ. सुमनलता यादव	सहायक आचार्य

एम.एड. विभाग

1.	डॉ. रेखा श्रीवास्तव	विभागाधयक्ष
2.	डॉ. विरेन्द्र गुप्ता	सहायक आचार्य
3.	श्रीमती सरिता पाण्डेय	सहायक आचार्य
4.	श्रीमती देवता पाण्डेय	सहायक आचार्य
5.	श्रीमती सोनू दूबे	सहायक आचार्य
6.	डॉ. अतुल किशोर शाही	सहायक आचार्य

पुस्तकालय स्टॉफ

1.	श्रीमती श्रद्धा मिश्रा	पुस्तकालयाध्यक्ष
2.	श्रीमती प्रियंका जायसवाल	सहायक पुस्कालयाध्यक्ष

तकनीकी स्टॉफ

1.	सुश्री पलक	2.	सुश्री पल्लवी
3.	सुश्री श्वेता	4.	सुश्री श्रद्धा
5.	सुश्री सृष्टि	6.	गरिमा पाण्डेय

कर्मचारी मण्डल (तृतीय श्रेणी)

1.	श्री नरेन्द्र सिंह	वरिष्ठ कार्यालय सहायक
2.	श्रीमती मंजु द्विवेदी	कार्यालय सहायक
3.	श्रीमती सुमन यादव	कार्यालय सहायक
4.	श्री जयदेव यादव	कार्यालय सहायक
5.	श्री अजय प्रताप शाही	कार्यालय सहायक
6.	श्रीमती विनीता आर्या	कार्यालय सहायक
7.	सुश्री अंजली कुशवाहा	कार्यालय सहायक
8.	श्री उदयभान पाण्डेय	कार्यालय सहायक

परिचारक गण (चतुर्थ श्रेणी)

1.	श्री अच्छेलाल	परिचर
2.	श्री तेज प्रताप	परिचर
3.	श्रीमती सुहागी देवी	परिचर
4.	श्री शैलेष	परिचालक
5.	श्री गोपाल प्रसाद	परिचर
6.	श्री हयात सिंह रावत	परिचर
7.	श्री राजेश	परिचर
8.	श्री दिनेश चन्द	परिचर
9.	श्रीमती सीमा गौड़	परिचर
10.	श्री ओम प्रकाश	परिचर
11.	श्रीमती संगीता	परिचर
12.	श्रीमती सुनीता	परिचर
13.	श्रीमती शिल्पा शाह	परिचर
14.	श्री करन	स्वीपर
15.	श्री रामबदन	माली

> खुद की तरक्की में इतना वक़्त लगा दो,
> कि किसी दूसरे की बुराई करने का वक़्त न मिले।

वन्दे मातरम्

सुजलां सुफलाम्
मलयजशीतलाम्
शस्यश्यामलाम्
मातरम्।

शुभ्रज्योत्स्नापुलकितयामिनीम्
फुल्लकुसुमितद्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्।

सप्त-कोटि-कण्ठ-कल-कल-निनाद-कराले
द्विसप्त-कोटि-भुजैर्धृत-खरकरवाले,
अबला केन मा एत बॅले
बहुबलधारिणीं
नमामि तारिणीं
रिपुदलवारिणीं
मातरम्।

तुमि विद्या, तुमि धर्म
तुमि हृदि, तुमि मर्म
त्वम् हि प्राणाः शरीरे
बाहुते तुमि मा शक्ति,
हृदये तुमि मा भक्ति,
तोमारई प्रतिमा गडी मन्दिरे-मन्दिरे।।

त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
कमला कमलदलविहारिणी
वाणी विद्यादायिनी,
नमामि त्वाम्
नमामि कमलाम्
अमलां अतुलाम्
सुजलां सुफलाम्
मातरम्।।

भारत माता की जय!!

जीवन में सफलता के लिए लक्ष्य का करें निर्धारण : डॉ. अश्वनी मिश्रा

गोरखपुर (एसएनबी)। चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पीजी कॉलेज गोरखपुर की बीएड छात्राध्यापिकाओं के स्वागत समारोह में डॉ. अश्विनी मिश्रा क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी ने

सीआरडीपीजी में बीएड की छात्राओं का स्वागत कार्यक्रम

महावि.कार्यपरिषद के निवाचित सदस्यों ने ली शपथ

सीआरडीपीजी कालेज आयोजित कार्यक्रम में मुख्यअतिथि पुष्पदंत जैन,प्रवंधक विजय लक्ष्मी,प्रो. अर्चना मिश्रा के साथ नवनिर्वाचित कार्य परिषद की छात्राएं।

बतौर मुख्य अतिथि कहा कि जीवन में सफल होने के लिये लक्ष्य का निर्धारण करें। बिना लक्ष्य निर्धारित किये आगे बढ़ने पर रास्ता दिशाहीन हो जाता है। विशिष्ट अतिथि प्रो. अर्चना मिश्रा विभागाध्यक्ष बीएड विभाग अग्रसेन डिग्री कॉलेज, सिद्धार्थनगर ने कहा कि शिक्षक अपने दायित्व का सही तरीके से निर्वहन करे तो समाज स्वस्थ एवं विकसित होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे पुष्पदन्त जैन अध्यक्ष प्रवन्ध समिति, उपाध्यक्ष व्यापारी कल्याण बोर्ड एवं दर्जा प्राप्त राज्यमंत्री ने कहा कि शिक्षक वनकर आप सभी समाज को नयी और उत्तम दिशा प्रदान कर सकते है इसके लिये अपने विचार और व्यवहार में बदलाव लायें। प्रबन्धक डॉ. विजयलक्ष्मी मिश्रा ने अतिथि का स्वागत किया। इस अवसर पर कार्यपरिषद निर्वाचित सदस्यों का स्वागत एवं माल्यार्पण हुआ। जिसमें मुख्य रूप से अध्यक्ष छवि श्रीवास्तव, उपाध्यक्ष अंजू तिवारी, महामंत्री प्रतिमा कुशवाहा, कोषाध्यक्ष तंजीम फातमा, सांस्कृति मंत्री संजू यादव तथा कार्यकारी सदस्य के रूप में चांदनी, तन्वी, श्रुति, रूपल, श्रुतिमा, शिवानी, मेधा, श्रेया, सुमन ने शपथ ली। कार्यक्रम में प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम की सराहना सभी ने की। कार्यक्रम का संचालन बीएड छात्राध्यापिका श्रेया और शालिनी ने किया।

चंद्रकांति रमावती देवी आर्य महिला पीजी कॉलेज की तीन छात्राओं को कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने सम्मानित किया। अमर उजाला

कुलपति ने सीआरडी की तीन छात्राओं को किया सम्मानित

गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने चंद्रकांति रमावती देवी आर्य महिला पीजी कॉलेज की तीन छात्राओं को उनकी उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए सम्मानित कर प्रोत्साहित किया।

सीनियर अंडर अफसर अनिन्दया सिंह ने गणतंत्र दिवस परेड में उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व कर गोरखपुर का मान बढ़ाया। छात्रा तान्या श्रीवास्तव ने युवा महोत्सव में गोरखपुर विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया। छात्रा रूक्मिणी ने राष्ट्रीय युवा महोत्सव नासिक में गोरखपुर विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।

कुलपति ने कहा कि ये छात्राएं इसी प्रकार आगे बढ़ती रहें और गोरखपुर विश्वविद्यालय का नाम रोशन करती रहें। इस अवसर पर महाविद्यालय प्रबंधक डॉ. विजयलक्ष्मी मिश्रा, प्राचार्य डॉ. सुमन सिंह, एनसीसी अधिकारी कैप्टन (डॉ.), अपर्णा मिश्रा बीए विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. इतेंद्र धर दूबे एवं डॉ. रेखा रानी शर्मा उपस्थित रहीं। संवाद

गोरखपुर। शुक्रवार • 6 जनवरी • 2023 | राष्ट्रीय सहारा

दिलायी गयी सड़क सुरक्षा की शपथ

गोरखपुर(एसएनबी)। सीआरडी पीजी कालेज गोरखपुर में सड़क सुरक्षा माह के अंतर्गत सड़क सुरक्षा हेतु शपथ ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमे महाविद्यालय के समस्त छात्राओं, प्रवक्ताओं एवं कर्मचारियो को यातायात नियमो के अंतर्गत दोपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट पहनने, मोबाइल फोन इस्तेमाल न करने, कार चलाते समय सीटबेल्ट लगाने एवं दुर्घटना पीड़ित की मदद करने हेतु शपथ दिलाया गया।

कार्यक्रम में महाविद्यालय की प्रबंधक डॉ. विजयलक्ष्मी मिश्रा ने यातायात सुरक्षा नियमों का पालन स्वयं तथा परिवारजनों से कराने के लिए सभी को प्रेरित किया। कार्यक्रम का संचालक महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. सुमन सिंह, उपप्राचार्य स्वप्निल पांडेय ने किया। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के समस्त प्रवक्तागण एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

सीआरडी पीजी कॉलेज में छात्राओं को सड़क सुरक्षा की शपथ दिलाती शिक्षिकाएं। फोटो : एसएनबी

सीआरडी बीएड विभाग व रोवर रेंजर के पाँच दिवसीय स्काउट गाइड प्रशिक्षण का हुआ समापन

निर्वाण टाइम्स

गोरखपुर। चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पीजी कॉलेज गोरखपुर के बीए विभाग एवं रेंजर टीम के स्काउट गाइड प्रशिक्षण का आज समापन हुआ। इस अवसर मुख्य अतिथि महेश कुमार सिंह कोषाध्यक्ष स्काउट-गाइड प्रधानाचार्य रफी अहमद किदवई इण्टर कॉलेज गोरखपुर ने गाइड और रेजर्स को सम्बोधित करते हुए कहा कि स्काउटिंग एवं गाइडिंग एक अन्तर्राष्ट्रीय आंदोलन' है जो युवा लड़के और लड़कियाँ में दूसरों के लिए निष्ठा, देशभक्ति और सावधानी की एक भावना पैदा करना चाहते है। इसके पूर्व कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्जवलन एवं माँ सरस्वती की आराधना के साथ हुआ। प्रवन्धक डॉ० विजयलक्ष्मी मिश्रा ने अतिथि परिचय एवं स्वागत किया। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित हुई जिसमें विजेताओ को पुरस्कृत किया गया। सर्वश्रेष्ठ टेन्ट एवं सफाई के लिए अहिल्याबाई, सर्वश्रेष्ठ भोजन एवं प्रस्तुतीकरण के लिए लता मंगेशकर सर्वश्रेष्ठ सास्कृतिक कार्यक्रम के लिए कल्पना चावला, सर्वश्रेष्ठ अनुशासन के लिए मैरीकाम, सर्वश्रेष्ठ मुकुट एवं बैज के लिए बछेन्द्री पाल, सर्वश्रेष्ठ गमला के लिए लक्ष्मीवाई, सर्वश्रेष्ठ उत्तम वहु तथा शर्ट के लिए मदर टेरेसा बेस्ट इन आल कैटगरी- मीराबाई, बेस्ट रेंजर- प्रगति पाण्डेय बेस्ट गाइड फातिमा खान को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन छात्राध्यापिका हर्षिता ने किया तथा आभार ज्ञापन प्राचार्य डॉ० सुमन सिंह ने किया।इस अवसर पर बीए विभागाध्यक्ष डॉ० अपर्णा मिश्रा, मुख्य प्रशिक्षक जिला संगठन कमिश्नर इशरत सिद्धिकी, प्रशिक्षक शाइस्ता इस्लाम, खुशबू रेंजर लीडर डॉ० रेखा रानी शर्मा, बीएड विभाग से डॉ० इतेन्द धर दूबे, डॉ० ममता तिवारी,अनन्त डॉ० विकास कुमार श्रीवास्तव, श्रीमती श्वेता सिंह, श्रीमती ऋचा दूबे, शैलेन्द्र कुमार राव, श्रीमती समरका पाण्डेय तथा महाविद्यालय के अन्य शिक्षकगण भी उपस्थित रहे।

एनसीसी ने 'पुनीत सागर अभियान' का आयोजन किया

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की परिकल्पना को ध्यान में रखते हुए 15 यूपी गर्ल्स बटालियन की एनसीसी कैडेट्स द्वारा प्लास्टिक और अन्य प्रकार के कचरे से नदियों और झीलों तथा अन्य जल स्त्रोतों को साफ करने के लिये राष्ट्रव्यापी प्रमुख अभियान 'पुनीत सागर अभियान' आज नगर के सूरजकुण्ड में स्थित 'सूरजकुण्ड धाम पर आयोजित किया गया। इस आयोजन में गोरखपुर के चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पीजी कॉलेज,गोरखपुर,अयोध्यादास राजकीय इण्टर कॉलेज, सेण्ट जोसेफ कॉलेज तथा, महाराणा प्रताप महाविद्यालय,रमदत्तपुर की लगभग 100 एनसीसी कैडेट्स ने प्रतिभाग किया। एनसीसी अधिकारी लेफ्टिनेंट (डा०) अपर्णा मिश्रा ने अभियान का उद्देश्य बताते हुए कहा कि स्थानीय लोगों को स्वच्छ भारत के बारे में जागरूक करना और उन्हें संवेदनशील बनाना है। जलाशयों के किनारों को साफ रखने के महत्व के बारे में स्थानीय आजादी और आने वाली पीढ़ियों के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिये इसकी परिकल्पना की गयी है। इस अवसर पर एडी कॉलेज की एनसीसी अधिकारी कैप्टन अनामिका सेण्ट जोसेफ से लेफ्टिनेट स्वाति 15 यू०पी० गर्ल्स बटालियन से जीसीआई सीमा राय तथा नायक सूर्यपाल उपस्थित रहे।

अंबेडकर जन मोर्चा के तत्वाधान में दलित अधिकार रैली 17 दिसंबर को गोकुल अतिथि भवन में आयोजित

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। अंबेडकर जन मोर्चा के तत्वाधान में दलित पिछड़ा भूमिहीन हर गरीब परिवार को एक एकड़ जमीन दिलाने के लिए दलित अधिकार रैली का आयोजन 17 दिसंबर दिन शनिवार को गोकुल अतिथि भवन में प्रातः 11:00 बजे से आयोजित किया गया है

कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि एसआर दारापुरी रिटायर्ड आईपीएस, दद्दू प्रसाद पूर्व मंत्री, त्रिभुवन दत्त विधायक, जिग्नेश मेवानी विधायक, प्रो.डॉक्टर चंद्र भूषण अंकुर गोरखपुर विश्वविद्यालय, अलख निरंजन लेखक सामाजिक चिंतक, डॉ.रामू सिद्धार्थ पत्रकार साहित्यकार , रामकुमार सामाजिक कार्यकर्ता लखनऊ, एवं शोभना मशाल सामाजिक कार्यकर्ता जौनपुर होंगे। अध्यक्षता अंबेडकर जनमोर्चा के मुख्य संयोजक श्रवण कुमार निराला करेंगे। मुख्य संयोजक श्रवण कुमार निराला ने लोगों से अपील की है इस दलित अधिकार रैली में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर के इस कार्यक्रम को सफल बनाएं।

कुलपति ने सी०आर०डी० की छात्राओं को किया सम्मानित

निर्वाण टाइम्स

गोरखपुर। प्रोफेसर पूनम टंडन कुलपति दीनदयाल विश्वविद्यालय गोरखपुर द्वारा चंद्रकांती रमावती देवी आर्य महिला पीजी कॉलेज गोरखपुर की तीन छात्राओं को उनके उत्कृष्ट उपलब्धि हेतु सम्मानित कर प्रोत्साहित किया। सीनियर अण्डर अफसर अनिन्दया सिंह ने गणतंत्र दिवस परेड में उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व कर गोरखपुर का मान बढ़ाया। छात्रा तान्या श्रीवास्तव ने युवा महोत्सव में गोरखपुर विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया तथा छात्रा रूक्मिणी ने राष्ट्रीय युवा महोत्सव नासिक में गोरखपुर विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया। कुलपति ने कहा कि ये छात्राएं इसी प्रकार आगे बढ़ती रहें और गोरखपुर विश्वविद्यालय का नाम रोशन करती रहें।इस अवसर पर महाविद्यालय प्रबन्धक डॉ० विजयलक्ष्मी मिश्रा, प्राचार्य डॉ० सुमन सिंह, एनसीसी अधिकारी कैप्टन (डा०) अपर्णा मिश्रा बीए विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ० इतेन्द्र धर दूबे तथा डॉ0 रेखा रानी शर्मा उपस्थित रहे। सभी ने छात्राओं को बधाई दी तथा उनके उज्जवल भविष्य की शुभकामना दी।

amarujala.com

गोरखपुर | मंगलवार, 17 जनवरी 2023 7

एनसीसी कैडेट्स ने लोगों को यातायात सुरक्षा के बारे में बताया

संवाद न्यूज एजेंसी

सीआरडीपीजी कॉलेज की छात्राओं ने रैली निकालकर जागरूक किया। संवाद

गोरखपुर। सीआरडीपीजी कॉलेज में 15 यूपी गर्ल्स बटालियन की ओर से जागरुकता रैली का आयोजन सोमवार को किया गया। जहां, एनसीसी कैडेट्स ने बिना हेलमेट के वाहन चला रहे लोगों को रोककर हेलमेट लगाने और चार पहिया वाहनों को सीट बेल्ट लगाने की अपील की। बताया कि युवा जागरूक होगा तभी देश का भविष्य सुरक्षित रहेगा।

महाविद्यालय की प्रबंधक डॉ. विजयलक्ष्मी मिश्रा ने कहा कि लगातार बढ़ रही सड़क दुर्घटनाओं की बड़ी वजह सुरक्षा संबंधी नियमों के प्रति लोगों की उदासीनता होती है। एनसीसी अधिकारी लेफ्टिनेंट डॉ. अपर्णा मिश्रा के नेतृत्व में सड़क सुरक्षा नियमों के पालन को लेकर जागरुकता अभियान चलाया।

इसी कड़ी में लोगों को सड़क सुरक्षा के प्रति शपथ दिलाई। प्राचार्य डॉ. सुमन सिंह ने कैडेट्स का उत्साहवर्धन करते हुए उनके प्रयासों की सराहना की। इस अवसर पर लोगों तथा कैडेट्स को सड़क सुरक्षा के संबंध में शपथ भी दिलाई गई।

सीआरडीपीजी कालेज में स्काउट-गाइड प्रशिक्षण शिविर शनिवार को संपन्न हो गया।

देशभक्ति की भावना पैदा करता है स्काउट-गाइड

गोरखपुर। सीआरडी आर्य महिला पीजी कॉलेज में आयोजित पांच दिवसीय रेंजर टीम के स्काउट-गाइड प्रशिक्षण का शनिवार को समापन हो गया। मुख्य अतिथि रफी अहमद किदवई इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य महेश कुमार सिंह ने कहा कि स्काउटिंग एवं गाइडिंग युवाओं में निष्ठा, देशभक्ति और सावधानी की भावना पैदा करता है। पूर्व प्रबंधक डॉ विजयलक्ष्मी मिश्रा, छात्राध्यापिका हर्षिता, प्राचार्य डॉ सुमन सिंह, डॉ अपर्णा मिश्रा, इशरत सिद्दिकी, शाइस्ता इस्लाम, खुशबू, डॉ रेखा रानी शर्मा, डॉ इतेन्द धर दूबे, डॉ ममता तिवारी आदि मौजूद रहे।

सी.आर.डी. पीजी कॉलेज में विश्व एड्स दिवस पर छात्राओं को किया गया जागरूक

लोक भारती न्यूज ब्यूरो

गोरखपुर। चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पीजी कॉलेज, गोरखपुर में आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत गृहविज्ञान विभाग एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के संयुक्त तत्वाधान में विश्व एड्स दिवस के अवसर पर विशेष व्याख्यान के जरिये जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें मुख्यवक्ता के रूप में डॉ.संतोष कुमार आयुष चिकित्साधिकारी, जिला अस्पताल गोरखपुर उपस्थित रहें। सर ने अपने विशेष व्याख्यान में बताया कि एड्स एक घातक बीमारी है यह एक वायरस से होती है जो प्रतिरक्षा प्रणाली को नुक्सान पहुंचाता है। और उन्होंने यह भी बताया कि इस बीमारी का कोई ठोस इलाज नहीं है। एड्स कोई संक्रामक बीमारी नहीं है। उन्होनें अपने जागरूकता कार्यक्रम में यह बात छात्राओं के साथ खुलकर साझा की कि मुख्य चार सामान्य गलतियाँ HIV संक्रमित बना सकती है, वे हैं- असुरक्षित यौन सम्बन्ध, HIV माँ से बच्चे में और सुईयों के बॉटने से, रक्त आदान और अंग प्रत्यारोपण। इस कार्यक्रम में उपस्थित महाविद्यालय की प्रबन्धक ने छात्राओं को जागरूक करते हुए बताया कि एड्स जैसी बीमारियों से घबराने की जरूरत नहीं है बल्कि इसके प्रति हमें जागरूक एवं सजग रहना होगा।

कार्यक्रम का संचालन सुश्री पूजा गुप्ता ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन प्राचार्या डॉ0 सुमन सिंह के द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी एवं गृहविज्ञान विभाग की समस्त प्रवक्ता का विशेष योगदान रहा।

amarujala.com

गोरखपुर | शनिवार, 17 दिसंबर 2022 7

सीआरडीपीजी कॉलेज में कैरम प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते खिलाड़ी। अमर उजाला

कैरम में मुस्कान और शतरंज में खुशी अव्वल

गोरखपुर। सीआरडीपीजी कॉलेज में शुक्रवार को कैरम और शतरंज प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। शतरंज प्रतियोगिता में खुशी शर्मा ने पहला और श्वेता ने दूसरा स्थान हासिल किया। कैरम प्रतियोगिता में प्रथम स्थान मुस्कान श्रीवास्तव व द्वितीय स्थान प्रेरणा मिश्रा ने प्राप्त किया। कार्यक्रम का उद्घाटन महाविद्यालय की प्रबंधक डॉ. विजयलक्ष्मी मिश्रा ने किया। प्राचार्य डॉ. सुमन सिंह ने विजयी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दीं। क्रीड़ाध्यक्ष डॉ. अमिता अग्रवाल ने छात्राओं का उत्साहवर्धन किया। संवाद

हिन्दुस्तान

शनिवार, 18 मार्च 2023 06

शोध कार्य का आधार है परिकल्पना : प्रो. राजेश

गोरखपुर। परिकल्पना शोध समस्या का एक संभावित समाधान है। यह एक ऐसा पूर्वानुमान है, जो दो या दो से अधिक चरों में व्याप्त संबंधों को परिकल्पित करता है। परिकल्पना शोध कार्य का आधार है। यह बातें डीडीयू के शिक्षाशास्त्र विभाग के प्रोफेसर राजेश कुमार सिंह ने कही। वे शुक्रवार को सीआरडी आर्य महिला पीजी कॉलेज में आयोजित कार्यशाला को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। इस दौरान प्रबंधक डॉ. विजयलक्ष्मी मिश्रा , डॉ. रेखा श्रीवास्तव, प्राचार्य डॉ. सुमन सिंह, डॉ. अपर्णा मिश्रा, डॉ. वीरेंद्र गुप्त, डॉ. आस्था प्रकाश, डॉ. सारिका जायसवाल मौजूद रहीं।

सीआरडीपीजी कालेज में अभिभावक-शिक्षक सम्मेलन का आयोजन किया गया।

बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए बैठकें जरूरी

गोरखपुर। चंद्रकांति रामावती देवी आर्य महिला पीजी कॉलेज गोरखपुर के एमएड विभाग द्वारा शुक्रवार को अभिभावक-शिक्षक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संघ के अध्यक्ष केके श्रीवास्तव ने कहा कि शिक्षकों एवं अभिभावकों में संवाद से छात्राओं के भविष्य की दिशा तय होती है। इसका नियमित आयोजन बेहद जरूरी है। महाविद्यालय की प्रबंधक डॉ. विजयलक्ष्मी मिश्रा ने कहा कि छात्राओं के स्तर को उच्च बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि उन्हें नियमित महाविद्यालय भेजें। विभागाध्यक्ष डॉ.रेखा श्रीवास्तव ने शिक्षणेत्तर गतिविधियों और महाविद्यालयीय सुविधाओं में आवश्यक सुधार हेतु अभिभावकों से सुझाव देने हेतु अपील की।

सी०आर०डी० के बी०ए० विभाग में पाँच दिवसीय स्काउट गाइड प्रशिक्षण प्रारम्भ

पूर्वा टाइम्स / गोरखपुर। चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी०जी० कॉलेज गोरखपुर के बी०एड० विभाग में पाँच दिवसीय स्काउट गाइड प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण के प्रथम दिवस बी०एड० छात्राध्यापिकाओं को सम्बोधित करते हुए महाविद्यालय प्राचार्य डॉ० सुमन सिंह ने ध्वजारोहण कर शिविर का उद्घाटन करते हुए कहा कि इस तरह के आयोजन से बच्चों में मानसिक, बौद्धिक और शारीरिक विकास के साथ साथ आध्यात्मिक एवं चारित्रिक विकास भी होता है। बी०एड० विभागाध्यक्ष डॉ० अपर्णा मिश्रा ने कहा कि स्काउट गाइड प्रशिक्षण प्राप्त करते समय कैडेट्स को पूरी तन्मयता के साथ काम करना चाहिए। संकट में यह प्रशिक्षण सहयोग करेगा। मुख्य प्रशिक्षक के रूप में इशरत सिद्धकी जिला संगठन कमिश्नर गाइड तथा श्रीमती शाइस्ता इस्लाम जिला प्रशिक्षक ने प्रथम दिवस के प्रशिक्षण कार्यक्रम की पूर्ण जानकारी दी। छाध्यापिकाओं को टोली निर्माण, प्रार्थना, झंडागीत, नियम, प्रतिज्ञा तथा विभिन्न प्रकार के तालियों की जानकारी दी गई।

इस अवसर पर बी०एड् विभाग के सभी शिक्षकगण डॉ० इतेन्द्र धर दूबे, डॉ० ममता तिवारी, डॉ० विकास कुमार श्रीवास्तव श्री अनन्त पाठक, श्री शैलेन्द्र कुमार राव, श्रीमती श्वेता सिंह, डॉ० सारिका पाण्डेय, श्रीमती ऋचा दूबे इत्यादि उपस्थित रहे।

सी0आर0डी0 में अनुसन्धान समिति द्वारा आयोजित पाँच दिवसीय कार्यशाला का समापन अनुसन्धान प्रतिवेदन शोध कार्य को संप्रेषित करने का माध्यम है-

डॉ0 मुकेश सिंह

गोरखपुर 02 फरवरी 2024। चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी०जी० कॉलेज गोरखपुर में अनुसन्धान समिति और आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित ध्अनुसंधान की प्रविधि विषय पर पाँच दिवसीय कार्यशाला का समापन हुआ। इस अवसर पर ध्अनुसन्धान प्रतिवेदन पर विशिष्ट व्याख्यान देते हुए डॉ० मुकेश सिंह अस्सिटेंट प्रोफेसर दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर ने कहा कि शोध प्रतिवेदन शोध कार्य को संप्रेषित करने का माध्यम है शोध का विश्लेषण कितना भी अच्छा किया जाए, लेकिन अगर उन्हें ठीक से संप्रेषित नहीं किया जाता है तो उसका वांछित प्रभाव या परिमाण प्राप्त नहीं होगा। उन्होने बताया कि शोध प्रतिवेदन तैयार करना कोई आसान कार्य नहीं है यह एक कला है, इसके लिए प्रचुर मात्रा में ज्ञान, कल्पना, अनुभव और विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है इसके पूर्व कार्यक्रम का शुभारंम, माँ सरस्वती की प्रतिमा पर दीप प्रज्जवलन एवं माल्यार्पण से हुआ। अतिथि परिचय और स्वागत करते हुए महाविद्यालय प्रबन्धक डॉ० विजयलक्ष्मी मिश्रा ने अनुसन्धान के महत्व पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम में प्रतिभाग, कर रही छात्राओ, संतोषी, प्रीति मिश्रा, सोनल, कौशिकी, रागिनी ने पूरी कार्यशाला के अनुभव साझा किये। कार्यक्रम के अन्त में कार्यशाला में प्रतिभाग कर रही सभी छात्राओ को प्रमाण पत्र वितरित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन अनुसन्धान समिति की समन्वयक डॉ० अपर्णा मिश्रा ने किया तथा आभार ज्ञापन आई क्यू ए सी समन्वयक डॉ० रेखा श्रीवास्तव ने किया।

इस कार्यक्रम में अनुसन्धान समिति के सभी सदस्य डॉ० रेखा श्रीवास्तव, डॉ० स्वप्निल पाण्डेय, डॉ० सारिका जायसवाल, डॉ० ज्योत्सना त्रिपाठी, डॉ० आस्था प्रकाश, श्रीमती रागिनि मिश्रा, सुश्री सन्तोषी, सुश्री पूजा निषाद, सुश्री दिव्या नायक, सुश्री साबरीन तथा मह। विद्यालय मे सभी प्रवक्तागण उपस्थित रहे।

सीआरडी में शिक्षण प्रदर्शनी का आयोजन

स्वतंत्र भारत संवाददाता

गोरखपुर। चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पीजी कॉलेज गोरखपुर के बीएड विभाग की छात्रा अध्यापिकाओं द्वारा एक दिवसीय शिक्षण अधिगम सामग्री प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। डॉ संतोष कुमार सिंह प्राचार्य और पूर्व बीए विभागाध्यक्ष रतनसेन डिग्री कॉलेज बॉसी, सिद्धार्थनगर ने कहा कि शिक्षण अधिगम सामग्री शिक्षकों, बच्चों की सोच और खोज की प्रवृति को प्रोत्साहित कर शिक्षा को सरल, सुगम, आकर्षण तथा बोधगम्य बनाती है। विशिष्ट अथिति डॉ यशवंत सिंह राठौर, उपनिदेशक राजकीय बौद्ध संग्रहालय ने कहा कि सहायक सामग्री शिक्षण प्रक्रिया को जीवंतता प्रदान करती है। इस अवसर पर चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पीजी कॉलेज गोरखपुर और राजकीय बौद्ध संग्रहालय गोरखपुर द्वारा संयुक्त रूप से कला एंव संस्कृति संवर्धन के लिए सास्कृतिक गतिविधियों एवं शैक्षिक कार्यक्रमों के आयोजन हेतु एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर भी किया गया। प्रबंधक डॉ विजयलक्ष्मी मिश्रा ने अथितियो का स्वागत किया। निर्णायक मंडल में वीरेन्द्र गुप्ता, पवन कुमार तथा डॉ शिवानी श्रीवास्तव रहे। प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ छात्राध्यापिका प्रज्ञा पाण्डेय को द्वितीय स्थान पर अर्चना गुप्ता तथा रोशन जहान तृतीय स्थान पर रही शालीनि त्रिपाठी व चांदनी जायसवाल को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ तथा निति गुप्ता, रितु सिंह, श्वेता शुक्ला, ज्योति सिंह को विशेष पुरस्कार प्राप्त हुआ। संचालन बीएड विभाग से सुमनलता ने किया। आभार ज्ञापन बीएड विभागाध्यक्ष डॉ अपणी मिश्रा ने किया। कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ सुमन सिंह डॉ रेखा श्रीवस्तव शर्मा, डॉ इतेन्द्रधर दुबे, अनंत पाठक, डॉ विकास कुमार श्रीवास्तव, डॉ ममता तिवारी, श्वेता सिंह, डॉ सारिका पाण्डेय, शैलेन्द्र कुमार राव, ऋचा दूबे उपस्थित रहे।

सीआरडीपीजी कॉलेज ने दीप्तिमान संस्कृति फाउंडेशन के साथ किया एमओयू पर हस्ताक्षर

एक अकादमिक सत्र के लिए दोनों संस्थाओं में हुआ समझौता

कला संस्कृति और विरासत के संरक्षण के क्षेत्र में करेंगे काम

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। चंद्रकांति रमावती देवी आर्य महिला पीजी कॉलेज गोरखपुर और दीप्तिमान संस्कृति फाउंडेशन फॉर आर्ट कल्चर एन्ड हेरिटेज गोरखपुर के बीच कला, संस्कृति और विरासत के संरक्षण के क्षेत्र में व्यावहारिक कार्यक्रमों के संचालन, शोध अनुसंधान और जागरूकता पाठ्यक्रम आदि चलाने के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुआ। सीआरडीए एमपीजी कॉलेज की प्राचार्या डॉ. सुमन सिंह एवं प्रबंधिका डॉ. विजय लक्ष्मी मिश्रा ने दीप्तिमान संस्कृति फाउंडेशन के साथ एमओयू साईन करने पर खुशी व्यक्त किया। उन्होंने बताया कि कॉलेज में कला और संस्कृति के क्षेत्र में रचनात्मक कार्यक्रमों के जरिए छात्राओं को व्यावहारिक एवं अकादमिक प्रशिक्षण देने के लिए विभिन्न संस्थाओं से संपर्क कर एमओयू किया जा रहा है। इस अवसर पर दीप्तिमान संस्कृति फाउंडेशन के मुख्य ट्रस्टी डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि फाउंडेशन के द्वारा विरासत और भारतीय संस्कृति के संरक्षण के क्षेत्र में अकादमिक, सांस्कृतिक एवं शोध अनुसंधान की विविध गतिविधियों का संचालन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि फाउंडेशन के द्वारा विशेष शिविर और कार्यशालाएं आयोजित की जायेंगीं और छात्राओं के हित में अनेक हितकारी प्रकल्पों और गतिविधियों का संचालन किया जाएगा। इस अवसर पर आइक्यूएसी समन्वयक डॉ. रेखा श्रीवास्तवा, डॉ. आस्था प्रकाश, सहित महाविद्यालय परिवार के सदस्य मौजूद रहे।

गुणवत्ता संवर्धन के लिए नैक मूल्यांकन जरूरी

गोरखपुर। सीआरडी आर्य महिला पीजी कॉलेज के आईक्यूएसी की ओर से शुक्रवार को संकाय विकास के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया।

मुख्य वक्ता दिग्विजयनाथ पीजी कॉलेज के कंप्यूटर विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. पवन पांडेय ने कहा कि उच्च शिक्षा में गुणवत्ता संवर्धन के लिए यूजीसी द्वारा नैक की स्थापना की गई है। कहा कि मूल्यांकन के लिए नैक ने सात मानदंड तय किए हैं। वास्तव में उच्च शिक्षण संस्थानों में गुणात्मक सुधार के लिए राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) की भूमिका बहुत अहम है। उन्होंने उच्च शिक्षा में अधिकतम गुणवत्ता संवर्धित करने के उपाय भी बताए।

प्राचार्य डॉ. सुमन सिंह ने अतिथि परिचय देते हुए उनका स्वागत किया। संचालन आईक्यूएसी समन्वयक डॉ. रेखा श्रीवास्तव ने किया। धन्यवाद ज्ञापन प्रबंधक डॉ. विजय लक्ष्मी मिश्रा ने किया। संवाद

सीआरडी पीजी कॉलेज के संस्थापक आचार्य रामरक्षा पांडेय को दी गई श्रद्धांजलि

प्रखर विकास, गोरखपुर। चन्द्रकान्ती रामावती देवी आर्य महिला पीजी कालेज गोरखपुर के संस्थापक स्व. आचार्य रामरक्षा पाण्डेय की पांचवीं पुण्यतिथि महाविद्यालय परिसर में मनाई गई। श्रद्धांजलि समारोह में विभिन्न वर्ग के लोगों ने उपस्थित होकर स्वर्गीय पांडे को श्रद्धा सुमन अर्पित किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाविद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष पुष्पदंत जैन मौजूद रहे और उन्होंने कहा कि महाविद्यालय परिसर में पहुंचते ही ऐसा लगता है कि पांडे जी कहीं से हम लोगों को बुला रहे हैं। सशरीर भले ही वह हम लोगों के बीच में नहीं हैं लेकिन उनका कृति व्यक्तित्व हम सभी को सदैव बेहतर करने के लिए प्रेरित करता रहता है।

विश्वविद्यालय के डॉ. धर्मव्रत तिवारी श्रद्धांजलि देते हुए भावुक हो उठे और कहा की मुझे भी इस अवसर का साक्षी हाने का अवसर महाविद्यालय परिवार ने उपलब्ध कराया, यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है। इस अवसर पर पूरा महाविद्यालय परिवार हवन पूजन के साथ संस्थापक स्व.आचार्य जी को श्रद्धांजलि अर्पित किया। मलीन बस्ती के बच्चों को गर्म कपड़े और महाविद्यालय परिवार के कर्मचारियों में कम्बल वितरण किया गया।

वॉयस ऑफ पूर्वांचल

www.voiceofpoorvanchal.com

सी0आर0डी0 में अनुसन्धान समिति द्वारा आयोजित पाँच दिवसीय कार्यशाला का समापन

अनुसन्धान प्रतिवेदन शोध कार्य को संप्रेषित करने का माध्यम है : डॉ0 मुकेश सिंह

गोरखपुर। चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी0जी0 कॉलेज गोरखपुर में अनुसन्धान समिति और आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'अनुसंधान की प्रविधि विषय पर पाँच दिवसीय कार्यशाला का समापन हुआ। इस अवसर पर 'अनुसन्धान प्रतिवेदन पर विशिष्ट व्याख्यान देते हुए डॉ0 मुकेश सिंह अस्सिटेंट प्रोफेसर दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर ने कहा कि शोध प्रतिवेदन शोध कार्य को संप्रेषित करने का माध्यम है शोध का विश्लेषण कितना भी अच्छा किया जाए, लेकिन अगर उन्हें ठीक से संप्रेषित नहीं किया जाता है तो उसका वांछित प्रभाव या परिमाण प्राप्त नहीं होगा। उन्होने बताया कि शोध प्रतिवेदन तैयार करना कोई आसान कार्य नहीं है यह एक कला है, इसके लिए प्रचुर मात्रा में ज्ञान, कल्पना, अनुभव और विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। इसके पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ, माँ सरस्वती की प्रतिभा पर दीप प्रज्जवलन एवं माल्यार्पण से हुआ। अतिथि परिचय और स्वागत करते हुए महाविद्यालय प्रबन्धक डॉ0 विजयलक्ष्मी मिश्रा ने अनुसन्धान के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में प्रतिभाग, कर रही छात्राओ, संतोषी, प्रीति मिश्रा, सोनल, कौशिकी, रागिनी ने पूरी कार्यशाला के अनुभव साझा किये। कार्यक्रम के अन्त मे कार्यशाला मे प्रतिभाग कर रही सभी छात्राओ को प्रमाण पत्र वितरित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन अनुसन्धान समिति की समन्वयक डॉ0 अपर्णा मिश्रा ने किया तथा आभार ज्ञापन आई क्यू ए सी समन्वयक डॉ0 रेखा श्रीवास्तव ने किया। इस कार्यक्रम मे अनुसन्धान समिति के सभी सदस्य डॉ0 रेखा श्रीवास्तव, डॉ0 स्वप्निल पाण्डेय, डॉ0 सारिका जायसवाल, डॉ0 ज्योत्सना त्रिपाठी, डॉ0 आस्था प्रकाश, श्रीमती रागिनि मिश्रा, सुश्री सन्तोषी, सुश्री पूजा निषाद, सुश्री दिव्या नायक, सुश्री साबरीन तथा मह। विद्यालय मे सभी प्रवक्तागण उपस्थित रहे।

नासिक में आयोजित राष्ट्रीय युवा उत्सव के लिए चयनित सम्बद्ध कॉलेजों के एनएसएस स्वयंसेवकों को शुभकामना देतीं डीडीयू की कुलपति प्रो. पूनम टंडन।

राष्ट्रीय युवा उत्सव के लिए 3 छात्र-छात्राएं चयनित

गोरखपुर। नासिक में 12 से 16 जनवरी तक आयोजित राष्ट्रीय युवा उत्सव के लिए डीडीयू से सम्बद्ध कॉलेज के एनएसएस के तीन स्वयंसेवकों व स्वयंसेविकाओं का चयन हुआ है। चयनित होने वाले विद्यार्थियों में सेंट एंड्रयूज कॉलेज से अंकुर कुमार मिश्र, दिग्विजयनाथ पीजी कॉलेज से सागर चौधरी और सीआरडी आर्य महिला पीजी कॉलेज से रुक्मिणी का चयन हुआ है। डीडीयू के राष्ट्रीय सेवा योजना से चयनित स्वयंसेवकों व स्वयंसेविका ने शनिवार को कुलपति प्रो. पूनम टंडन से मुलाकात की।

सीआरडी में एक दिवसीय शिक्षण सामग्री प्रदर्शनी का आयोजन

निर्वाण टाइम्स

गोरखपुर। चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पीजी कॉलेज गोरखपुर के बीएड विभाग की छात्रा अध्यापिकाओं द्वारा एक दिवसीय शिक्षण अधिगम सामग्री प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में छात्र अध्यापिकाओं को संबोधित करते हुए मुख्य अथिति डॉ0 संतोष कुमार सिंह प्राचार्य और पूर्व बीए विभागाध्यक्ष रतनसेन डिग्री कॉलेज बॉसी, सिद्धार्थनगर ने कहा कि शिक्षण अधिगम सामग्री शिक्षकों, बच्चों की सोच और खोज की प्रवृति को प्रोत्साहित कर शिक्षा को सरल, सुगम,आकर्षण तथा बोधगम्य बनाती है। विशिष्ट अथिति डॉ0 यशवंत सिंह राठौर, उपनिदेशक राजकीय बौद्ध संग्रहालय गोरखपुर ने कहा कि सहायक सामग्री शिक्षण प्रक्रिया को जीवंतता प्रदान करती है।इस अवसर पर चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पीजी कॉलेज गोरखपुर और राजकीय बौद्ध संग्रहालय गोरखपुर द्वारा संयुक्त रूप से कला एंव संस्कृति संवर्धन के लिए सास्कृतिक गतिविधियों एवं शैक्षिक कार्यक्रमों के आयोजन हेतु एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर भी किया गया

इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारम्भ माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण तथा दीप प्रज्जवलन से हुआ। सभी अतिथि गण ने प्रदर्शनी में प्रयुक्त शिक्षण अधिगम सामाग्री का सुक्ष्म निरीक्षण किया और सराहना की प्रदर्शनी में सभी विषयो में नवाचार को प्रदर्शित करने वाले दर्जनों मॉडल आकर्षण का केंद्र रहे।महाविद्यालय प्रबंधक डॉ0 विजयलक्ष्मी मिश्रा ने अथितियो का स्वागत किया। निर्णायक मंडल में वीरेन्द्र गुप्ता,पवन कुमार तथा डॉ0 शिवानी श्रीवास्तव रहे। सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ छात्राध्यापिका प्रज्ञा पाण्डेय को द्वितीय स्थान पर अर्चना गुप्ता तथा रोशन जहान तृतीय स्थान पर रही शालीनि त्रिपाठी व चाँदनी जायसवाल को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ तथा निति गुप्ता, रितु सिंह, श्वेता शुक्ला, ज्योति सिंह को विशेष पुरस्कार प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन बीएड विभाग से सुश्री सुमनलता ने किया। आभार ज्ञापन बीएड विभागाध्यक्ष डॉ0 अपर्णा मिश्रा ने किया।कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ0 सुमन सिंह, रेखा श्रीवास्तव शर्मा, डॉ0 इतेन्द्रधर दुबे,अनंत पाठक, डॉ0 विकास कुमार श्रीवास्तव, ममता तिवारी, श्रीमती श्वेता सिंह, सारिका पाण्डेय, शैलेन्द्र कुमार राव, सुश्री ऋचा दूबे उपस्थित रहे।

आत्म निर्भर बनाता है स्काउट गाइडः डॉ0 सुमन सिंह

निर्वाण टाइम्स

गोरखपुर। चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पीजी कॉलेज गोरखपुर के बीएड विभाग में पाँच दिवसीय स्काउट गाइड प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।प्रशिक्षण के प्रथम दिवस बीएड छात्राध्यापिकाओं को सम्बोधित करते हुए महाविद्यालय प्राचार्य डॉ0 सुमन सिंह ने ध्वजारोहण कर शिविर का उद्घाटन करते हुए कहा कि इस तरह के आयोजन से बच्चों में मानसिक, बौद्धिक और शारीरिक विकास के साथ साथ आध्यात्मिक एवं चारित्रिक विकास भी होता है।बीएड विभागाध्यक्ष डॉ0 अपर्णा मिश्रा ने कहा कि स्काउट गाइड प्रशिक्षण प्राप्त करते समय कैडेट्य को पूरी तन्मयता के साथ काम करना चाहिए। संकट में यह प्रशिक्षण सहयोग करेगा।मुख्य प्रशिक्षक के रूप में इशरत सिद्धकी जिला संगठन कमिश्नर गाइड तथा श्रीमती शाइस्ता इस्लाम जिला प्रशिक्षक ने प्रथम दिवस के प्रशिक्षण कार्यक्रम की पूर्ण जानकारी दी। छाध्यापिकाओं को टोली निर्माण, प्रार्थना, झंडागीत, नियम, प्रतिज्ञा तथा विभिन्न प्रकार के तालियों की जानकारी दी गई।इस अवसर पर बीएड् विभाग के सभी शिक्षकगण डॉ० इतेन्द्र धर दूबे, डॉ० ममता तिवारी, विकास कुमार श्रीवास्तव, अनन्त पाठक,शैलेन्द्र कुमार राव, श्रीमती श्वेता सिंह, डॉ0 सारिका पाण्डेय,श्रीमती ऋचा दूबे इत्यादि उपस्थित रहे।

आत्मनिर्भर बनाता है स्काउट गाइड

■ पाँच दिवसीय स्काउट गाइड प्रशिक्षण प्रारम्भ

गोरखपुर (एसएनबी)। चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पीजी कालेज में बीएड विभाग में पाँच दिवसीय स्काउट गाइड प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण के प्रथम दिवस बीएड छात्राध्यापिकाओं को सम्बोधित करते हुए प्राचार्य डा. सुमन सिंह ने ध्वजारोहण कर शिविर का उद्घाटन करते हुए कहा कि इस तरह के आयोजन से बच्चों में मानसिक, बौद्धिक और शारीरिक विकास के साथ साथ आध्यात्मिक एवं चारित्रिक विकास भी होता है। बीएड विभागाध्यक्ष डा. अपर्णा मिश्रा ने कहा कि स्काउट गाइड प्रशिक्षण प्राप्त करते समय कैडेट्स को पूरी तन्मयता के साथ काम करना चाहिए। संकट में यह प्रशिक्षण सहयोग करेगा। जिला संगठन कमिश्नर गाइड व मुख्य प्रशिक्षक के रूप में इशरत सिद्धकी तथा जिला प्रशिक्षक शाइस्ता इस्लाम ने प्रथम दिवस के प्रशिक्षण कार्यक्रम की पूर्ण जानकारी दी। छाध्यापिकाओं को टोली निर्माण, प्रार्थना, झंडागीत, नियम, प्रतिज्ञा तथा विभिन्न प्रकार के तालियों की जानकारी दी गई। इस अवसर पर डा. इतेन्द्र धर दूबे, डा. ममता तिवारी, डा. विकास कुमार श्रीवास्तव, डा. सारिका पाण्डेय, अनन्त पाठक, शैलेन्द्र कुमार राव, श्वेता सिंह, ऋचा दूबे सहित कई लोग उपस्थित रहे।

हिन्दुस्तान

...र, बुधवार, 21 फरवरी 2024 06

स्काउट-गाइड से होता है बौद्धिक विकास

गोरखपुर। सीआरडी आर्य महिला पीजी कॉलेज के बीएड विभाग में मंगलवार को पांच दिवसीय स्काउट गाइड प्रशिक्षण शुरू हुआ। प्राचार्या डॉ सुमन सिंह ने कहा कि इससे बच्चों में मानसिक, बौद्धिक, शारीरिक, आध्यात्मिक एवं चारित्रिक विकास होता है।

सांस्कृतिक गतिविधियाँ

विभागीय गतिविधियाँ

अंग्रेजी विभाग - वाद विवाद प्रतियोगिता

एम.एड्. विभाग - कार्यपरिषद् गठन

कम्प्यूटर विभाग - कार्यशाला का आयोजन

गृह विज्ञान - राखी प्रदर्शनी

दृश्यकला विभाग - पोस्टर प्रतियोगिता

प्राचीन इतिहास विभाग - मुद्रा, अभिलेख एवं मंदिर वास्तु प्रदर्शनी

बी.एड्. विभाग - शैक्षणिक प्रदर्शनी

संगीत विभाग - गायन, वादन प्रशिक्षण कार्यशाला

राजनीति विज्ञान विभाग - युवा संसद

वाणिज्य विभाग - संचार एवं व्यावसायिक कौशल विकास

शिक्षाशास्त्र विभाग - वेस्ट मटेरियल प्रतियोगिता

संस्कृत विभाग - संस्कृत दिवस

हिन्दी विभाग - श्रीमद्भागवत गीता पोस्टर प्रदर्शनी

गृह विज्ञान विभाग - स्ट्रीट फूड फेयर

नियंता मण्डल एवं विभागीय कार्यपरिषद् गठन

एम.एड. विभाग - कार्यपरिषद् गठन

छात्र चुनाव

बी.काम. - कार्यपरिषद् गठन

बी.एड. विभाग - कार्यपरिषद् गठन

नियंता मण्डल

अभिभावक-शिक्षक बैठक

प्रयास

मतदाता जागरूकता

मेधावी छात्राओं द्वारा नि:शुल्क शिक्षा

महाविद्यालय मेधावी छात्राएं एवं जिज्ञासु बच्चे

प्लास्टिक निषेध जागरूकता कार्यक्रम

महाविद्यालय द्वारा गोद लिए गाँव में शिक्षा कार्यक्रम

कैडेट द्वारा स्वैच्छिक रक्तदान

स्वच्छता अभियान

राहत सामग्री वितरण

शिक्षा एवं जागरूकता

मद्यपान निषेध नुक्कड़ नाटक

मद्यपान निषेध निबन्ध प्रतियोगिता

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर ख्यातिलब्ध महिलाओं की प्रदर्शनी

मद्यपान निषेध संगोष्ठी

गोद लिये गाँव में शिक्षा दान करती छात्राध्यापिकाएं

प्लास्टिक निषेध - नुक्कड़ नाटक

विवेकानन्द जयन्ती रैली

यातायात जागरूकता

एन.सी.सी.

कर्तव्य पथ पर परेड हेतु चयनित कैडेट अन्निद्या

रोवर्स रेंजर्स

टेन्ट बनाने का प्रशिक्षण

रोवर्स रेंजर्स - क्रियात्मक गतिविधियाँ

रोवर्स रेंजर्स - रस्सी से गाँठ प्रशिक्षण कार्यक्रम

एन.एस.एस.

युवा महोत्सव नासिक हेतु चयनित स्वयंसेविका रूक्मिणी

योगा एवं प्राणायाम

मध्याह्न भोजन

आपदा प्रबन्धन प्रशिक्षण

विभिन्न संस्थाओं एवं समितियों के मध्य समझौता ज्ञापन

लॉ एण्ड लीगल सर्विसेज

आधारशिला संस्था

बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर

इतिहास संकलन समिति, गोरक्ष प्रान्त

इम्पिरियल ऐनर्जी प्राइवेट लिमिटेड

पूणे यूनिवर्सिटी

उन्नति फाउण्डेशन, गोरखपुर

यायावारी वाया भोजपुरी संस्था, गोरखपुर

उत्सव एवं महोत्सव

सावन की कजरी

गुरुपूर्णिमा

नवरात्रि

गणतन्त्र दिवस

स्वतन्त्रता दिवस

बसन्त पंचमी

होली मिलन समारोह

रामोत्सव

प्रमुख जयंतियाँ

निराला जयंती

महाकवि मैथिलीशरण गुप्त जयंती

सुबाष चन्द्रबोस जयंती

गाँधी एवं लाल बहादुर शास्त्री जयंती

कालीदास जयंती

गुरूजी (महाविद्यालय संस्थापक) जयंती

तुलसीदास जयंती

मुंशी प्रेमचन्द जयंती

शिक्षणेत्तर गतिविधियाँ एवं विभागीय प्रदर्शनी

बी.एड. विभाग द्वारा कार्यशाला

महाविद्यालय शिक्षक हेतु फैकेल्टी डेवलपमेन्ट कार्यक्रम

बी.ए. विभाग द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठी

संस्कृत विभाग द्वारा ज्योतिष विद्या पर सर्टिफिकेट कोर्स

पुस्तकालय विभाग द्वारा पुस्तक प्रदर्शनी

प्राचीन इतिहास विभाग द्वारा हस्तनिर्मित मुद्रा, अभिलेख, मूर्ति कला प्रदर्शनी

हिन्दी विभाग द्वारा श्रीमद्भागवत गीता के श्लोकों पर चित्रकला प्रदर्शनी

दृश्यकला विभाग द्वारा पोस्टर प्रदर्शनी

शैक्षणिक भ्रमण

अमर उजाला आफिस, गोरखपुर

गैंगटोक, सिक्किम

कुशीनगर भ्रमण

सारनाथ, वाराणसी

तरकुलहा देवी मंदिर, चौरीचौरा

नथुला दर्रा, गैंगटोक

पारले जी बिस्किट फैक्ट्री, गोरखपुर

शहीद बन्धु सिंह स्मारक स्थल, चौरीचौरा

धमेख स्तूप, सारनाथ

लुम्बिनी, नेपाल

शहीद स्मारक, चौरी चौरा

बुटवल, नेपाल

त्रिवेणी धाम, नेपाल

गजेन्द्रमोक्ष मन्दिर, बाल्मीकि नगर

क्रीड़ा समारोह

वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता एवं उद्घाटन सत्र

मार्च पास्ट

कबड्डी

जिम्नास्टिक

रिले रेस

भाल फेंक, लम्बी कूद एवं चक्का फेंक

सम्मानित होते हुए विजयी प्रतिभागी

कैरम एवं शतरंज प्रतियोगिता

छात्रहित हेतु कैरियर काउन्सिलिंग, स्वास्थ्य शिविर एवं प्लेसमेण्ट सेल का आयोजन

कैरियर काउन्सिलिंग

स्वास्थ्य परीक्षण

औषधि वितरण

स्वस्थ रहने का सुझाव

सहज योग प्रशिक्षण

प्लेसमेंट सेल

प्लेसमेंट सेल में चयनित छात्राएं

विभिन्न समाचार-पत्रों में महाविद्यालयीय वार्षिक गतिविधियों की एक झलक

प्रवर्तन बल में अब महिला जवान अतिक्रमण पर कार्रवाई आसान

नगर निगम प्रवर्तन बल में सात पुरुषों, दो महिला जवानों की हुई तैनाती, पालीथिन के विरुद्ध अभियान में भी रहेंगी शामिल

E.T.F OFFICER

PANCHI SINGH RAJPUT

200 छात्राओं का जांचा गया स्वास्थ्य

गोरखपुर (एसएनबी)। चंद्रकांति रामावती देवी आर्य महिला पीजी कालेज में मेडिकल कैंप का आयोजन किया गया। चिकित्सकों ने दो सौ छात्राओं का चिकित्सकीय परीक्षण कर सलाह दिया। चिकित्सकों ने छात्राओं को बीमारियों से बचाव के बारे में बताया। डा. शशांक श्रीवास्तव ने कैल्शियम की कमी को दूर करने के प्राकृतिक तरीकों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि सूर्य की रोशनी कैल्शियम की कमी दूर करने में सहायक होती है। साथ ही खान-पान के बारे में भी बताया।

महाविद्यालय की प्रधानाचार्य ने सभी विशेषज्ञ चिकित्सकों का आभार जताया। कैंप में पैथोलाजिस्ट डा. मंगलेश श्रीवास्तव, हड्डी एवं जोड़ रोग विशेषज्ञ डा. शशांक श्रीवास्तव, नेत्र सर्जन डा. एपी त्रिपाठी, चर्म रोग विशेषज्ञ डा. आयुषी मोहन, फीजिशियन डा. मनोज जायसवाल व होम्योपैथी के डा. अनूप श्रीवास्तव ने छात्राओं का चिकित्सकीय परीक्षण कर सलाह दिया।

आत्मनिर्भर बनाता है स्काउट गाइड

गोरखपुर (एसएनबी)। चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पीजी कालेज में बीएड विभाग में पाँच दिवसीय स्काउट गाइड प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण के प्रथम दिवस बीएड छात्राध्यापिकाओं को सम्बोधित करते हुए प्राचार्य डा. सुमन सिंह ने ध्वजारोहण कर शिविर का उद्घाटन करते हुए कहा कि इस तरह के आयोजन से बच्चों में मानसिक, बौद्धिक और शारीरिक विकास के साथ साथ आध्यात्मिक एवं चारित्रिक विकास भी होता है। बीएड विभागाध्यक्ष डा. अपर्णा मिश्रा ने कहा कि स्काउट गाइड प्रशिक्षण प्राप्त करते समय कैडेट्स को पूरी तन्मयता के साथ काम करना चाहिए। संकट में यह प्रशिक्षण सहयोग करेगा। जिला संगठन कमिश्नर गाइड व मुख्य प्रशिक्षक के रूप में इशरत सिद्धकी तथा जिला प्रशिक्षक शाइस्ता इस्लाम ने प्रथम दिवस के प्रशिक्षण कार्यक्रम की पूर्ण जानकारी दी। छात्राध्यापिकाओं को टोली निर्माण, प्रार्थना, झंडागीत, नियम, प्रतिज्ञा तथा विभिन्न प्रकार के तालियों की जानकारी दी गई। इस अवसर पर डा. इतेन्द्र धर दूबे, डा. ममता तिवारी, डा. विकास कुमार श्रीवास्तव, डा. सारिका पाण्डेय, अनन्त पाठक, शैलेन्द्र कुमार राव, श्वेता सिंह, ऋचा दूबे सहित कई लोग उपस्थित रहे।

■ पाँच दिवसीय स्काउट गाइड प्रशिक्षण प्रारम्भ

फेयरवेल पार्टी में जमकर झूमीं छात्राएं, चेहरे पर खुशी, आंखों में दिखा विदाई का दर्द

गोरखपुर। चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पीजी कॉलेज की बीएड चतुर्थ सेमेस्टर की छात्राओं की शुक्रवार को फेयरवेल पार्टी मनाई गई बीएड चतुर्थ सेमेस्टर और बीएड द्वितीय सेमेस्टर दोनो हीं छात्राध्यापिकाओं ने एक दूसरे को शुभकामनाएं देकर खट्टी-मीठी यादों को शेयर किया। इस पुरे घमाल में छात्राध्यापिकाओं के चेहरे पर खुशी तो दिखी लेकिन महाविद्यालय से विदाई के दर्द को वो छुपा नही सकी। फेयरवेलपार्टी के दौरान छात्राओं ने नृत्य और विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं के द्वारा सबका मनोरंजन किया। कई छात्राओं ने मंच से अपने अनुभव को भी शेयर किया। विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करते हुए शिल्पी जायसवाल मिस सीआरडीएम चुनी गई, अंकिता पाण्डेय मिस फेयरवेल और प्रगति पाण्डेय मिस ब्यूटीफुल चुनी गई। वर्ष भर अच्छी उपलब्धि के लिए छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। जिसमें प्रेरणा, प्रगति, सविता, अर्पिता, दीपांजलि, नुजहतन, शिवानी, अंजलन, कृतिका, शिल्पी, अंकिता, रुखसार समृद्धि चौरसिया मुख्य रहीं इस अवसर पर महाविद्यालय प्रबन्धक डॉ. विजयलक्ष्मी मिश्रा व प्राचार्या डॉ. सुमन सिंह ने छात्राओं को शुभकामनाएं देकर उनके उज्वल भविष्य की कामना की। धन्यवाद ज्ञापन बीएड विभागाध्यक्ष डॉ. अपर्णा मिश्रा ने दिया। निर्णायक मण्डल में उपप्राचार्य डॉ. स्वप्निल पाण्डेय, तथा डॉ. आस्था प्रकाश रहीं। सुमनलता ने पुरस्कार की घोषणा की। कार्यक्रम का संचालन छात्राध्यापिका प्रज्ञा पाण्डेय तथा तृप्ती ने किया। इस अवसर पर डॉ. इतेन्द्रधर दूबे, डॉ. विकास श्रीवास्तव, डॉ. सारिका, अन्नत पाठक, श्वेता, शैलेंद्र राव, ऋचा सहित की लोग उपस्थित रहें।

संस्थान की बेहतरी के लिए आगे आया आधारशिला परिवार

गोरखपुर (विधान केसरी)। चन्द्रकान्ति रामावती देवी महिला पी जी कालेज दीवान बाजार की प्रबन्धिका डा विजय लक्ष्मी मिश्रा के आह्वान पर एवं आधारशिला के अध्यक्ष डा रुप कुमार बनर्जी के निर्देश पर आज आधारशिला परिवार का एक प्रतिनिधिमंडल संरक्षक डा ए.के सिंह के नेतृत्व में विद्यालय में विभिन्न कार्यक्रमों, गोष्ठियों,जयन्तियों प्रतियोगिताओं में आपसी सहयोग करने एवं संस्थान के हित में कार्य करने के एक आपसी समझौते पर हस्ताक्षर किया गया। उक्त समझौता मसौदा चन्द्रकान्ति रामावती महिला पी जी कालेज की प्राचार्या डा सुमन सिंह,उप प्राचार्य डॉ स्वप्निल पाण्डेय, प्रवक्ता डॉ प्रीति त्रिपाठी, प्रवक्ता डॉ रेखा रानी शर्मा सहित आधारशिला के सचिव दीपक चक्रवर्ती निशांत,सह सचिव अनीता शुक्ला, कोषाध्यक्ष श्रीमती सारिका राय, सामाजिक सचिव विरेन्द्र कुमार पाल, रामानंद वर्मा उपस्थित थे। आधारशिला परिवार के लिए यह बहुत ही हर्ष का विषय है कि उक्त शिक्षण संस्थान में अध्ययनरत छात्राओं की सामाजिक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक बेहतरी और विकास के लिए आधारशिला परिवार को कार्य करने का मौका मिलेगा।

प्रबन्धिका डॉ विजय लक्ष्मी मिश्रा ने आधारशिला परिवार के प्रतिनिधि मंडल के प्रति आभार व्यक्त करते हुए छात्राओं के चौमुखी रचनात्मक विकास में सदैव सहयोग की अपील किया।

एनसीसी कैडेट्स ने वृक्षारोपण करके पर्यावरण प्रेम का दिया संदेश

निर्वाण टाइम्स ब्यूरो

गोरखपुर। 15 यूपी गर्ल्स बटालियन से संबंध चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी०जी० कॉलेज गोरखपुर की एनसीसी कैडेट्स ने आज एनसीसी अधिकारी कैप्टन डॉ अपर्णा मिश्रा के नेतृत्व में महाविद्यालय प्रांगण में वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम का अभियान चलाया। इस अवसर पर कॉलेज प्रांगण में सागौन, शीशम, पीपल, नीम, जामुन सहजन आदि के लगभग 50 पौधों का रोपण किया गया। साथ ही पौधों को गोद लेकर उनके संरक्षण का संकल्प भी लिया। महाविद्यालय प्रबंधक डॉ विजयलक्ष्मी मिश्रा ने कैडेट्स को पौधरोपण के प्रति जागरूक करते हुए कहा कि सभी एनसीसी कैडेट्स समाज के सभी वर्गों को पौधरोपण के इस पावन मुहिम में जोड़ने का कार्य करें। महाविद्यालय प्राचार्या डॉ सुमन सिंह ने कहा कि पेड़ पौधों की कमी से निरंतर पर्यावरण संतुलन बिगड़ रहा है। पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने के लिए पौधरोपण बहुत जरूरी है। हम सभी का फर्ज बनता है कि पृथ्वी की खूबसूरती को बनाए रखें उन्होंने युवाओं को अधिक से अधिक पौधे लगाने की अपील की। इस अवसर पर 15 यूपी गर्ल्स बटालियन से नायक सूबेदार पीके तिवारी एवं हवलदार मुकेश कुमार तथा सभी एनसीसी कैडेट्स उपस्थित रहे।

कैंपस 30s

बेस्ट कैडेट चुनी गईं अनिन्दया

गोरखपुर। सीआरडी आर्य महिला पीजी कॉलेज की छात्रा अनिन्दया सिंह 15 यूपी गर्ल्स बटालियन की बेस्ट कैडेट चुनी गई हैं। इसके साथ ही अब वे ग्रुप स्तर की प्रतियोगिता के लिए मेरठ में बेस्ट कैडेट प्रतियोगिता में प्रतिभाग कर रही हैं। उनकी सफलता पर बटालियन की एडम अफसर मेजर महुआ भट्टाचार्य, कॉलेज प्रबंध समिति के अध्यक्ष पुष्पदंत जैन, प्रबंधक, डॉ विजयलक्ष्मी मिश्रा, प्राचार्या डॉ सुमन सिंह आदि ने बधाई दी है।

शिक्षकसभा के अध्यक्ष बने नजमुल हसन

गोरखपुर। समाजवादी शिक्षक सभा के प्रदेश अध्यक्ष डॉक्टर एसपी सिंह पटेल ने महानगर की कार्यकारिणी गठित की है। उन्होंने जनपद निवासी नजमुल हसन को शिक्षक सभा का महानगर अध्यक्ष मनोनीत किया है। इसी प्रकार समाजवादी मजदूर सभा के प्रदेश अध्यक्ष चनीलाल श्रमिक ने सहजादे अली को मजदूर सभा का महानगर अध्यक्ष मनोनीत किया है।

छात्रों ने लिया गुरुजनों का आशीर्वाद

गोरखपुर। शिव शांति चिल्ड्रेन एकेडमी में शिक्षक दिवस धूमधाम से मनाया गया। केक काटकर शिक्षक दिवस की बधाई व शुभकामनाएं दी गई। इस मौके पर बच्चों ने गुरुजनों का आशीर्वाद लिया। प्रबंधक विजय गुप्ता और प्रधानाचार्य रवि श्रीवास्तव ने शिक्षक दिवस पर विद्यालय के छात्र-छात्राओं को उनके जीवन में शिक्षा की उपयोगिता और उनके सर्वांगीण विकास की रूप रेखा को अपने

द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ समापन

निर्वाण टाइम्स, गोरखपुर। चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पीजी कॉलेज गोरखपुर एवं राजकीय बौद्ध संग्रहालय उत्तर प्रदेश के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। जिसका विषय बौद्ध शिक्षा दर्शन आधुनिक विश्व की जटिल चुनौतियां एवं संतुलित दृष्टिकोण 'है कार्यक्रम के दूसरे दिन तृतीय तकनीकी सत्र में कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्वलन तथा सरस्वती वन्दना के साथ किया गया। इस सत्र का संचालन श्रीमती श्वेता सिंह के द्वारा किया गया। इसमें बतौर मुख्य वक्ता प्रो. सुषमा पाण्डेय शिक्षा संकाय दीन दयाल उपाध्याय विश्व विद्यालय तथा अध्यक्ष प्रो. नरेश प्रसाद भोक्ता पूर्व अधिष्ठाता शिक्षा संकाय, दीन दयाल उपाध्याय विश्व विद्यालय गणमान्य लोग उपस्थित रहे। प्रो. सुषमा पाण्डेय के द्वारा भगवान बुद्ध की शैक्षिक उपादेयता पर व्याख्यान दिया गया तथा कहा गया कि हमारी शिक्षा व्यवस्था मूल्यविहीन होती जा रही है जिसमें हमे मूल्य और संस्कार भरने होंगें। अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. नरेश प्रसाद भोक्ता ने कहा कि सद्विचार आधार की पुरानी परम्परा के बौद्ध सन्देश को हमें अपनाना होगा तभी देश का कल्याण होगा। इस सत्र में आभार ज्ञापन डा.अतुल किशोर शाही के द्वारा किया गया।

चतुर्थ तकनीकी सत्र का संचालन डा० प्रीति त्रिपाठी के द्वारा किया गया। इसमें बतौर मुख्य वक्ता प्रो.रमेश प्रसाद पाठक शिक्षा संकाय लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली तथा अध्यक्ष प्रो. बृजेश कुमार पाण्डेय प्राचार्य, रामजी सहाय पीजी कॉलेज रुद्रपुर देवरिया उपस्थित रहे। प्रो. रमेश प्रसाद पाठक के द्वारा बतौर मुख्य वक्ता कहा गया कि बौद्ध धर्म में निर्वाण प्राप्ति के लिए सदाचार तथा नैतिक जीवन पर अत्यधिक बल दिया गया है एवं दस शीलों का अनुशीलन नैतिक जीवन का आधार है। अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. बृजेश कुमार पाण्डेय ने सारनाथ के महत्व को बताते हुए देश- विदेश में अपनाये जा रहे बौद्ध धर्म की चर्चा की। समापन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. संजीत कुमार गुप्ता कुलपति जननायक चंद्रशेखर विश्वविद्यालय बलिया अध्यक्ष डॉ.विभाष चन्द्र कौशिक अध्यक्ष बीएड विभाग बुद्ध पीजी कॉलेज कुशीनगर उपस्थित रहे। जिनके द्वारा अपने उद्बोधन में कहा गया कि बुद्ध की शिक्षाओं का सार है- शील समाधि और प्रज्ञा मोक्ष या निर्वाण ही उनके समस्त उपदेशो का एक मात्र रस है।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. रेखा श्रीवास्तव के द्वारा किया गया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर डॉ. अपर्णा मिश्रा अध्यक्ष बीएड विभाग के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय की प्रबन्धक डॉ. विजयलक्ष्मी मिश्रा, प्राचार्य डॉ.सुमन सिंह, उप प्राचार्य डॉ. स्वप्निल पाण्डेय, डॉ. आस्था प्रकाश, डॉ. अमिता अग्रवाल, डॉ. पवन, डॉ.शिवानी, डॉ.रेखा रानी शर्मा, डा.ममता,डॉ. श्वेता, डॉ. इतेन्द्र धर दूबे,डॉ. सारिका,अनन्त पाठक, डॉ.अनीता सिंह, श्रीमती अंजली शुक्ला,शंकर धागा, श्रेया द्विवेदी,शैलेन्द्र कुमार राव, डॉ.ज्योत्सना त्रिपाठी श्रीमती सोनू दूबे, सुश्री पूजा गुप्ता, श्रीमती देवता पाण्डेय, डॉ० विकास श्रीवास्तव सहित समस्त स्टाफ गण उपस्थित रहे।

सीआर डी पीजी कॉलेज में राखी प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

| पूर्वा टाइम्स

गोरखपुर। चंद्रकांति रामावती देवी आर्य महिला पीजी कॉलेज गोरखपुर के गृह विज्ञान विभाग द्वारा दिनांक 29/08/2023 को राखी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय के विभिन्न विभाग की छात्राओं ने प्रतिभाग किया। जिसमें प्रथम पुरस्कार ज्योति निषाद एवं दीपा,द्वितीय पुरस्कार नौशीन एवं खुशी त्रिपाठी, तृतीय पुरस्कार तस्कीन फातिमा एवं दिव्या त्रिपाठी तथा सांत्वना पुरस्कार सौम्या एवं अदिति चौधरी ने प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में महाविद्यालय प्रबंधक डॉ विजयलक्ष्मी मिश्रा, प्राचार्य डॉक्टर सुमन सिंह, उप प्राचार्य श्रीमती स्वप्निल पांडे एवं शिक्षा शास्त्र विभाग की प्रवक्ता डॉक्टर आस्था प्रकाश रही इन्होंने सर्वप्रथम सभी राखियों का अवलोकन किया तत्पश्चात विजेताओं का चुनाव किया। इस प्रतियोगिता में गृह विज्ञान विभाग के सभी प्रवक्तागण का विशेष योगदान रहा।

सी० आर० डी० पी० जी० में छात्र कार्य परिषद 2023-24 के पदाधिकारीयों का शपथ ग्रहण

रिपोर्ट - मोहम्मद जानशेर आलम सिद्दीकी

चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी० जी० कॉलेज, गोरखपुर में दिनांक 06-11-2023 सोमवार को छात्र कार्यपरिषद पदाधिकारीयो का शपथ ग्रहण सकुशल सम्पन्न हुआ जिसमे अध्यक्ष कौशिकी पाण्डेय, उपाध्यक्ष- रूकमणि यादव, महामंत्री कनक श्रीवास्तव तथा सांस्कृतिक मंत्री- जान्हवी पाण्डेय ने महाविद्यालय में सहयोग अनुशासन, स्वच्छता व महाविद्यालय में छात्रो के लिए बनाये गये नियमो के पालन कराने आदि का शपथ लिया। मुख्य नियंता व चुनाव अधिकारी डा० पवन कुमार के अध्यक्षता में शपथ ग्रहण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सभी विजयी प्रत्याशियों को महाविद्यालय प्रबन्धक डा० विजयलक्ष्मी मिश्रा, प्राचार्य डा० सुमन सिंह, उपप्राचार्य डा० स्वपनिल पाण्डेय, IQAC प्रभारी डा० रेखा श्रीवास्तव ने माल्यार्पण कर उनको शुभकामनाए दी इस अवसर पर नियंता मण्डल के सभी सदस्यगण डा० रेखा रानी शर्मा, डा० धीरज कुमार श्रीमती आकृति सिंह, सुश्री अर्चना श्रीवास्तव, डा० सुमन लता, सुश्री श्रेया द्विवेदी एवं महाविद्यालय के सभी प्रवक्तागण व छात्रायें उपस्थिय रही।

महाविद्यालय की झलक

सुरम्य वातावरण युक्त महाविद्यालय

शिष्टाचार भेंट - मा. योगी आदित्यनाथ एवं प्रबंधक

वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम

औषधि वाटिका

अग्निशमन यंत्र

वर्मी कंपोस्ट सिस्टम

सोलर पैनल सिस्टम

चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज

दीवान बाजार, गोरखपुर-273 001

(सम्बद्ध : दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर)

नैक प्रत्यायित एवं आई.एस.ओ. प्रमाणित (9001:2015 एवं 14001:2015)

B.A. हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, गृहविज्ञान, दृश्यकला, मंचकला (संगीत), प्राचीन इतिहास, कम्प्यूटर एप्लीकेशन, समाजशास्त्र, शिक्षाशास्त्र एवं राजनीति विज्ञान

B.Sc. (Home Science)

B.Com.

M.A. राजनीतिशास्त्र, गृहविज्ञान, शिक्षाशास्त्र एवं दृश्यकला

B.Ed. (Online)

M.Ed. (Online)

हमारी सुविधाएँ

- वाईफाई परिसर
- स्मार्ट क्लास और ICT लैब
- खेल मैदान
- कम्प्यूटर और भाषा प्रयोगशाला
- केन्द्रीय डिजिटल पुस्तकालय
- हॉस्टल
- कैन्टीन
- वाचनालय
- गृह विज्ञान प्रयोगशाला
- राजर्षि टण्डन अध्ययन केन्द्र

Contact : 7275618230, 8318445157

Website : www.crdpgcollege.edu.in • e-mail : crdpgcollege.gkp@gmail.com